फुलसुंघी

पाण्डेय कपिल

फुलसुंघी

पाण्डेय कपिल

www.bhojpurisahityangan.com

फुलसुंघी

(भोजपुरी उपन्यास)

पाण्डेय कपिल

भोजपुरी संस्थान

इन्द्रपुरी, पटना - 800 024

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला के नउवाँ फूल
ग्रंथमाला–सम्पादक : पाण्डेय कपिल

फुलसुंघी

(भोजपुरी उपन्यास)

लेखक : पाण्डेय कपिल

प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान,
पथ संख्या - 3, इन्द्रपुरी,
पटना - 800 024

सर्वाधिकार : पाण्डेय कपिल

संस्करण : पहिलका, 1977 ई०
दोसरका, 1985 ई०
तिसरका, 2001 ई०

मूल्य : 50/- (पचास रुपया मात्र)

अक्षर संयोजक : अनुकृति
एस० पी० सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड
पटना – 800 001

मुद्रक : न्यू प्रिंटलाइन प्रेस
गाँधीनगर, पटना-800 001

PHULSUNGHI

[A novel in Bhojpuri]

by

Pandeya Kapil

Rs. 50/-

www.bhojpurisahityangan.com

‘फुलसुंघी’ का बारे में

‘फुलसुंघी’ का बारे में कुछ विशेष कहे के नइखे। कहे के एतने-भर बा कि एह उपन्यास के कथावस्तु कवनो इतिहास ना ह, एकर कवनो घटना हू-ब-हू सही घटना ना ह, एकर कवनो पात्र यथाचित्रित वास्तविक पात्र ना ह। एह में सन्देह ना कि ढेला, महेन्दर मिसिर, हलिवन्त सहाय आ रिवेल साहेब साँचो के हो चुकल बाड़े। बाकिर एह चरित्रन के कवनो प्रामाणिक ब्योरा सामने नइखे रहल, आ एह लोगन के किस्सा किंवदन्तियन से भरल बा। अइसन कुछ किंवदन्तियन से सह पाके, एह उपन्यास के कथावस्तु कल्पना से खड़ा कइल गइल बा। बाकिर, एह उपन्यास में, एगो काल-विशेष के, क्षेत्र-विशेष के आ समाज-विशेष के जवन तस्वीर उरेहल गइल बा, ऊ जरूर सही बा !

2, ईस्ट गार्डिनर रोड — पाण्डेय कपिल
पटना-800 001 — 26-1-1977

www.bhojpurisahityangan.com

फुलसुंघी

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

ईया के इयाद में

जे

कथा-कहानी,

संस्मरण आ यात्रा-वर्णन

के अक्षय भंडार रहली ।

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

1.

ढेला !

नाम ढेला हो गइल रहे । रूप के रानी आ नाच-गान के महरानी । कवनो महफिल में ढेला चल गइल आ असली नाम छूट गइल । हो गइल ढेला । तबला पर थिरकत तबलची के अँगुरी के बेग बढ़ते जाय, आ लहँगा अइसन लहराय जइसे समुन्दर में चकोह पड़ गइल होखे । गीत मुँह से फूटे त बुझाय जे बँसवरिए बंसी बन गइल होखे आ हवा ओकरा के अपने से बजा जात होखे । ढेला जइसे मेनका होखे भा उर्वशी होखे । अम्बपाली के इलाका के मुख्य नगर मुजफ्फरपुर के रहेवाली गणिका, जइसे अम्बपाली होखे ।

सुनल जाला जे प्रयागराज के गणिका जानकीवाई के गवनई पर रीझ के आपन सब-कुछ निछावर कर देवेवाला प्रेमी जब ओकरा करिया-कलूठ चेचक के दाग वाला चेहरा के देखलस त ऊ पगला गइल आ जानकीबाई के मार छुरी के गोद दिहलस । छुरी के छप्पन घाव खाइयो के जानकीबाई जीयत बाँच गइली, आ नाम बदल गइल, हो गइली छप्पनछुरी ।

बाकिर गुलजारीबाई अपना नामे के अनुरूप रहली गुलजार । रूप अइसन रहे जइसे स्वर्ग से उतरल कवनो अप्सरा होखस । रंग अइसन रहे जइसे चन्द्रमा से झहर-झहर चाँदनी झरत होखे । उनका एगो महफिल में पगलाइल प्रेमियन का बीचे चल गइल ढेला । आ इनकरो नाम बदल गइल । हो गइली ढेला यानी ढेलावाई ।

ढेलाबाई के शोहरत अँजोर लेखा फइलत चल गइल । तन से अधवूढ़ बाकिर मन से जवान रसिक बाबू हलिवन्त सहाय छपरा से दउड़ल गइले मुजफ्फरपुर, बाकिर मन घवाहिल होके लौट आइल छपरा । ढेला के रूप-रस-गंध उनका दिमाग में उथल-पुथल मचा दिहलस । बाकिर ढेला उनका ना मिल सकली । गिरजा के घंटी लेखा ढेला के पाक-पवित्तर बोली उनका के बरज दिहलस । ऊ बोली दिल पर बरछी लेखा गड़ गइल, आ ओकर गूँज दरद लेखा पसरत रह गइल । ढेला बोलले रही — "बाबूसाहेब ! फुलसुंघी के जानीले नू ? ऊ पिंजड़ा में ना पोसा सके । ऊ एगो फूल से रस खींच के चल देले दोसरा फूल का ओर । हम त तवायफ के जात हई । हमरो काम फुलसुंघी लेखा एगो जेब

www.bhojpurisahityangan.com

से पइसा खींच के दोसरा जेब का ओर चल दिहल ह । रउआ घरे लौट जाईं । उमिर त होइए गइल बा । जाके राम राम भजीं ।"

बाबू हलिवन्त सहाय ढेला के सीढ़ी से उतरत-उतरत कहले रहले— "ढेला ! फुलसुंघियो के हमरा सोना के पिंजड़ा में पोसाए के पड़ी, काहे कि हमरा जेब में पइसा के गंगाजी बहेली ! फुलसुंघी के ठोढ़ में ओतना ताकत कहाँ बा जे ऊ ओह जेब के सब रस सोख सको ! आ जहाँ तक उमिर के सवाल बा, त ई जान ल कि हलिवन्त सहाय अपना के अजर-अमर मान के धन कमाले आ अपना के अश्विनीकुमार लेखा चिर जवान मानके जिनिगी जीयेले ! ठीक बा ! समय आई त तोहरा अपना एह उपदेस के अरथ बुझाई ! हम घरे लौटत बानीं, तोहरा खातिर एगो महल बनावे खातिर ! महल माने फुलसुंघी खातिर सोना के एगो पिंजड़ा, जवना का भीतर ऊ एके गो फूल से अघाइल रही आ ओही पर बइठ के चहकत रही ।"

एह पर ढेला हँसल रही, जइसे सोना के हजारन-हजार घंटी पाँती से टुनटुना गइल होखे । आ हलिवन्त सहाय ओह हँसी का आँच में दहकत छपरा लौट आइल रहले ।

बाबू हलिवन्त सहाय के हवेली छपरा के कटरा मुहल्ला में ओसहीं जगमग करत रहे जइसन उनकर मोख्तारी चमकत रहे । मोख्तारी का साथे-साथे जमींदारी, आ जमींदारी का साथे-साथे अफीम के कारवार । ओपियम एजेण्ट रिविल साहब इयार दोस्त रहले । उनकर पालकीगाड़ी रिविलगंज से छपरा के कटरा मुहल्ला ले दउड़त रहे । यूरोप से आइल तरह-तरह के विलास के सामान से भरल रहे घर, आ पुरनका विलायती शराब से ठकचल रहे आलमारी । घर के बाहर, ओक आ बॉटल ट्री से सजल दूर ले फइलल सहन, जवना पर कटल-छँटल घास के कालीन, जेपर पाँव रखे में अहस बुझाय । लाल सुर्खी के सड़क पोर्च ले आइल रहे । ओकरा बाद सीढ़ी के एगो सिलसिला शुरू होखे त बरामदा में खतमाय । दुआर पर बन्दूक लेले सिपाही पहरा देवे, आ ओकरा बगल में सीकड़ से बान्हल बाघ-लेखा बुलडॉग नट्टी चीप देबे खातिर हमेशा तैयार बइठल रहे । एह हवेली से तनकी दूर हट के मोख्तार साहब के ऑफिस रहे, जहाँ ऊ अपना मवक्किलन से मिलस आ जमींदारी के काम देखस भा अफीम के कारवार के निगरानी करस । नोकर-चाकर के कवनो कमी ना रहे । हर काम के बजावे खातिर आदमी तैयार तैनात रहे ।

बाकिर एह हवेली के मलकिनी ना रहली । तीस बरिस पहिले, काफी उमिर चढ़ला पर, पहलौंठी के लड़िका होत खा, जच्चा-बच्चा दूनो स्वर्गवासी हो गइल लोग, आ मोख्तार साहब रह गइले अकेले । दोसर शादी खातिर बहुत जोर पड़ल, बाकिर मोख्तार साहब अपना अंगरेज दोस्त रिविल साहब खानी अकेले रह जाए के फैसला कर ले ले ।

www.bhojpurisahityangan.com

रिवेल साहेब अपना जवानी में ओपियम एजेण्ट का रूप में सरजू का तीर पर गोदना-सेमरिया आइल रहले । उनका रूपसी मेहरारू के ई जगह बड़ा पसन्द आइल रहे । सरजू का ओह पार दूर ले बालू के फइलल ढेर आ ओहपर कहीं-कहीं उगल झाड़-झंखाड़ । सरजू के तीर पर बड़की-बड़की नाव लागत रहे । ओह पर तरह-तरह के माल लदाय, आ नाव चल द स रंगून, सिंगापुर आ जावा-सुमात्रा खातिर । रिवेल साहेब इहाँ रहके गाजीपुर आ बलिया से आइल कच्चा अफीम बिटोरस आ ओकरा के नाव से भेज देस पटना के अफीम फैक्टरी में । साहेब के हमेशा कामे-काम लागल रहे । बाकिर मेम साहब का करस ! कइसे समय काटस ! इहाँ ना कवनो यूरोपीय समाज रहे आ ना कवनां क्लब रहे । अइसन हालत में, मेम साहेब बाहर निकल पड़स — कबहीं सरजू के तीर पर, कबहीं सरजू में छोट डेंगी पर, त कबहीं ओह पार बालू के ढेर पर । इहाँ के जिनिगी में हलचल त रहबे कइल, जइसन कि हर व्यापारिक जगह में होखेला । अक्सर साँझी का बेरा साहेब मेम के लेके पालकीगाड़ी छपरा का ओर दउड़ चले । ओह घड़ी, ना त बाबू हलिवन्त सहाय के कोठिए रहे, आ ना बाबू हलिवन्ते सहाय के कवनो पता रहे । छपरा में कलक्टर, जज आ सिविल सर्जन त अंगरेज रहवे कइलन । ओह लोग के परिवार के संघत में कुछ मन बहल जाय । मेमसाहब के कवनो सन्तान ना भइल । एह से साहेब आ मेम दूनों आदमी, मन लगावे खातिर इहाँ के देसियो लोग का साथ-संघत में समय बितावस । कबहीं - कबहीं सरजू के पार जाके दीयर में ई लोग शिकारो खेलस — कबहीं हरिन, कबहीं बनइला आ कबहीं चिरई के । करत-धरत, एह जमीन पर एह परिवार के पच्चीस बरिस बीत गइल रहे । आ अब एह जमीन से एगो मोहो हो गइल रहे । आ रिवेल साहेब के नाम पर, एह बाजार के नामो रिवेलगंज हो गइल रहे । साहेब अपना काम में उलझल रहले आ इहाँ के समाज के एगो अंगो हो गइल रहले । एही बीचे प्लेग फइलल आ मेमसाहेब ओकर शिकार हो गइली । छपरा के सिविल सर्जन पूरा उतजोग कइले, आ रिवेल साहेब पूरा सेवा कइले बाकिर ऊ लोग मेमसाहेब के बचा ना सकल, आ मेमसाहेब के देहावसान हो गइल । मरे के बेरा मेमसाहेब रिवेल साहेब से कहले रहली कि उनका माटी के एही जगह पर दफनावल जाई, काहेंकि मरियो के इहाँ के अपना हित-मित्र से अलगा होखे के नइखी चाहत । आ उहे भइल । मेमसाहेब के सरजू का किनारे माटी दियाइल ।

रिवेल साहेब अपना मेहरारू के समाधि पर लोर के फूल चढ़ावत घंटन बइठल रह गइले । साँझ से गधबेर भइल आ गधबेर से रात, बाकिर साहेब के जिनिगी में त पहिलहीं रात हो गइल रहे । साहेब के होश भइल त देखले, पन्द्रह सोरह बरिस के एगो छोकड़ा हाथ पकड़ के उठावत रहे— "साहेब, उठीं, घरे चलीं ।" "आरे पगला, अब घर

www.bhojpurisahityangan.com

कहाँ बा !" बाकिर ओह स्पर्श में रिवेल साहेब के बड़ा शान्ति मिलल । ऊ चुपचाप ओह छोकड़ा का संगे घरे आ गइले । रिवेल साहेब पुछले रहले– "तूँ के हउअ भाई ! कवनो देवदूत हउअ का ?" ऊ छोकड़ा बोलल– "जी, हम हलिवन्त हँई, राउर नयका मुंशी ।" आ इहँई से हलिवन्त सहाय के भाग्य पलटा लिहलस । पचास बरिस के अधवृद्ध रिवेल साहेब के दोस्त हो गइले पन्द्रह बरिस के हलिवन्त सहाय । अंग्रेजी आ अंग्रेजी कायदा सीखस । साहेब पूरा-पूरा देसी समाज में घुल-मिल गइलन । अफीम के कारबार धीरे-धीरे हलिवन्त सहाय का हाथ में आवत गइल, आ साहेब का हाथ में धीरे-धीरे दवाई के बक्सा ।

फेर, बाबू हलिवन्त सहाय के बियाह भइल, छपरा में कोठी मिलल, जर जमींदारी किनाइल, आ जज से कहके मोख्तारी दिया दिहल गइल । बाकिर, साहेब रिवेलगंज ना छोड़ सकले ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

2.

हलिवन्त सहाय वल्द बजरंग सहाय के प्रताप ओसहीं फइलल जइसन उनकर कारबार फइलल । बाबू बजरंग सहाय ईस्ट इंडिया कम्पनी के एगो साधारण मुलाजिम रहले आ ओकरा दिल्ली रेजिडेन्ट का ऑफिस में काम करत रहले । उनकर चाचा पंजाब के सर्वे ऑफिस में अमीन रहले । दूनो चाचा भतीजा एके उमिर के रहे लोग, एह से आपस में दोस्ती रहे । अवहीं भारत के सम्राट आखिरी मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर रहले । बाकिर असली सत्ता ईस्ट इण्डिया कम्पनी का हाथ में आ गइल रहे । ई दूनो चाचा-भतीजा साल में एक बेर दू महीना के छुट्टी पर देस आवे लोग, एक्का पर । ओह घड़ी रेल ना रहे । कम्पनी के मुलाजिम भइले, दिल्ली से छपरा के दूर देहात शीतलपुर तक के रास्ता के सुरक्षा आ सुविधा खातिर काफी रहे । पहिले त परिवार गाँवें रहे; बाकिर बाद में चाचा के पंजाब में काफी जायदाद हाथे लाग गइल आ ऊ अपना परिवार के उहें ले जाके बस गइले । उनकर त गाँव छूट गइल, बाकिर बाबू बजरंग सहाय के गाँवें लौट आवे के पड़ल । बुढ़ापा में, उनका तिसरकी मेहरारू के अकेला सन्तान भइले बाबू हलिवन्त सहाय ।

हलिवन्त सहाय के सिर पर बाप के साया ढेर दिन ना रह सकल, आ दस बरिस के होखते ऊ अनाथ हो गइले । पाम्ह आवे के पहिलहीं, मतारियो स्वर्ग सिधार गइली । चाची बड़ा करकसा रहली । चचेरा भाइयो लोग कवनो चीझ ना गुने । आ तब, हलिवन्त सहाय के शीतलपुर छोड़ के गोदना-सेमरिया में अपना मामा के घर के आसरा लेबे के पड़ल । मामा-मामी रहे लोग उदार, बाकिर बहुत गरीब रहे लोग । कवनो उपाय ना देख के, मामा, रिवेल साहब से कह-सुन के उनका इहाँ इनका नोकरी के जोगाड़ कर दिहले । हलिवन्त सहाय हो गइले अफीम कोठी के नयका नायब मुंशी । दरमाहा तय भइल तीन रुपया महीना । ई तीन रुपया जइसे तिरलोक के राज होखे ।

रिवेल साहेब पुछले रहले— “मुंशीगिरी करब ? कायस्थ हउअ नू ?” आ हलिवन्त सहाय ‘हँ’ में खाली मुड़ी हिला देले रहले । कायस्थ भइले मुंशीगिरी के सर्टिफिकेट रहे । बापो त एही सर्टिफिकेट पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी में मुंशी यानी एकाउन्ट्स क्लर्क भइल रहले । बाकिर, हलिवन्त सहाय का किस्मत में मुंशीगिरी ना

www.bhojpurisahityangan.com

लिखाइल रहे । आइल रहले मुंशीगिरी करे, आ बन जाए के पड़ल रिवेल साहेब के गार्जियन, मैनेजर आ दोस्त । रिवेल साहेब कहस– "हलिवन्त, हम तोहरा के पूरा अँगरेज बनाएब, आ तोहरा के आपन बेटा बना के ईगलैण्ड लेके चल जाइब । चलब नू ?" आ हलिवन्त सहाय 'हँ' में मुड़ी हिला देस । बाकिर रिवेल साहेब के ई इच्छा पूरा ना हो सकल । उनका से रिवेलगंज ना छूट सकल । ऊ हलिवन्त सहाय के अँगरेज बनावे के कोशिश में खुदे हिन्दुस्तानी हो गइले । पूरा पक्का भोजपुरिया देहाती हिन्दुस्तानी । हलिवन्त सहाय का देह पर कोट-पैंट चढ़ गइल, जबान पर अँगरेजी चढ़ गइल, चाल में साहबियत ठाट आ गइल, आ रोजगार के पूरा कमान हाथ में आ गइल । बाकिर, रिवेल साहेब ईगलैण्डवाला साहेब ना रह सकले । पूरा के पूरा बदल गइले । उनका ईगलैण्ड भुला गइ-, आ ऊ हो गइले रिवेलगंज के असली बाशिन्दा । हाथ में दवाई के बक्सा वाला, -ार-भर के बाबा ।

एक बेर हलिवन्त सहाय धीरे से कहले रहले– "साहेब ! ईगलैण्ड ना चलब ?" साहेब कुछ देर तक चुपचाप हलिवन्त सहाय का ओर देखत रह गइले, आ ओकरा बाद हँस के बोलल रहले– "हलिवन्त ! तोहार कायस्थ जात अँगरेजने अइसन पानी के धार ह । जेने खाल पावेला, ढगर जाला। ओकरा के जमीन से बान्ह के राखल ना जा सके ।" ओकरा कुछ देर बाद, ऊ फेर बोलल रहले– "हलिवन्त ! हमार ईगलैण्ड इहे रिवेलगंज ह । हम एकरा के छोड़के कतहीं ना जाएब, आ ना तोहरा के अपना से दूर, सात समुन्दर पार ईगलैण्ड जाये देब ।"

रिवेल साहेब बहुत दिन के बाद आपन सूट निकलले रहले, आ बहुत दिन के बाद आपन पालकीगाड़ी निकलववले रहले, आ बहुत दिन के बाद ओहपर चढ़ के कतहीं गइल रहले ।

साँझ के बेरा रिवेल साहेब का कोठी पर बड़ा भीड़ जमल रहे । हलुआई आके पूड़ी-कचौड़ी छानत रहे, मिठाई बनावत रहे । हलिवन्त सहाय बलिया के अफीम के खेत घूम के अइले त ई मजमा देखके फाटके पर ठिठक गइले । उनका कुछ समझ में ना आइल । रिवेल साहेब का कोठी में मेहरारुअनों के भीड़ लउकत रहे ।

रिवेल साहेब पीछे से आके पीठ पर हाथ धइले त हलिवन्त सहाय अकबका गइले । रिवेल साहब बोलले– "चलऽ हलिवन्त ! नया धोती-कुर्त्ता पहिर ल । आज तोहार तिलक बा ।" आ ओही दिने हलिवन्त सहाय के तिलक रिवेल साहेब का कोठी में चढ़ गइल । मामा-मामी के खुशी के ठेकाना ना रहे । साहेब कहले रहले कि एह चिरई के पाँख काट देत बानीं , जेसे ई ईगलैण्ड ना उड़ जाय !"

साहेब बहुत सोच-विचार के हलिवन्त सहाय के वियाह कर देबे के बिचार

www.bhojpurisahityangan.com

कइले । उनका माँझी गाँव के एगो लड़की इयाद पड़ल, जवना के दवाई ऊ एक बरिस पहिले कइले रहले । आ उनकर पालकी गाड़ी माँझी गाँव का ओर दउड़ चलल रहे । आ ओही दिने हलिवन्त सहाय के तिलक चढ़ गइल रहे । पूरा रिविलगंज साहेब का कोठी पर खइले रहे ।

तिलक का बाद, साहेब के पालकीगाड़ी बइठल ना । रिविलगंज से छपरा के दौड़ शुरू हो गइल । आ रोज सवेरे रिविल साहेब छपरा जास त साँझ खा वापस आवस । आ अइसहीं एक दिन शादीओ आ गइल । शादी भइल, आ बिदाई कराके डोली चलल, त रिविल साहेब के पालकीगाड़ी साहेब आ हलिवन्त सहाय के लेके साथे-साथे चलल रहे । रिविलगंज में साहेब का कोठी का ओर ना घूम के, जब डोली सीधे आगे बढ़ल, त हलिवन्त सहाय पुछले रहस कि "हमनी का कहवाँ जात बानीं ?" आ साहेब बहुत छोट जवाब देले रहस– "छपरा ।"

ऊहे छपरा बाबू हलिवन्त सहाय के कर्मभूमि हो गइल । साहेब के छपरा वाली कोठी पर डोली पहुँचल । पहिलहीं से मामा-मामी हाजिर रहे लोग । कनिया उतारल गइल । मुँहदेखी के रसम भइल । रिविल साहेब मुँहदेखी कइले रहस, आ छपरा के कोठी आ जायदाद हलिवन्त सहाय का नामे रजिस्ट्री के दस्तावेज कनिया के मुँहदेखाई में देले रहस ।

रिविलगंज लौटे का बेरा, हलिवन्त सहाय के मोख्तारी के सनद धरावत, रिविल साहेब कहले– "हलिवन्त ! तोहरा छपरा में रहे के बा आ काल्ह से तोहरा छपरा कचहरी में मोख्तारी करे के बा ।"

हलिवन्त सहाय के रोआई छूट गइल रहे आ ऊ चिचिया के कहले रहस– "ना साहेब ! हम रउआ के छोड़ के मोख्तारी ना करब आ छपरा में ना रहब ।"

साहेब हलिवन्त का पीठ पर हाथ ध के हँसले रहस । आ कुछ देर का बाद अतने-भंर कहले रहस कि– "ना ! तोहरा मोखतारी करेके बा आ छपरा में रहे के बा ।"

ओही दिने, साँझ खानी, साहेब रिविलगंज अकेले लौट आइल रहले ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

3.

छपरा स्टेशन पर जब गाड़ी रुकल त भोर हो गइल रहे । बाबू हलिवन्त सहाय गाड़ी से उतरले । कपड़ा गन्दा हो गइल रहे । केस एने-ओने बिखर गइल रहे, आ कुछ-कुछ उजर-उजर दाढ़ियो निकल आइल रहे । रात में जगला से आँख कुछ-कुछ लाल हो गइल रहे । उनका गाड़ी से उतरते; स्टेशन पर कुछ हलचल अइसन मच गइल । स्टेशनमास्टर झटकल अइले आ सलाम क के साथे-साथे लिया चलले । बाबू हलिवन्त सहाय अँगरेजी में बोलले– "स्टेशनमास्टर साहेब ! हमार सवारी ना आइल होई । रउआ एगो सवारी मँगवा दिहीं ।" तुरन्ते एगो किराया के पालकीगाड़ी आ गइल आ बाबू हलिवन्त सहाय ओह पर बइठ गइले । गाड़ी चलल त एगो हूक अइसन उठल । रिवेल साहेब कबहीं कहले रहले– "हलिवन्त! आदमी बड़ा छोट आ कमजोर जीव ह । ऊ त समय आ परिस्थिति ओकरा के बड़ बना देबेला ।" आ साँचहूँ, बाबू हलिवन्त सहाय समये आ परिस्थितिये का हाथे बड़ बनले । आ आज, समये आ परिस्थितिये का चलते एगो रंडी किहाँ से अपमान के घोंट घोंट के दीन-हीन हालत में वापस आ रहल बाड़े ।

हलिवन्त सहाय अपना जिनिगी में बहुत-कुछ देखले-सुनले बाड़े आ बहुत-कुछ सहले बाड़े । आज से बीस बरिस पहिले, पैंतीसे बरिस के भरल जवानी में विधुर हो गइले, निस्सन्तान । तबतक रिवेल साहेब स्वर्ग सिधार चुकल रहले । अगर जो रिवेल साहेब जीयत रहिते, त साइत, बाबू हलिवन्त सहाय मेहरारू के मरला का बाद, अकेले रह जाए के फैसला ना कर पइते । रिवेल साहेब के पत्नी-वियोग उनका गिरत उमिर में भइल रहे । ऊहो रहले त निस्सन्तान, बाकिर उनका हलिवन्त सहाय अइसन अलऽम मिल गइल रहे । उनका संसार के सब सुख भोगा चुकल रहे । बाकिर हलिवन्त सहाय के का भोगा सकल रहे ?

रिवेल साहेब एगो साधु अइसन उपकार करत जिनिगी काट देले रहले । बाप अइसन रिवेल साहेब के आदर्श मानके, बाबू हलिवन्त सहाय से, मेहरारू का मउअत पर, गलत निर्णय लिया गइल । ऊ रिवेल साहेब अइसन अकेले जिनगी बितावे के निर्णय ले लिहले । रिवेल साहेब आपन सांसारिक जिनिगी हलिवन्त सहाय पर ओठंघा के परमानन्द

www.bhojpurisahityangan.com

में लीन हो गइल रहले; बाकिर हलिवन्त सहाय सांसारिक दलदल में फँसल रह गइले। कवनो अलऽम ना पकड़ा सकल। शक्ति आ सामरथ के बढ़न्ती का साथे-साथे ऊ दलदल में धँसत चल गइले। अब, एह पचपन बरिस का उमिर में आके, मनके दबल-दबकल वासना उभार पर आ गइल रहे।

कटरा के मोड़ पर गाड़ी एगो हिचकोला लिहलस, आ खिड़की से झाँक के, हलिवन्त सहाय देखले— सरजू के धार एकदम पातर हो गइल बा, आ बालू पसरल बा ढेरी के ढेरी। सड़क का किनारे एगो चरवाह गाय चरावत रहे आ गीत गावत रहे —

बलुरेतवा पर बँगला छवा द किसोरै लाल, मारे लहर जमुना के !

ठीक बा ! हमहूँ बलुरेतवा पर बँगला छवाएब, आ ओह में, जमुना के त ना, बाकिर सरजू के लहर, लहर मारी ! घबड़ा मत ढेला ! समय आवे द। आदमी बड़ा कमजोर होला, ठीक बा। समय आ परिस्थिति ओकरा के बड़ बना देला, इहो ठीक बा। बाकिर जे बड़ बन जाला, ओकरा मोताबिके समय आ परिस्थिति के चले के पड़ेला। गुरु, पिता आ दोस्त रिविल साहेब ई बात काहे ना बूझ सकल रहले !

पालकीगाड़ी फाटक पर रुकल, दरवान झुक के सलाम कइलस आ चर-चर करत फाटक खुल गइल। पालकीगाड़ी फाटक के भीतर घुसल। बुलडॉग एक बेर भों-भों क के चुपा गइल। घर में हलचल मच गइल आ दर्जनों नोकर-दाई एने से ओने दउड़े लगलन। बाबू हलिवन्त सहाय अपना खिचड़ी मोंछ का भीतरे मुस्कुरइले— घर त पूरा भरल बा, बाकिर तेहू पर हमरा मने जइसन खाली बा। एह खाली घर के खालीए रहे के होई, बाकिर अब मन आउर खाली ना रह सकी। पलटुआ से कहलन— "जो रे पलटुआ ! तनी रजिस्ट्रार साहेब के बोला ले आव।"

राय लछुमन प्रसाद बस्ती जिला के रहनिहार जवान आदमी रहले। बाकिर बाबू हलिवन्त सहाय के जवान मन के लँगोटिया इयार। सिपाही विद्रोह का बेरा उनकर बाप राय कामतानाथ प्रसाद अंगरेजी सेना में सूबेदार रहले आ अंगरेजन के खुल के साथ देले रहले। एही सनद का बल पर राय लछुमन प्रसाद का डिस्ट्रिक्ट सब-रजिस्ट्रारी मिल गइल रहे, आ ऊ छपरा के डिस्ट्रिक्ट सब-रजिस्ट्रार रहले। बाबू हलिवन्त सहाय के कृपापात्र रहले आ असन-जसन के इयार-दोस्त।

उनका आवते, बाबू हलिवन्त सहाय बेसबुरी से कहले— "रजिस्ट्रार साहेब ! हऊ सामने के मोड़ के दखिनवारा जमीन सरजू का किनार ले, आज साँझ तक हमरा नावें हो जाए के चाहीं। एकरा खातिर, जेतना पइसा लागे, हमरा इहाँ से मँगा लेब।" रजिस्ट्रार साहेब भकुआइल मुँहें ताके लगले। हलिवन्त सहाय उनका ओर घूम के फेर कहले— "रजिस्ट्रार साहेब, भकुआई मत। उहाँ हमरा एगो बँगला बनावे के

www.bhojpurisahityangan.com

वा, अइसन बँगला जवना में सरजू लहर मार सके । बंगला माने सोना के पिंजड़ा, जवना में फुलसुंघी पोसा सके ।"

रजिस्ट्रार साहेब आउर भकुआ गइले, आ उनका के ओसहीं छोड़ के हलिवन्त सहाय भीतर चल देले । भीतर से, हलिवन्त सहाय के भारी स्वर में गुनगुनइला के आवाज बाहर आवत रहे– बलुरेतवा पर बँगला छवा द किसोर लाल मारे लहर जमुना के !

ओही जमीन पर कोठी बनल – लाल कोठी । सामने दूर ले लम्बा घास के मैदान बनल । तरह-तरह के देसी आ विलायती पेड़-पौधा लागल । गुलाब के बाग लागल – रोज गार्डेन । कोठी के दखिन ओर उफनाइल सरजू के लहर सह लेबे लायक तोड़ बनल । पच्छिम ओर घोड़साल आ गाड़ी रखे के गराज बनल; माली आ नोकर-चाकर का रहे लायक छोट-छोट घर बनल । पूरुब ओर लोहा के बड़की-बड़की फाटक लागल । फाटक का बगल में दरवान के रहे खातिर बनल कोठरी । फाटक से होत लाल सुर्खी के सड़क कोठी का पोर्च ले जात रहे ।

राय लछुमन प्रसाद पुछले रहस– "मोख्तार साहेब ! एतना सुन्दर कोठी का रहते, रउआ एह दोसर कोठी के बनावे के का जरूरत पड़ल ह ?"

आ मोख्तार साहेब अपना खिंचड़ी मोंछ का भीतर से मुस्कुरा के बोलले रहस– "रजिस्ट्रार साहेब ! रउआ अबहीं एकदम लइका बानी । आरे ई कोठी थोड़हीं ह ? ई त पिंजड़ा ह, पिंजड़ा – सोना के पिंजड़ा, जवना में फुलसुंघी पोसाई !"

रजिस्ट्रार साहेब भकुआ के फेरू मोख्तार साहेब का ओर तकले रहस आ मोख्तार साहेब हँसत शराब के जाम बढ़ा देले रहस ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

4.

गुलजारीबाई उर्फ ढेलाबाई के महफिल अपना रंग पर रहे । सेठ रामरतन साह के बेटी के बरियात आइल रहे । ओही में, मुजफ्फरपुर से आइल रहली ढेलाबाई । बीस-बाइस के गदराइल देह आ सोना के रंग अइसन रंग ! गला में जइसे कोइल बइठल होखे । आ पाँव जइसे तितली के पाँख होखे — ओइसहीं थिरकत रहेवाला, ओइसहीं कोमल ! देह काँच कोइन अइसन लचक-लचक जाय । बाकिर अइसन ढेलाबाई के नाच के देख सकत रहे ? बरियात में आइल बड़-बड़ लोगन के ओह महफिल में केकर पइठ रहे ? साधारण लोग खातिर त अलगा से लखनऊ के भाँड़ आइले रहले स ।

सराय के आँगन का बीचोबीच एक सौ बारह चोप वाला शामियाना तनाइल रहे, जेकरा बीच में बनल रहे नाचघर — सहन से एक हाथ नीचे, जेमे चारू ओर से बइठेवाला लोग ठीक से नाच देख सको ।

ढेलाबाई गावत रहली— बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया । बिरहनी गीत के बोल कत्थक के पावटी से मिलके महफिल में रस के बरखा बरिसावत रहे । सभे भाव में भींजत जात रहे । रात के निस्तब्धता में गीत आ नाच के रंग से महफिल सराबोर हो गइल रहे । सराय के फाटक के बुर्जी पर लागल चउतरफा बड़का घड़ी के घंटा बाजल — टंग, टुंग !

फाटक पर एगो हलुके हलचल भइल । पहिलहीं से आधा खुलल लोहा के बड़का फाटक हड़हड़ा के पूरा खुल गइल । गोड़ के धबड़-धबड़ आवाज सुनाई पड़ल । मशालची मशाल के टेढ़ क के ओह अन्हार में देखे के कोशिश कइले । तबलची के ठेका के हाथ थथम गइल, सारंगी के गज बगल में फेंका गइल आ गीत के तान बीचे में टूट गइल । पचासन आदमी हाथ में चमकत तलवार आ बन्दूक लेले रहलन । एगो कड़कत आवाज आइल रहे — केहू हिले के कोशिश मत करो; ना त मूड़ी गरदन पर ना रही ।

सभे अचरज से आँख मलत देखल कि सभे सही सलामत बा, आ डाकू के दल जइसे झटका से आइल रहे ओइसहीं झटका से लौटियो गइल बा । पलखत में ई कवन तमाशा हो गइल । फाटक पर बड़का दतइला हाथी झूमत लउकल रहे; आ फेर

www.bhojpurisahityangan.com

सभ गायब । रंग में भंग पड़ गइल । बाकिर, ई का भइल ! गुलजारीबाई कहाँ बाड़ी ? का भइली ढेलावाई ? सभे अपना गरदन पर आपन मूड़ी टकटोरत अपना-अपना घर का ओर भाग चलल । केकरा होश रहे ई देखे के कि महफिल के हीरा लुटा गइल बा — गायब बाड़ी ढेलावाई । आ फाटक का बहरी राखल ईरान के ढलल गनमेटल के बड़का तोप चुपचाप लावारिस अइसन पड़ल रह गइल !

डेढ़ सौ बरिस पहिले बनल ई सराय जाने केतना जात्रियन के रक्षा कइले होई । सराय के ई लोहा के बड़का फाटक जाने केतना हमला सहियो के बन्द के बन्दे रहल होई । फाटक का बहरी राखल ई बड़का तोप, सराय के सरन में आइल लोगन के रक्षा में, जाने केतना बेर आग उगिलत-उगिलत लाल हो गइल होई । बाकिर, आज फाटको खुलल रह गइल आ तोपो ठंढा परल रह गइल । लुटेरा भरल महफिल से उठा ले गइलन स ढेलावाई के । कुछुए बरिस पहिले जवन सराय सिपाही-विद्रोह का बेरा समूचे छपरा के बचा लेले रहे, उहे अबकी एगो ढेलावाई के ना बचा सकल । महफिल उजड़ गइल रहे । सभे अपना-अपना डेरा का ओर भाग चलल रहे । महफिल में बाँचल रह गइल रहे खाली तवला, सारंगी, प्याली, बोतल आ बेतरतीबी से फइलल मसनद ।

मीनावाई अपना खेमा से निकल के बाहर देखे के कोशिश कइली । दुलार खाँ तवलची ओनहीं आवत रहले । "का हो दुलार ! का बात बा ?" —मीना बाई पुछली ।

दुलार खाँ के घिघ्घी बन्हा गइल रहे — "माय जी ! गुलजारी बाई...........।" दुलार खाँ का मुँह से बोलिए ना निकल सकल रहे ।

"का गुलजारीवाई के ? का भइल हमरा बेटी के ?" — मीनाबाई घबड़ा के पुछली ।

"डाकू ले गइले स" — दुलार खाँ केहूँगऽ कह पवले । मीनाबाई छाती पीटत महफिल का ओर दउड़ली । बाकिर महफिल त सून पड़ल रहे ।

सराय का बरामदा में ओह महफिल से दूर हटके खवासन के दल बइठल सुरती मलत रहे, आ ढेलावाई के रूप-रंग आ नाच-गान पर आह भरत रहे । लुटेरन के देखते ओह में से कुछ खवास उठके खड़ा भइले, बाकिर सहम के खड़े रह गइले । लुटेरा अइलन स आ ढेलावाई के हाथी पर लाद के ले गइलन स; बाकिर केहू चूँ तक ना कर सकल ।

ओही खवासन के दल का साथे एगो नौजवान बइठल रहे — संगीत के जानकार, बिरहिनी आ पूर्वी के प्रेमी । ढेलावाई के नाम के जोर ओकरा के काहीं-मिश्रवलिया गाँव से छपरा तक खींच ले आइल रहे । महफिल में बइठ सके के गँवई संकोच ओकरा के दूर बरामदा में खवासन का साथे बइठे के मजबूर कइले रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

लुटेरा चल गइले । सराय में एगो हलचल उठल आ गुलबुल में बदल के शांत हो गइल । ऊ नौजवान चुपचाप उठल आ फाटक का बाहर अन्हार में भुला गइल ।

राम-राम करत भोर भइल । सराय के फाटक, जे एह डकैती का बाद आ महफिल उजड़ला का बाद मजबूती से बन्द क दिहल रहे, से खुलल । तबलची दुलार खाँ का संगे मीनाबाई बाहर निकलली– पैदल, नंगे पाँव । कहवाँ खोजस बेटी के ! के बतावेवाला रहे ! कोतवाली में कोतवाल साहेब रोअत मीनाबाई के देखके हँसल रहले– "अब का रोअत बाड़ू मीनाबाई ! ढेलाबाई के मोह छोड़ऽ ! ऊ अब तोहरा ना मिल सकिहें । उनकर अब दाम बोलऽ ! केतना दाम चाहीं तोहरा ढेलाबाई खातिर ?"

"दाम ? कइसन दाम कोतवाल साहेब ? हीरा-मोती आ जवाहरात के दाम होला । चन्दरमा के दाम ना होखे । चन्दरमा अइसन हमरा गुलजारी के दाम देवे के केकरा हूब बा कोतवाल साहेब ?" मीनाबाई तीर लेखा बोलल रहली ।

लालकोठी में रहली गुलजारीबाई । फाटक के जँगला पकड़ के खड़ा रहली मीनाबाई । बन्दूक लेले खड़ा रहले गुलाब सिंह पहरादार । मोंछ उनका बोलिए अइसन अँइठल रहे । पीछे से आवाज आइल– "का ह मीनाबाई ! का चाहत बाड़ू ?" ई बुलन्द आवाज जेकर रहे, ओकरा के देखते रह गइली मीनाबाई । अइसन रोबदार चेहरा उनका जिनिगी में पहिले ना लउकल रहे । सिंह अइसन गुलाबसिंह सियार अइसन हो गइल रहले । दउड़ के फाटक खोलले । जिनगी में बहुत-कुछ देखल मीनाबाई के ई बूझे में देरी ना लागल कि ऊ जेकरा आगे खड़ा बाड़ी ऊहे हउए बाबू हलिवन्त सहाय मोख्तार । मोख्तार साहेब फाटक से भीतर घुसत बोलले– "भीतरे आ जा मीनाबाई !" आ मीनाबाई ओह रोबदार आदमी का पाछा-पाछा चले लगली । घास के लॉन पार हो गइल । फूल के कियारी छूट गइल आ सामने पोर्च से उठत सीढ़ी आ गइल, बरामदा आइल, फेर डेउढ़ी आइल, आ फेर बइठका आ गइल । बाबू हलिवन्त सहाय कहले रहले– "मीनाबाई ! रोज-रोज का जगहा तूँ एके बेर अपना बेटी के दाम ले ल ।" दुनिया देखल मीनाबाई झुक के सलाम कइले रहली– "हुजूर ! हमरा बेटी के बेंचे के नइखे । दाम कइसन ले लीं ? हुजूर के खिदमत में गुलजारी हमरा ओर से तोहफा रहिहें ! हम गरीब एह से बेसी सरकार के का दे सकत बानीं ।"

बाबू हलिवन्त सहाय के मन में सनसनाहट लागल । उनका अपना लड़िकाई के

www.bhojpurisahityangan.com

एगो घटना इयाद पड़ल । उनकर बाबूजी बाबू बजरंग सहाय छुट्टी में दिल्ली से एक्का पर गाँवें शीतलपुर आइल रहले । बड़ा हल्ला रहे जे माँझी के बहुरिया जी के पूरा राज बाबू बजरंग सहाय कम्पनी सरकार से नीलाम में ले लेले बाड़े; अब त बाबू बजरंग सहाय राजा हो गइले; अब ऊ का नौकरी करे दिल्ली जइहें ! बातो साँचे रहे । बहुरिया जी का ओर से कम्पनी सरकार के जमा ना भरा सकल रहे, आ उनकर पूरा राज नीलाम पर चढ़ गइल रहे । कम्पनी के कारिन्दा बाबू बजरंग सहाय का हाथ से कागज गुजरल, आ ऊ पूरा राज नीलाम में अपना नामे करा लेले रहले । छुट्टी में उनका शीतलपुर अइला पर, एक दिन, जब कि दुपहर में बाबू बजरंग सहाय खा के अँचवत रहले, बहुरिया जी के पालकी दुआर पर लागल । बाबू बजरंग सहाय अचरज से ताके लगले । तले, बहुरिया जी पालकी से उतर के सामने अइली आ बोलली कि "रउआ त हमार पूरा राज नीलाम करा लेले बानी, एह में हमरा त कुछुओ नइखे कहेके; बाकिर हमार दशा ई बा जे काल्ह से हमरा फुटहो दुलम हो जाई; हई अँचरा पसारत बानी; एह में हमरा जीए-खाए लायक कुछुओ दे दिहल जाय ।" आ बाबू हलिवन्त सहाय मोख्तार के ई पूरा इयाद बा कि उनकर बाबूजी खटर-खटर खड़ाऊँ करत भीतर गइल रहले, आ नीलामवाला पूरा कागज लेले बाहर आइल रहले, आ कहले रहले— "सरकार ! अपने के दरबार से हमार कई पुश्त जियले-खइले बा । हमरा हड्डी में अपने के नून भीनल बा । हम ई नीलामी एह से ना लेले रहनी हँ कि अपने के ई राज ले के हम राजा होखब । हम त खाली अपने के राज बचावे खातिर नीलाम लेले रहनी हँ । अपने के चीझ, अपनहीं लिहल जाय ।" एतना कहके ऊ नीलाम वाला कागज बाबू बजरंग सहाय बहुरिया जी का खोंइछा मे डाल देले रहले !

आ ठीक ओइसहीं, ढेलाबाई अइसन राज मीनाबाई बाबू हलिवन्त सहाय का खोंइछा में डाल देले बाड़ी !

●

www.bhojpurisahityangan.com

5.

सराय से उठके नौजवान अन्हार में गायब हो गइल । पाँच-छ साल पहिले, जब रेल के लाइन बिछावल जात रहे, ओह घड़ी ऊ नौजवान अवहीं लइकाहे रहे आ रेल देखे छपरा आइल रहे । आ आज जवानी के आलम लेके ढेलावाई के मुजरा देखे आइल रहल ह । सराय के फाटक पर दरवान कँपसल-दुबकल रहे । नौजवान के देखते ओकरा मुँह से आदतबस अतने-भर काँपत आवाज निक्लल— "के ह ?"

नौजवान अतने भर बोलल— "महेन्दर मिसिर", आ फाटक से निकल गइल । अन्हार में कुछ लउकत ना रहे । सराय के आगे के तालाब में जोन्हियन के परिछाहीं जगमगात रहे । दूर, सड़क के मोड़ पर, मशाल के रोशनी में छाया अइसन बड़का दँतइला हाथी झटकल चलल जात रहे । अगल-बगल में भूत अइसन आदमियन के दल दउड़त चलल जात रहे ।

महेन्दर मिसिर छन-भर ठिठक के ओकरा ओर देखत रहले । दिल में दरद अइसन उठत रहे .... बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया ! ई सुधि का जिनिगी-भर बिसरावल जा सकत बा !

महेन्दर मिसिर एक-ब-एक घूम पड़ले, आ दोसरा ओर चल पड़ले । तुरते रेलवे लाइन आइल । ओकरा के पार करे लगले । लाइन पर से स्टेशन लउकत रहे । टिमटिमात बत्ती पोल पर शीशा में लागल रहे । लाइन पार करते चँवरा आइल । सूखल, दरार फाटल चँवरा । धान के खूँटी पाँव से लाग के चुर-चुर करत रहे । बीच-बीच में खेतन के डँड़ार आ जाय । टेस लागत-लागत बाँचे । पइन पार करे में एह अन्हार में ढिमिलात-ढिमिलात जान बाँचे ।

एह अन्हार में कहीं आदमी चलेला ! त का ई महेन्दर मिसिर ना महेन्दर मिसिर के प्रेत चलल जात रहे ! कवना दीया के रोशनी में उनका राह लउकत रहे......... बेराह के राह! दरद के दीया उकस गइल रहे .... चारो ओर अँजोर अँजोर........ बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया !

झुलफुलाह भइल । गाछ-बिरीछ, गाँव-जवार जइसे चद्दर ओढ़ के अगल-बगल में खड़ा हो गइले स । चिरई चह-चह क के चहके लगली स— बिसरइहो जनि बालम

www.bhojpurisahityangan.com

हमार सुधिया !

फरीछ भइल । ई का ? ई त काँही मिश्रवलिया ना ह । ई त पकड़ी गाँव ह, गुरुजी के गाँव । सामने के बथान गुरुजी के ह । महेन्दर मिसिर गुरुजी के दुआर पर खड़ा के खड़ा रह गइले, गुरु पं० रामनारायण मिसिर का दुआर पर । घर के भीतर से तम्बूरा पर गुरुजी के पराती सुनात रहे, भैरवी में, चुस्ती से बान्हल पराती—कासी के लोग बड़ा विसवासी, नेहा लगाय दियो फाँसी, बोली बोले चिरइया बिरिजबासी ।

जा हो महेन्दर, बिरिजबासी चिरइया अब भीतर बोली बोलते रही ! चढ़ गइलऽ बेटा फाँसी पर — बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया ! गुरुजी के पराती चलत रहल । आ चेला रस में डूबत रहले । आज ले काहे ना एह अलौकिक ब्रह्म के दरसन हो सकल रहल ह ! संगीत के मरम समझावे के गुरुजी के सब कोशिश बेकार गइल रहे । ऊहे मरम आज अपनहीं परत पर परत खुलत चल गइल ! गीत कब खतम भइल, ई महेन्दर का ना बुझा सकल ।

"के खड़ा बा ?" — गुरुजी के गम्भीर आवाज से महेन्दर मिसिर के तन्द्रा टूटल । ऊ दउड़ के गुरुजी के चरन पकड़ के लोट गइले । गोड़ पर गरम-गरम लोर के ढरक बुझाइल त गुरुजी चौंक पड़ले — "का हो महेन्दर ! का बात बा ? घरे सब कुछ कुशल बा नू ? तूँ आवत कहाँ से बाड़ऽ? आरे, तूँ रोअत काहे बाड़ऽ? का बात ह हो?"

बाकिर महेन्दर मिसिर रोअते जात रहले । बड़ी देर के बाद कह पवले— "गुरुजी! अतना दिन से रउआ हमरा के सिखावत-समझावत रहनी हँ बाकिर हमरा कुछ ना बुझाइल रहल ह । आज पहिलकी बेर राउर गावल सुनके हमरा भीतर एगो दीया जर गइल ह, आ बुझाता जइसे हम अन्हार से अँजोर में आ गइल होखीं ।" पं० रामनारायण मिसिर महेन्दर मिसिर के हाथ पकड़ले, बड़ा गौर से उनका के देखत रहले । कुछुओ ना बोलले ।

साँझ के बइठकी जमल । गुरुजी बोलले— "महेन्दर ! आज तूँही कुछ सुनावऽ ।"

महेन्दर मिसिर गावे के शुरू कइले । एगो गीत भइल, दोसर गीत भइल, तीसर गती भइल । बाकिर पं० रामनारायण मिसिर के कुछुओ पसन्द ना आइल । ऊ बोलले "महेन्दर ! आज तूँ अतना उखड़ल-उखड़ल काहे बाड़ऽ? तबीयत ठीक बा नू?"

"जी, तबीयत त ठीके बा" — कुछ सँकोचत बोलले महेन्दर मिसिर ।

"त जम के कुछ सुनावऽ" — रामनारायण मिसिर हँसत बोलले ।

महेन्दर मिसिर के संकोच अब ले बहुत कुछ दूर हो गइल रहे । उनका मन में बसल-सँवरल ढेलाबाई के गीत हठाते उनका गला में आ गइल — बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया...........!

www.bhojpurisahityangan.com

पं॰ रामनारायण मिसिर के बुझाइल जइसे ई गीत उनकर सुनल गीत ह । जइसे-जइसे गीत आगे बढ़े, उनका भीतर ई गीत झिलमिलात आगे बढ़े लागे, ठीक सपना अइसन ।

आ गीत के छोर धइले पं॰ रामनारायण मिसिर अपना अतीत में लौट गइल रहले । गीत खतम हो गइल । बइठकी उड़स गइल । बाकिर पं॰ रामनारायण मिसिर चुपचाप बइठल के बइठल रह गइले ।

पं॰ रामनारायण मिसिर अपना तीस साल पुरान जिनिगी में लौट गइल रहले । ओह घड़ी पचीस-छब्बिस के उमिर होई । संगीत मरम के बेधे लागल रहे । घर के काम-धाम से एकदम उदासीन रहले रामनारायण मिसिर । घर में मन ना लागल त रिविलगंज के अफीम कोठी पर नोकरी ध लेले रहले । अफीम दरोगा के अपना डिउटी से फुर्सत पावस त तम्बूरा उठा लेस, आ सरजू के लहर अइसन उनकर स्वर दूर-दूर ले लहराये लागे । रिविलगंज से छपरा नजदीके रहे । एह से बीच-बीच में छपरा जाके, लखनऊ से छपरा आ के बसल घरानादार गवैया उस्ताद नज्जू खाँ साहेब के शगिर्दियो क लेस ।

उठान के उमिर रहे । दिल में कुछ करेके हौसला रहे । आ पं॰ रामनारायण मिसिर के उनके लायक दोस्त मिल गइल रहले हलिवन्त सहाय । कद-काठी में बरोबर । हलिवन्त सहाय बड़ा जूझे वाला जीव रहले । दिल उनको रहे । संगीत से प्रेम उनको रहे । बाकिर ओकरा खातिर पागलपन ना रहे ।

ओही हलिवन्त सहाय का साथे बहुत-बहुत मजा कइले पं॰ रामनारायण मिसिर । कहाँ-कहाँ ना गइले । केकर-केकर ना गाना सुनले आ नाच देखले! बाकिर, सब कुछ कइयो के, पुरइन के पात अइसन अलग-थलग रह गइले हलिवन्त सहाय; आ पं॰ रामनारायण मिसिर अपना पूरा रामनारायण मिसिर का साथे डूब गइले । आ एही 'बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया' में अइसन डुबले रामनारायण मिसिर, कि उनका से सब छूट गइल । अफीम कोठी के नौकरियो छूट गइल । आ पागल अइसन ना जाने कहाँ-कहाँ बँवड़ेरा भइल घूमत फिरले । आ जब ज्वार उतरल त पकड़ी के आश्रय पकड़े के पड़ल । तब तक हलिवन्त सहाय अपना चरम उत्कर्ष पर पहुँच चुकल रहले ।

रिविलगंज में मुजफ्फरपुर से मीनाबाई नाचे अइली । किसुन साह के बेटी के बरियात आइल रहे । रिविलगंज में अफीम कोठी के अमलान के बड़ा इज्जत रहे । पं॰ रामनारायण मिसिर हलिवन्त सहाय का साथे मीनाबाई के मुजरा देखे गइले । आग लेखा लहलह रूप के बड़ा धाह लागल रहे रामनारायण मिसिर के । बीस-बाइस बरिस के मीनाबाई के गदराइल देह उमड़ल सरजू लेखा भरल रहे लबालब । जरीदार लहँगा, सावन

www.bhojpurisahityangan.com

के सरजू लेखा लहरा लेवे । घूमस त बुझाय जइसे सरजू में चकोह पड़ गइल बा ।

आ ओही महफिल में गवले रहली मीनाबाई– 'बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया ।' आ पं० रामनारायण मिसिर अपना के बिसरा दिहले; बाकिर ऊ सुधिया ना बिसरा पवले ! हलिवन्त सहाय कई बेर झकझोर के वापस चले के कहले, बाकिर महफिल से रामनारायण मिसिर उठ ना सकले । महफिल खतम भइल त उनका होश भइल । अफीम कोठी पर आके देखले कि बही-खाता में उलझल बाड़े हलिवन्त सहाय । एह कायथ में कतहीं लस नइखे, कतहीं दिल नाम के चीज नइखे ।

पं० रामनारायण मिसिर पर नजर पड़ल त बड़ा ठठा के हँसल रहले हलिवन्त सहाय, आ बोलल रहले– "ब्राह्मण देवता ! अगर जो इहे हाल रही त सुदामा लेखा दलिद्दर बन जाए के पड़ी ।"

पं० रामनारायण मिसिर अफीम कोठी के नोकरी छोड़ के भटक गइलें । केने-केने घुमले-वउअइले, बाकिर एको बेर मुजफ्फरपुर ना जा पवले । हर बेर उनकर ब्राह्मण जाग जात रहे । आ फेर ज्वार कम भइल त पकड़ी गाँव के सरन में आवे के पड़ल । बड़ा कष्ट से बीतल रहे समय रामनारायण मिसिर के ।

आ आज तीसन बरिस बाद ऊहे घाव फेर से नखोरा गइल बा । एतना दिन के भुलाइल बिसरल गीत के ई बोल फेर उनका लगे अपना पुरनका धाह का साथे खड़ा हो गइल बा । आ ओह में झुलस रहल बाड़े रामनारायण मिसिर ।

आधा रात के जाँत पीसत अपना चचेरी भउजाई के जँतसार जब-जब सुनले रामनारायण मिसिर तब-तब उनका हिरदया में दरद उठल बा । उनकर चचेरा भाई मोरंग गइले त बरिसन ले ना लौटल रहले । जाँत के घरघर से भरात सुर में, दोसरा अंगना से आवत जँतसार के सिहकत गीत के गूँज, अपना दालान में सूतल रामनारायण मिसिर के करेजा पर तीर अइसन लागत रहल बा । ओह मरम के भोगले बाड़े रामनारायण मिसिर । आ ओही विरहभोग के ऊ अपना बिरहिनी आ पूर्वी गीतन में उतरले बाड़े । समय का साथे-साथ 'बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया' गीत के बोल भुला गइल रहल ह । जहाँ से ई दरद उठ के छपले रहे रामनारायण मिसिर के, ऊ मीनाबाई भुला गइल रहली ह । भउजी के जँतसार से लहरात बिरह के सब भाव भुला गइल रहल ह । ऊ सब आज एकदम ताजा हो गइल बा ।

पं० रामनारायण मिसिर बहुत देर ले गुम भइल बइठल रह गइले । उनकर चेला महेन्दरो मिसिर ओइसने आँच में दहकत बाड़े । बाकिर ई मीनाबाई के गीत 'बिसरइहो जनि बालम हमार सुधिया' इनका कहाँ मिलल ? पुछले– "महेन्दर! ई गीत तोहरा कहाँ मिलल ह हो ?" आ महेन्दर मिसिर सकुचात बोलले– "जी, मीनाबाई के बेटी

www.bhojpurisahityangan.com

गुलजारीबाई के गीत ह ।"

सुनके पं० रामनारायण मिसिर साँस खिंचले । ऊ अपना जवानी के दिन में लौट गइल रहले । उनकर उस्ताद नज्जू खाँ साहेब, उनका एह गीत के गवला पर, उनको से पुछते रहले– "रामनारायण ! ई गीत तोहरा कहाँ मिलल ह हो ?" आ तब पं० रामनारायण मिसिर सकुचात बोलल रहले – "जी, मीनाबाई के गीत ह ।" ओह घड़ी नज्जू खाँ साहेब उनका ओर देखके खाली चुप रह गइले । बाकिर उनकर दोस्त हलिवन्त सहाय उनका हालत पर हँसल रहले – "रामनारायण ! मरद आह ना भरेला । ऊ अपना पसन्द के चीझ अपना बाँह का जोर से उठा लेवेला ।" रामनारायण मिसिर धीरे से बोलल रहले– "हलिवन्त ! हमहूँ पसन्द के सब उठा लेले बानीं । दुख-दरद आ ओकर मरम सब उठा लेले बानीं, सब उठा लेले बानी ।" एहपर हलिवन्त सहाय ठठा के हँसल रहले ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

6.

बुलकना डोम अपना पूरा दल-बल का साथे बगोंइयाँ गाँव में आके बसल । बँसवारी के पार, बगोंइयाँ के बसगित से फरका, ओकरा दल के सिरकी गड़ाइल, आ ओकरा बाद माटी के छोट-छोट पचीसन घर में बदल गइल । मगहिया डोम के एह दल के खेती-बारी लायक कुछ जमीनों जायदाद मिलल । ई सबकुछ डोमन के इनाम में मिलल । ई इनाम ओइसहीं मिलल जइसे पालतू चीता आ बाज के, शिकार ध ले अइला पर, ओकरा मालिक से मिलेला । भारी भरकम ताजा शिकार खातिर सूखल-सड़ल मांस के एगो लोथड़ा । आ मगहिया डोम ओही लोथड़ा पर भुला गइले स कि ओकनी के केतना कीमती शिकार कइले बाड़े स ।

मगहिया डोम के ई दल पहिले गंगा के ओह पार दानापुर में, जाने कई पुस्त पहिले से बसल रहे । फौजी छावनी बनावे का बेरा, कम्पनी सरकार एह डोमन के पुरा बस्ती उजाड़ देले रहे । आ ओकरा बाद, एकनी के ढेर दिन ले छावनी के आसपास मँड़रात रहले स । माटी के मोह छूटत ना रहे । कबहीं कतहीं सिरकी तानऽ स, कबहीं कतहीं । कबहीं कवनो गाछ का नीचे माघ-पूस के जाड़ो काट ल स । गंगा आ सोन के संगम जीये के बहुत अवसर जुटावे वाला रहे । कबहीं बाढ़ में दह के आइल अनकर माल दरियाव से खींच ले आवे के मौका मिले त मन के बड़ा तोख मिले । कबहीं गाछ से मध उतर जाय । कबहीं गाछ से लकड़ी काट के बिका जाय । बाकिर असली धंधा रहे दूर-दूर ले धावा मार के चोरी कइल, डकैती कइल । एह सब काम में, मरद आ मेहरारू में कवनों फरक ना रहे ।

मगहिया डोमन में कुछ मरद आ मेहरारू फौजी छावनी में सफाई के कामो करत रहले बाकिर ओह काम से एकनी के कबहीं पेट ना भरल । मरद सब हमेशा चोरी के फिराक में रहऽ स आ मेहरारू छावनी के जवानन के फँसा के अँइठे के फिराक में । एकरा चलते डोमटोला कबहीं - कबहीं गरमाय । बाकिर, फेर ताड़ी आ दारू के उफान में सबकुछ डूब जाय, आ फेर सबकुछ अपना पुरनका राह पर पहिलहीं अइसन चले लागे । मगहिया डोम लोगन के कद-काठी, साँच में ढरल देह, आ बेफिक्री बेजोड़ रहे । आ एही पर मोहाइल रहले बाबू हलिवन्त सहाय ।

www.bhojpurisahityangan.com

बाबू हलिवन्त सहाय जब एकनी के देखले रहले त देखते रह गइल रहले । सरजू के ओह पार बलिया के दीयर में सिरकी लागल रहे । कमर में बिस्टी लपेटले, हाथ में भाला भा लाठी ले ले, बनइला सूअर के शिकार में ई मगहिया डोम निकलल रहले । बनइला का पाछा-पाछा कोसन दउड़ के ओकरा छाती में भाला घोंप देले रहे बुलकना । सूअर आके बाबू हलिवन्त सहाय का सोझा गिरल, आ बुलकना आके खड़ा भइल त ओकरा देह के एक-एक मांसपेशी के उभार बाबू हलिवन्त सहाय के ध्यान अपना ओर खींच लिहलस । आ फेर, उनका मन में तरह-तरह के जाल बुनाए लागल । ऊ कतहीं पढ़ले रहले जे चीता के शिकार करे खातिर पालतू बनावल जाला । ई शिकारी जीव पालतू बन गइला पर, अपना मालिक खातिर शिकार करेला । बाबू हलिवन्त सहाय एकनी के आपन पालतू चीता बनावे के योजना बनावे लगले । आ फेर, एह डोमन के आगे लोभ-लालच के जाल, अफीम के खेत के रखवारी करेके बहाने, फेंक दिहले । नदी के धार लेखा बहत आवेवाला मगहिया डोमन के दल के एगो ठहराव मिल गइल । कतना बरिस से उखड़ल-उजड़ल डोमन के ई दल कहाँ-कहाँ से भरमत-भटकत इहाँ आइल रहे ।

सिपाही विद्रोह का बेर, दानापुर छावनी के सिपाही जब विद्रोह कइले आ सोन पार क के आरे का ओर चलले त एह मगहिया डोमन खातिर दानापुर छावनी के पास रहे में कुशल ना बुझाइल आ ऊहो सिपहियन का साथे सोन पार क गइले । चोरी-डकैती के काम में लागल डोमन के ई दल दूर-दूर ले धावा मारे में बड़ा तेज रहे । सिपाहियन का साथे आरा पहुँच के जब एकनियों के बाबू कुँअर सिंह के फौज में शामिल हो गइले स त एकनी के हरकारा आ खोजिया के काम पर लगावल गइल । एकनी खातिर दिन-रात बराबर रहे, राह-बेराह बराबर रहे । खूँटी-खाँटी लागल खेतो में एकनी के दउड़ सकत रहले स, बिछलहर घाटो-बेघाट में सरक सकत रहले स । एकनी के ना नदी-नाला रोक सकत रहे,ना काँट-कुस रोक सकत रहे ।

बाबू कुँअर सिंह के फौज के संगे एकनी के बनारस ले गइले स । बाकिर, जब बाबू कुँअर सिंह के देहान्त हो गइल, अँगरेज विद्रोह के दबा दिहले आ अत्याचार शुरू कइले, त मगहिया डोमन के ई दल जेने-तेने लूट-पाट करत, खात-पियत, गाजीपुर होत, बलिया में घुसल, आ फेर सरजू का किनारे आके डेरा जमा दिहलस । आ फेर, पोसुआ चीता लेखा आँख पर पइसा के पट्टी बन्हा के बाबू हलिवन्त सहाय का हाथ में आ गइल । आ फेर, इहे दल, बाबू हलिवन्त सहाय के एगो इशारा पर, छपरा सराय पर छापा मरलस, आ उठा ले आइल ढेलाबाई के । भरल मजलिस से लूट ले आइल मीनाबाई के प्रान अइसन प्यारी बेटी गुलजारीबाई के । आ फेर, बाबू हलिवन्त सहाय, मांस के सड़ल लोथड़ा लेखा बगोंइयाँ गाँव के जमीन फेंक के, ले लेले रहले गुलजारीबाई के ।

www.bhojpurisahityangan.com

माँझी थाना के दरोगा दाऊद खाँ के ई बड़ा अखरल रहे कि ऊ रोज रात में बगोंइयाँ जाके मगहिया डोमन के हाजिरी लिहल करस । बाकिर एह जरायम पेशा कौम खातिर उपाये का रहे । लोग के रक्षा के ख्याल से ओकनी के रोज रात के हाजिरी लिहल जरूरिए रहे ।

दाऊद खाँ कहले रहले – "मोख्तार साहेब ! ई मगहिया डोम त पारा हउअन स पारा ! एकनी के छने में टूट के अइसन बिखर जाले स कि पते ना चले आ छने में जूट के बड़ा भारी हो जाले स । पारा जो देह में चल जाय त कोढ़ लेखा फूट पड़ेला ! कहीं ई कोढ़ लेखा फूट त ना पड़िहन स ?"

बाबू हलिवन्त सहाय अपना मोंछ के भितरे मुस्कुरइले – "दरोगा जी ! वैद्य लोग पारा से दवाई बनावेला आ ओह से बड़-बड़ रोग ठीक करेला ! हमहूँ एह पारा के अमृत बनावे के चाहत बानीं ! रउआ हमरा के मदत करीं ।"

आ जब एह मगहिया डोमन के जमीन लिखाये लागल त ओसहीं हँसल रहले रजिस्ट्रार साहेब राय लछुमन प्रसाद । बोलल रहले – "मोख्तार साहेब ! एकनी के जमीन का होई ? एकनी से का खेती होई ? सब जमिनवाँ बँच के पी जइहन स, आ फेर केनियों बँवड़ेरा लेखा उधियात चल दिहन स ।"

फेर अपना मोंछ के भीतर मुस्कुराइल रहले बाबू हलिवन्त सहाय – "रजिस्ट्रार साहेब ! मोख्तार हम नू हँईं ! खेतवा सब त रही कैसरे-हिन्द का नामे । बेंचिहन स कवन चीझ ? खाली जमीन से बन्हा के रहिहन स । रउआ रजिस्ट्री करीं ।"

आ साँचो, सड़ल मांस के लोथड़ा अइसन इनाम में पावल ऊ जमीन ओह चीतन के आँख पर पट्टी बन्हवा देले रहे । सोना अइसन ढेलाबाई के, जान पर जोखिम उठाके लूट ले आवे वाला मगहिया डोम, उनका के बाबू हलिवन्त सहाय के सँउप के, मगन हो गइल रहले ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

7.

लाल कोठी में अक्सरे महफिल जमे लागल । रात के देर से शुरू होखे वाला महफिल भोर में उड़से । एक से एक कलावन्त आवस, एक से एक बाईजी लोग आवे । रात भर नाच-गान के घुमगज्जड़ मचे । तबला ठनके, सारंगी रिरियाय । गला के कलाबाजी चले, आ घुंघुर के छूम-छनन् ईरानी कालीन पर ना, बाबू हलिवन्त सहाय के संगी-साथी आ आदर के साथ नेवतल बड़का-बड़का रईस जमींदार आ हाकिम-हुक्काम लोग के दिल पर सनसना के चल जाय । शीशा के पियाली खन-खना के खामोश हो जाय । भोर में जब महफिल उड़से त नाच-घर के ललका कालीन पर बाकी रह जाय मुरझाइल गजरा, बेतरतीबी से फइलल मसनद आ जेने-तेने लोंढ़ियाइल खाली बोतल आ पियाली । गुलजारी बाई हवेली के भीतर से जुड़ेवाला दरवाजा पर लागल चिलमन से ई तमाशा कबहीं-कबहीं देख लेस ।

कबहीं-कबहीं बाबू हलिवन्त सहाय के अन्तरंग महफिल जमे, जेमें गुलजारी बाई के मुजरा होखे । एह महफिल में बाबू हलिवन्त सहाय के अलावें केहू के शामिल भइल नसीब में ना रहे । एक से एक रसदार-लयदार गीत आ नाच के एक से एक परन आ टुकड़ा । सबकुछ बहुत शालीनता से गंभीरता से निभे । ना पियाली खनखनाय, ना बोतल ढिमिलाय । एक से एक बढ़ियाँ बिलायती शराब के नदी बहवा देबे वाला बाबू हलिवन्त सहाय एह महफिल में काहे एको बूँद गला के नीचे ना उतारस, ई ना समझ पावस ढेलाबाई ।

एक दिन पुछले रहली ढेलाबाई— “साहेब ! जेकरा घरे शराब के दरियाव बहेला उहे काहे पियासा रह जाला !” आ बाबू हलिवन्त सहाय बड़ा गौर से आँख गड़ाके देखले रहले ढेलाबाई के । कवनो जवाब ना देले । ढेलाबाई के ई का पता रहे कि बाबू हलिवन्त सहाय महफिल में बइठ के सबका शराब का साथे अपने फले के रस पीयेले । ई त खाली जानेला उनकर खास खवास पलटुआ । पलटुओ के ई अचरजे बुझाला जे ढेलाबाई के आवते साहेब के जिनिगी काहे सिकुड़ सिमट गइल ।

पलटुआ के इयाद बा कि ढेलाबाई के लाल कोठी में अइला के कुछुए दिन बाद आइल रहले उस्ताद पं० रामनारायण मिसिर । रात के एक पहर बीत गइल रहे । लाल

www.bhojpurisahityangan.com

कोठी के नाचघर में मुजरा होत रहे ढेलाबाई के । एक से एक हाकिम-हुक्काम आ रईस-जमींदार जुटल रहले । नाच-गान के संगे-संगे बोतल पर बोतल खुलल जात रहे । एही बीचे पहुँचल रहले पं० रामनारायण मिसिर ! पलटुआ मिसिर जी के पन्दरह बरिस के बाद देखलस, एह से चीन्ह ना सकल । पहिले के करिया मोंछ पाक के सन लेखा उजर हो गइल रहे । देह पर फबे वाला रेशमी के कुर्त्ता के जगह मिरजई चढ़ गइल रहे । गमकउआ तेल से सझुराइल लहरदार जुल्फी के जगहा छोट-छोट उजर उजर केस रहे । पलटुआ पहिले बुझलस जे कवनो मोवक्किल आइल बा, एह से दूरे से मिसिर जी के उपेक्षा करत बोलल रहे कि "ए बाबू साहब, रउआ इहाँ कहाँ आ गइल बानीं । सामनेवाला उजरकी कोठी पर जाईं । मोवक्किल लोग वाला दालान में ठहर जाइब । काल्ह सबेरे मोख्तार साहेब से भेंट होई ।"

बाकिर ई का ? गुलाब सिंह पहरादार पीछे से मुँह पर हाथ ध के चुप रहे के इसारा करत बाड़े । मशाल के रोशनी में पलटुआ आँख गड़ा के देखलस आ सोझे मिसिर जी के गोड़ पर गिर पड़ल– "बाबा ! बड़ी गलती हो गइल, माफ करब; अन्हार में चीन्ह ना सकनी हँ । चलल जाव, भीतर चलल जाव ।" बाकिर भीतर से आवत गीत के आवाज में अझुराइल पं० रामनारायण मिसिर बरामदा में रखल आरामकुर्सी पर तबले बइठ गइल रहले– "ना रे पलटुआ । हम इहँई से सुनब । के गावत बा रे ? ढेलाबाई हई का रे ? जो तें आपन काम कर ।"

पलटुआ दउड़ल भीतर गइल । गीत आ नाच के सँगे शराब के नशा में डूबल बाबू हलिवन्त सहाय के पीछे से जाके पलटुआ धीरे से बोलल– "सरकार ! मिसिर बाबा आइल बानीं ।" बाकिर बाबू हलिवन्त सहाय के जइसे कुछुओ ना सुनाइल । प्याली के खनखन में पलटुआ के फुसफुसा के कहल ना सुना सकल । पलटुआ आपन बात एक बेर फेर दोहरवलस, बाकिर ओकरो कवनो असर ना भइल । पलटुआ के फेर कुछ कहे के हिम्मत ना पड़ल । ऊ कबहीं दउड़ के भीतर आवे आ जरूरत के हर इशारा बूझेवाला पलटुआ कबहीं कपूर के आलमारी में से बोतल निकाले, कबहीं दउड़ के बाबर्चीखाना से कबाब के सींक तस्तरी में धइले दउड़ल आवे, आ कबहीं फुर्सत पा के पं० रामनारायण मिसिर जी के पाँव दबा आवे चाहे पंखा हाँक जाय ।

तलहीं, सराय के बड़का घड़ी एक बजला के खबर देत घंटा बजवलस– टन्न । आ चौंक गइली गुलजारी बाई । घुंघुर के लयदारी गडबड़ा गइल । ताल कट गइल । आ नशा के खुमारी के बीच से सभे देखल के गुलजारी बाई हवेली के भीतर भागल जा रहल बाड़ी । एके बजे महफिल उजड़ गइल । सभे बाहर निकले लागल । पालकीगाड़ी आवे, आ एक दू जाना के बइठा के टिक-टिक करत लाल सड़क होत बड़का फाटक से बहरी

www.bhojpurisahityangan.com

निकल जाय । बाबू हलिवन्त सहाय हाथ मिलावस आ दोसर गाड़ी के सवारी सीढ़ी में उतरे लागे । आखिरी आदमी के बिदा करते पलटुआ बगल में आइल आ फेर धीरे से बोलल– "सरकार ! मिसिर बाबा आइल बानी ।"

"केने रे ?"– चौंकले बाबू हलिवन्त सहाय । तले मिसिर जी कुर्सी से खड़ा होके सीढ़ी से नीचे उतर आइल रहले । दूनो आदमी एक दोसरा का ओर बढ़ल आ एक दोसरा से लपिटा गइल । पलटुआ ई अचरज से हमेशा देखले बा कि साहेब, एकदम असली साहेब, सबका साथे साहेब अइसन रहे-बोले वाला साहेब, हमेशा हवा में उड़े वाला साहेब, आँख के एक नजर से आग लगा देबे वाला साहेब, मिसिर बाबा के देखते आपन केंचुल कइसे उतार दीहीले ! एकदम लइका हो जाईले । पलटुआ के ई देखके डरो लागेला ।

साहेब के गाड़ी आके पोर्च में लागल । बाकिर साहेब के जइसे लउकबे ना कइल होखे । ऊ मिसिर जी के हाथ धइले पैदले उजरकी कोठी का ओर बढ़े लगले । बुलकना डोम आपन बड़का भाला उठवले साहेब के पाछे-पाछे चलल त साहेब ओकरो के बरज दिहले । पलटुआ आगे-आगे दउड़ल उजरकी कोठी का ओर ।

मिसिर बाबा पन्दरह बरिस के बाद आइल बानीं साहेब किहाँ । पलटुआ के इयाद बा कि पन्दरह बरिस पहले मिसिर बाबा आ साहेब में बड़ी बाता-कहनी भइल रहे आ मिसिर बाबा आपन चद्दर कान्हा पर रखके चल देले रहनीं पैदले उजरकी कोठी से । साहेब कई बेर एने से ओने मुट्ठी बन्हले बरामदा में तेजी से टहलत रहनीं आ फेर तेजी से फाटक से झटकल गइल रहनीं । फाटक पर खड़ा-खड़ा भगवान बाजार के ओर जायेवाला सड़क पर ढेर देर ले तिकवत रहल रहनीं, आ फेर धीरे-धीरे वापस लौट आइल रहनीं अपना कोठी में । पलंग पर लेट के चद्दर तान लेले रहनीं । पलटुआ ओह घड़ी बहुत लइकाह रहे । बड़ा डर लागल रहे ओकरा ओह घड़ी । आ ओकरा बाद मिसिर बाबा कोठी पर नाहिएँ अइनीं । जवन मिसिर बाबा हर पखवारे उजरकी कोठी पर आइल करीं आ ठहरल करीं ऊहे मिसिर बाबा अतना दिन ले काहे ना अइनीं, ई पलटुआ के ना बुझाइल । बाकिर शादी-बियाह जइसन कुछ शब्द ओकरा कान में पड़ल रहे, ई ओकरा आज ले ना भुलाय ।

कोठी में, जवना कोठरी में मिसिर बाबा आके ठहरत रहीं, ऊ साहेब के सूतेवाला कोठरी से लगले बा । ऊ ओहू घड़ी मिसिर बाबा के कोठरी कहात रहे आ आजो मिसिरे बाबा के कोठरी कहाला । बाकिर, ओकरा बाद से रहेला हमेशा बन्द । पलटुआ दउड़ल जाके ऊ कोठरी खोललस आ झाड़े-बहारे लागल । तले ले साहेब मिसिर बाबा के सँगे आ गइनीं आ उहाँ के कड़कत आवाज सुनाई पड़ल– "पलटुआ ! मिसिर जी के पलंग

www.bhojpurisahityangan.com

हमरे कमरा में लागी ।"

सभे सूत गइल । आ भगेलुआ पंखा के डोरी खींचत-खींचत बीच में अँउघाए लागल, त पलटुआं ओसारा में एक ओर लोंढ़िया गइल । बाकिर, साहेब आ मिसिर बाबा के बतकही चलते रहल ।

भोर में चार बजत होई । तिनडोरिया डूबत रहे आ सुकवा उग आइल रहे । खटपट सुन के पलटुआ के आँख खुलल त देखत बा जे साहेब आ मिसिर बाबा बाहर निकल के पालकीगाड़ी में चढ़ रहल बा लोग । पालकीगाड़ी दउड़े लागल आ बुलकना आपन बड़का भाला लेले गाड़ी के पाछा-पाछा दउड़त चलल । बाद में बुलकना से पलटुआ के मालूम भइल रहे कि साहेब रिवेलगंज गइल रहीं आ सीधे रिवेल साहेब के समाधि पर जाके ठेहुना मोड़ के हाथ नीचे कइले दू घंटा ले बइठल रहीं, ओकरा बाद रिविलगंज वाला अफीम कोठी में दूनो जाना आइल लोग । नाश्ता-पानी के बाद मिसिर बाबा पैदले कतहीं चल गइलीं आ साहेब पालकीगाड़ी से छपरा लौट अइनीं ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

8.

पलटुआ देखले रहे कि साहेब आठ-दस रोज से घर से बाहर कतहीं ना निकलनीं। कबहीं केहू अइबो करे त कहवा दिहीं कि तबीयत ठीक नइखे। एह बीच में साहेब के गला के नीचे शराब एको बूँद ना उतरल। साँझी के बेरा राय लछुमन प्रसाद आवस त साहेब उनका के साथे अपना सूते के कमरा में बोला लीहीं। लछुमन प्रसाद के स्वागत में शराब के पियाला आवे। लछुमन प्रसाद बइठल चुपचाप पीयस। बाकिर, 'तबीयत ठीक नइखे' आ 'डाक्टर मना कइले बा' कहके, साहेब शराब टाल दीहीं।

असहीं करत पन्दरह-बीस दिन बीत गइल। बनारस से आइल रहली विद्याधरी बाई। बड़ा नाम रहे उनकर। अइली त लाल कोठी में उनकर बड़ा स्वागत भइल। बाबू हलिवन्तो सहाय बिस्तरा छोड़ के खड़ा भइले। फेर, रात के महफिल के तइयारी होखे लागल। न्योता लेके हरकारा जेने-तेने दउड़े लगले स। साँझ का बेर पलटुआ देखलस जे पं॰ रामनारायण मिसिर साहेब के कोठी के फाटक से भीतर घुसल आ रहल बानीं, आ साथ में एगो नौछेड़िया जवान बा। पलटुआ साहेब के खवर करे भीतर दउड़ल। देखत बा जे बरिसन के बाद पूजा के कोठरी खुलल बा आ साहेब रिवेल बाबा के तस्वीर के आगे घुटना टेक के बइठल बानीं। पलटुआ पूजा घर के दरवाजा पर थथमल खड़ा रह गइल। बड़ी देर के बाद साहेब खड़ा भइनीं। पलटुआ देखलस कि साहेब के दूनो आँख से लोर बह के गाल भिंजा देले बा। पलटुआ सहम के दरवाजा के बगल में हटे के चहलस, बाकिर साहेब के नजर ओकरा पर पड़ गइल— "पलटुआ !"

पलटुआ चुप।

साहेबो चुप। थोड़की देर बाद साहेब बोलनीं— "पलटुआ ! आज से हम तोरा ऊपर एगो जिम्मेवारी दे रहल बानीं। हम अपना जिनगी में शराब एकदमे त्याग देले बानीं। हम एकर प्रतिज्ञा रिवेल साहेब के समाधि पर कर चुकल बानीं। बाकिर ई बात केहू पर जाहिर ना होखे के चाहीं। हमरा हर महफिल में पहिलहीं अइसन शराब चली, बाकिर हमरा पियाली में खाली फल के रस रही। ई सबकुछ चुपचाप होखे के चाहीं। बुझलिस ? केहू ना ई बूझे जाने पावे जे हम शराब ना फल के रस पी रहल

www.bhojpurisahityangan.com

बानी । बुझलिस ?"

"जी !" —पलटुआ 'हँ' में मूड़ी हिलवलस ।

आ ओही दिने विद्याधरी बाई के मुजरा के इंतजाम लाल कोठी में भइल । नाचघर में एक से एक रईस-जमींदार, हाकिम-हुक्काम आ कलावन्त जुटल रहले । विद्याधरी अपना नामे के अनुरूप रहली विद्याधरी, जिनकर गान-विद्या के शोहरत भारत-भर में फइल चुकल रहे ।

महफिल में पं० रामनारायण मिसिर अपना चेला महेन्दर मिसिर के ले आइल रहले । नाचघर में बड़का-बड़का लोग का सामने महेन्दर मिसिर सिकुड़-सिमट के बइठल रहले । विद्याधरी बाई के मुजरा में सभे बूझत रहे जे गुलजारियो बाई अइहन । अबहीं पन्हरहे-बीस रोज पहिले त सभे गुलजारी बाई के मुजरा देख चुकल रहे । बाकिर आज सभे ओह दीपशिखा के मने-मन खोजते रह गइल । गुलजारी बाई चिलमन के ओह पार बइठल रहली ।

पं० रामनारायण मिसिर के पाँव छूके बड़ा उछाह में विद्याधरी बाई ठुमरी गवली— फुलगेनवाँ ना मारो राजा, लागत करेजवा में चोट !' ठुमरी के भाव-तान, एक-एक मुरकी पर, साँप लेखा दिल पर लोटा जाय ! फेर गवली दोसर ठुमरी, फेर दादरा, आ फेर गवली टप्पा । श्रोतागण एह धरती से उठके आनन्द लोक में विचरण करत रहले ।

रामनारायण मिसिर कहले— "विद्याधरी ! तूँ त हऊ महफिल के पटरानी । तोहरा गीत के वहार के का कहे के बा । बाकिर हमार मन बा जे ई एगो लइका हमरा सँगे आइल बा, एकर एगो गीत तूँ हूँ सुन लेतू !" विद्याधरी बाई उठके पंडित जी के लगे अइली आ पाँव छूके मुस्कात बोलली— "उस्ताद जी ! अपने के हुकुम सिर माथे । बाकिर विद्याधरी के गवला का बाद केहू गावे के हिम्मत त ना करे !"

पंडित जी हँसत बोलले— "आरे विद्याधरी! ई लइकवा देहात से नू आइल बा । एह से तोहरो गवला का बाद ई गा लीही । सुनऽ त सही!"

गुरु के आज्ञा पाके महेन्दर मिसिर गुरु के पाँव छुअले आ तम्बूरा उठा लिहले । गीत शुरू भइल— जाँहूँ हम जनिती अइहें रामजी पहुनवाँ त बिहने सबेरे घरवा अइती हो लाल .... । पूर्वी के दरदीला सुर पूरा महफिल के झकझोर देलस । बाबू हलिवन्त सहाय के आँख से झर-झर लोर झरत रहे । विद्याधरी अवाक् चुप । हवेली के चिलमन तनी उठ गइल रहे आ एक जोड़ी आँख जोन्ही अइसन झक-झक झलकत रहे !

विद्याधरी उठली आ उस्ताद पं० रामनारायण मिसिर के पाँव छू के भीतर चल देली । महफिल उड़स गइल । सभे बाहर निकले लागल । महेन्दर मिसिर सबका पाछे रह गइले । अबहीं ऊ दरवाजा का पास पहुँचल रहले, तले पलटुआ आके रोकलस । महेन्दर

www.bhojpurisahityangan.com

मिस़िर अचरज से देखत रह गइले । गुलजारीबाई आँख में डब-डब लोर लेले आके खड़ा हो गइल बाड़ी । महेन्दर मिस़िर नीचे मुड़ी झुका के अँगुठा से जमीन कुरेदे लगले । गुलजारी बाई महेन्दर मिसिर के हाथ में एगो पुड़िया देत बोलली– "मिसिर जी ! हम अपने के गीत पर स्वर्ग के सुख पा लिहनीं ! हम अब एह लायक कहाँ बानीं कि अपने के कुछ दे सकीं ! ई एगो छोट तोहफा बा । हमार विनती बा कि एकरा के सम्हार के राखब !"

आ गुलजारीबाई चिलमन के भीतर चल गइली । महेन्दर मिसिर पुड़िया लेले बाहर निकलले । उनकर पूरा देह पसेना से नहा चुकल रहे । उजरकी कोठी के मेहमान वाला कमरा में आके चउकी पर बइठ गइले । बड़ी देर ले हाथ में कागज के पुड़िया स्थिर पड़ल रह गइल । जब चित्त कुछ शान्त भइल त पुड़िया खोलले । हे भगवान ! ई का ? ई त गुलजारीबाई के नथिया ह !

●

www.bhojpurisahityangan.com

9.

बाबू हलिवन्त सहाय पकड़ी से लौटले त धूरा से पूरा सना गइल रहले । देह पर के रेशमी अँगरखा पसेना आ धूरा से चीकट हो गइल रहे । चेहरा सूखल आ आँख लाल रहे । आवते पलँग पर गिर गइले । बड़ी देर के बाद उठले । पलटुआ गोसलखाना में पानी भर देले रहे । नहा धो के कुछ ताजा भइले । खानसामा खाना लगा चुकल रहे । डाइनिंग रूम में जाके लौट अइले– "पलटुआ! आज हम खाली दही खाएब रे !"

पलटुआ मुँह ताकत खड़ा रहे । दउड़ के दही ले आइल । बावर्ची के बोलाहट भइल । युसुफ मियाँ बावर्ची हाथ जोड़ले आके खड़ा हो गइले । "युसुफ मियाँ ! तूहूँ अब बूढ़ हो गइलऽ हो । रिवेल साहेब के आ हमार खिदमत करत तोहार पूरा जिनगी सिरा गइल, बाकिर ना रिवेल साहेब तहरा खातिर कुछ कर सकले, ना हमहीं कुछ कर सकनीं ।" थोड़की देर चुप रहले बाबू हलिवन्त सहाय । युसुफ मियाँ सकता में चुप । 'सुनऽ! हम चाहत बानीं जे तूँ अब आराम करऽ । आ ओह परवरदिगार के इयाद करऽ । कुछ एकरो खातिर समय चाहीं नू ! तोहरा कवनो मन के साध बाकी होखे त ऊहो बोल द; हम ओकरा के पूरा करब ।" — बोलत-बोलत चुपा गइले बाबू हलिवन्त सहाय ।

हलिवन्त सहाय ऊपर आँख क के हवा में कुछ देखले रहले । अबहीं काल्हे त परलोकवासी भइले ह बालमित्र गायनाचार्य पं० रामनारायण मिसिर । मिसिर भाई के कवनो साध, कवनो इच्छा पूरा ना कर सकले बाबू हलिवन्त सहाय । मिसिर भाई के इच्छा स्वार्थ के लेके ना रहे । जवन भी इच्छा रहे, ऊ हलिवन्त सहाय के सुख-समृद्धि आ इज्जत-प्रतिष्ठा के लेके रहे । बाकिर अपना जवानी के ऐंठ आ धन के घमण्ड में मिसिर भाई के बूझ ना सकल रहले हलिवन्त सहाय । आ कटु वचन से दुखी क के घर से निकाल देले रहले । आ ओकरा बाद, ओह लम्बा पन्दरह बरिस के दू देह एक प्राण अइसन रहेवाला दूनो दोस्त अलगा-अलगा एगो अइसन आँच में दहकत बितवलन, जवना के इरिखो ना कहल जा सके आ पश्चातापो ना कहल जा सके । ऊ पन्दरह बरिस बड़ा दुख में बीतल रहे हलिवन्त सहाय के । आ पाँच बरिस पहिले जब गुलजारीबाई के उठवा मँगवले बाबू हलिवन्त सहाय, त आपन कुल इरिखा धो के दउड़ल आइल रहले पं० रामनारायण मिसिर । एकन्ता में बोलल रहले कि "ए हलिवन्त ! इहे दिनवाँ बचावे खातिर नू हम तहरा

www.bhojpurisahityangan.com

के ओह घड़ी बोलले रहीं; आ तूँ झगड़ो कइले रहलऽ! अब जे कइलऽ से कइलऽ! अबहियों से चेतऽ ! जवना मेहरारू के घर में डाल लेलऽ ओकर इज्जत मत उघारऽ !" बाबू हलिवन्त सहाय हँस के बोलले रहस– "ए मिसिर भाई ! ई हमार बियही ह का?" आ तब मिसिर भाई ठठा के हँसल रहले– "त का मुजफ्फरपुर के ढेलवा रंडी ह ! आरे, ऊ त मर गइल सराय में ओही रात के । ई त बाबू हलिवन्त सहाय के मेहरारू ह, बियही होखे चाहे रखनी !" आ ओह दिन के बाद फेर गुलजारी बाई चिलमन के बाहर महफिल में ना बइठली ।

युसुफ मियाँ बाबू हलिवन्त सहाय के पाँव ध के रोअत रहले– "सरकार! हमरा के निकालीं मत ! हम मर जाएब ! रउआ के छोड़ के आउर हमार के बा? मेहरारू मर गइली आ लड़िको मर गइल । हम कहाँ जाएब सरकार ! हमरा के निकालीं मत !"

बाबू हलिवन्त सहाय वास्तविक दुनिया में लौट अइले– "आरे युसुफ मियाँ ! रोअत काहे बाडऽ । हम तोहरा के निकालेब हो ? तूँ रिवेल साहेब के बहाल कइल आदमी हउअ ! हम तोहरा के निकालब ? हम त कहत बानी कि अब तूँ बूढ़ भइलऽ । अब तोहरा कुछ समय चाहीं जेमे परवरदिगार के इयाद कर सकऽ !" बाबू हलिवन्त सहाय के भीतर हूक अइसन उठल । युसुफ मियाँ अइसन हमरो के बा ?

गोड़ ना छोड़ले युसुफ मियाँ । बाबू हलिवन्त सहाय साँस छोड़त बोलले– "युसुफ मियाँ ! बात ई बा कि मिसिर भाई अब एह दुनिया में नइखीं । काल्ह साँझी का बेरा उहाँ का ई चोला छोड़ दिहनीं । अन्तिम बेर उहाँ के हमार हाथ अपना हाथ में लेले रहीं । बुझाइल जे उहाँ का हमरा से कुछुओ ना कहके सबकुछ कह देले बानीं । अब बुझाता जे हमरो समय अब निगिचाइले बा । अब हमरो राम में चित्त लगावे के चाहीं ।"

गोड़ छोड़ के उठ गइले युसुफ मियाँ । आँख के लोर पोंछ लिहले । धीरे-धीरे जाये लगले । बुद्बुदात बोलले– "बूझ गइनी सरकार ! सब बूझ गइनी । मिसिर बाबा हमार छूअल कबहूँ ना खइनीं, बाकिर बराबर बोलत रहनीं कि युसुफ ! साहेब के ठीक से खियावऽ ! अब हमरा बुझा गइल सरकार ! ऊहे होई ।" युसुफ मियाँ चल गइले आ बाबू हलिवन्त सहाय उनका के देखत रह गइले ।

पलटुआ मुँह-आँख-कान बन्द कइले देखलस कि पाँच बरिस पहिले साहेब जइसे शराब पीयल बन्द कर दिहनीं ओसहीं कलियो खाइल बन्द हो गइल । अब साहेब के खाना युसुफ मियाँ के बाबर्चीखाना से ना, तिवारी जी के रसोई घर से आवे लागल । युसुफ मियाँ आके बाबर्चीखाना खोलस, कुछ देर बइठस, आ ओकरा बाद तिवारी जी के रसोईघर से अपना सनहक में खाना परोसवा लेस आ अपना कोठरी में आ जास । एक दिन साहेब बोलल रहनी कि "यूसुफ मियाँ के तकलीफ ना होखे पलटुआ ! इनका खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

कलिया ले आ दिहल करिहे ।" बाकिर युसुफ मियाँ साहेबे लेखा कलिया खाइल बन्द क दिहले । उनको पर का ई बुढ़ापा सवार हो गइल रहे ! आ ठीक युसुफ मियाँ पर बुढ़ापा सवार हो गइल रहे । एक दिन नमाज पढ़े बइठले त बइठले रह गइले । बड़ी देर बाद, पलटुआ उनका के डेरात-डेरात छुअलस त उनकर मुर्दा देह ढिमिला गइल । साहेब के आँख में ओह दिन लोर भर आइल रहे आ उहाँ के ओह दिन खाना ना खइले रहीं ।

पलटुआ कुछ दिन से एह बात पर अचरज करत रहे कि लाल कोठी से महफिली वहार धीरे-धीरे काहे त उजड़ रहल बा । विद्याधरी, केसर बाई, जानकी बाई, रोशनआरा, आ जाने के के आइल-गइल, कबहीं लाल कोठी पर आ कबहीं उजरकी कोठी पर; आ फेर खाली उजरकी कोठी पर आ आ के लौट गइल । महफिल जमबो कइल त उजरकिए कोठी पर, लाल कोठी पर ना । फेर, ऊहो कम होखे लागल । रोज गुलजारी बाई पालकी गाड़ी में बइठ के आवस । साथ में उनकर लँउड़ी जिरिया आवे । गुलजारी बाई बाबू हलिवन्त सहाय के साथे बइठस, गीत सुनावस, आ फेर रात में अपना लाल कोठी पर लौट जास । रजिस्ट्रार साहेब आवस, कुछ देर गप्प-सड़ाका करस आ फेर ऊहो लौट जास । पलटुआ के अब साहेब से डर लागे लागल । साहेब पूजाघर में घंटन बइठल रह जात रहीं । रात में देर ले नींद ना आवे । बाकिर दिन में ऊहे मुस्तैदी, ऊहे कामधाम के सिलसिला बनल रहे ।

पलटुआ ना समझ सकल रहे कि बाईजी लोग के सिलसिला धीरे धीरे काहे बन्द हो रहल बा, आ ओकरा बदला में एक से एक गवैया-बजवैया आ रहल बाड़े— कबहीं नसीर खाँ बीनकार, कबहीं भागवत महाराज, कबहीं लोचन प्रसाद, आ जाने के के । मिसिर बाबा त बरोबरे आईं । महफिल त जमबे करे, बाकिर साहेब के अब भजन जादे नीक लागे । पालकीगाड़ी में चढ़के गुलजारी बाई आवस । उनका संगे उनकर लँउड़ी जिरियो आवे । जिरिया के उमिर उठान के रहे । ओकरा भजन तनिको नीक ना लागे आ ऊ मुँह बिजका के केनियों चल देव । पलटुआ अइसने भजन के इन्तजारी में रहे !

मिसिर बाबा के संगे उहाँ के चेला महेन्दर मिसिर आवस ! महेन्दर मिसिर के गवनई पर लोग मचल-मचल जाय । महेन्दर मिसिर के एगो गीत सबका जबान पर चढ़ गइल रहे— मथवा मिसत में लगले हाथ के रे झिटिकिया बालम, हेराइ रे गइले ना, मोरा नाक के रे लवंगिया बालम हेराइ रे गइले ना । महेन्दर मिसिर के एह गीत पर सब लोग झूम-झूम उठे, बाकिर जिरिया आ पलटुआ अवाक होके देखत रह जा स कि गुलजारी बाई आँख बन्द क के देवाल के सहारा ले लेत बाड़ी ।

बाकिर इहो सिलसिला ढेर दिन ना चलल । बाबू हलिवन्त सहाय के जिगरी दोस्त पं॰ रामनारायण मिसिर परलोक सिधार गइनीं । मरे के बेरा उहाँ के समाद पाके बाबू

www.bhojpurisahityangan.com

हलिवन्त सहाय उनका गाँवें गइल रहले, आ उहाँ से विराग ले ले छपरा लौट आइल रहले ।

बाबू हलिवन्त सहाय कुछ-कुछ बीमार रहे लगले । गुलजारी बाई उनका सेवा में जुट गइली । कुछ समय के कारन आ कुछ गुलजारीबाई के सेवा-सम्हार का वजह से बाबू हलिवन्त सहाय के स्वास्थ्य में कुछ सुधार आइल त ऊ गुलजारीबाई के साथे लेके रिविलगंज के कोठी पर चल गइले । रिविलगंज में बाबू हलिवन्त सहाय के बचपन बीतल रहे । ऊ जमीन इनका तन में फेर से कुछ उमंग भरलस । रिविलगंज में बाबू हलिवन्त सहाय रोज रिविल साहेब के समाधि पर जाके घंटन बइठस । एक दिन उनका बुझाइल जइसे रिविल साहेब अपना समाधि से निकल के खड़ा हो गइल बाड़ें आ हाथ फइला के कह रहल बाड़े– "हलिवन्त ! दुनिया बहुत बड़ बा । गड़ही के पानी लेखा सड़ऽ मत ! तनी फइलऽ ।" हलिवन्त सहाय के तन्द्रा टूट गइल । समाधि पर सिर टेक दिहले– "पिता रिविल साहेब ! अपने पहिले काहें ना ई बात बतवनीं ? हम त अब सड़ाँध के आखिरी दशा में पहुँच चुकल बानीं ! अब का हो सकत बा !" बाबू हलिवन्त सहाय के बुझाइल जइसे रिविल साहेब अपना भारी आवाज में कह रहल बाड़ें– "हलिवन्त ! पहिले-पीछे कुछुओ ना ह ! सब समय सही समय ह ! " बाबू हलिवन्त सहाय जइसे सूतल से जाग गइले । ओही दिने ऊ छपरा लौट अइले ।

छपरा के कोठी पर महेन्दर मिसिर आइल रहले । गुरु के मउअत के बाद कुछ हतप्रभ हो गइल रहले महेन्दर मिसिर । देहो सूख गइल रहे । गुरु कहले रहले कि "महेन्दर, कवनो जरूरत पड़ला पर हलिवन्त सहाय किहाँ चल जइह ।" बाकिर गुरु के मरला का बाद, कुछ घबड़ाइल-घबड़ाइल आइल रहले महेन्दर मिसिर । ई पहिला मोका रहे जब ऊ बाबू हलिवन्त सहाय किहाँ अकेले आइल रहले ।

गाड़ी से उतरते महेन्दर मिसिर पर नजर पड़ल बाबू हलिवन्त सहाय के । गुलजारियो बाई देखली आ चुपचाप हवेली के भीतर चल गइली ।

ओही दिने साँझ से रामायण के कथा कहे के शुरू कइले पं० महेन्दर मिसिर, उजरकी कोठी के सहन में । पहिला बेर सबका खातिर उजरकी कोठी के बड़का फाटक खुलल । रामायण के प्रसंग पर सुन्दर-सुन्दर गीतन के रचना क के गावस पं० महेन्दर मिसिर । जनता झूम-झूम उठे । आँख से लोर बह चले बाबू हलिवन्त सहाय के ।

कथा में फुलवारी-लीला के प्रसंग आइल । महेन्दर मिसिर गावत रहले– जनितीं जो होइहें सखिया सिया से बियहवा त हीया भरी कोहबर रचइतीं हो लाल ! रस में सभे

www.bhojpurisahityangan.com

डूब चलल रहे ! बाबू हलिवन्त सहाय के बुझाइल जइसे रिवेल साहेब पुकारत होखस ! ऊ मुग्ध श्रोता समुदाय का बीच से उठके पूजा घर का ओर चलले, जहवाँ रिविल साहेब के तस्वीर रखल रहे ।

पूजाघर के दरवाजा भिड़कल रहे । खोलले त दीया के मद्धिम रोशनी में दूगो छाया काँप गइल । बाबू हलिवन्त सहाय ठिठक गइले । मिसिर जी के गीत पूरा उठान पर रहे .... त हींया भरी कोहबर रचइतीं हो लाल ! आरे, ई त पलटुआ आ जिरिया हउअन स ! बाबू हलिवन्त सहाय वापस दू डेग हट गइले । फेर, पूजाघर के दरवाजा खींच के बन्द क दिहले आ जंजीर चढ़ा दिहले । लौट के अपना सूते के कमरा में गइले । सिरहाना से चाभी लेके तिजोरी खोलले आ रुपया के एगो तोड़ा उठा लिहले । तिजोरी से उनका मेहरारू के मँगटीका झन दे गिरल, फेर कंगना गिरल, हार गिरल, कनफूल गिरल । सब उठा लिहले बाबू हलिवन्त सहाय । तले नजर पड़ल, तिजोरी के एगो खाना में उनका मेहरारू के सिन्होरा रखल रहे । ऊहो उठा लिहले । सबके अपना चादर के खूँट में धइले आ खूँटी पर से बन्दूक उतार लिहले । महेन्दर मिसिर के गाना चलत रहे– त हीया भरी कोहबर रचइतीं हो लाल !

दरवाजा खोलले त पलटुआ आ जिरिया थर-थर काँपत रहले स । बाबू हलिवन्त सहाय डपट के पलटुआ से कहले– "पलटुआ ! सिन्होरा खोल आ जिरिया के माँग टीक !" पलटुआ चुपचाप खड़ा रहे । बाबू हलिवन्त सहाय बन्दूक उठा लिहले– "कहत बानीं से कर ना त ....!"

काँपत हाथे पलटुआ सिन्होरा खोललस आ जिरिया के माँग टीक दिहलस ! गीत चलत रहे – जनितीं जो होइहें सखिया सिया से वियहवा .....!"

"जिरिया ! सब गहना पेन्ह ।"

जिरिया चुप ।

"कहत बानी, गहना पेन्ह ।"

जिरिया गहना पेन्हलस !

"पलटुआ ! रिवेल बाबा के आगा किरिया खो कि जिरिया के ना छोड़बे!"

पलटुआ रिवेल साहेब के तस्वीर के आगे झुक गइल !

"जिरिया ! तेंहूँ किरिया खो कि तेंहूँ पलटुआ का सँगे ईमानदार रहबे !"

जिरिया रिवेल साहेब के तस्वीर का आगे झुक गइल रहे !

बाबू हलिवन्त सहाय रुपया के तोड़ा पलटुआ के हाथ में धरवले– "पलटुआ ! अब तें जिरिया के लेके अबहिएँ भाग जो, गाँवें शीतलपुर । एह रुपया के खेत कीन लीहे !"

www.bhojpurisahityangan.com

पलटुआ मूड़ी झुकवले चुप खड़ा रहे । बाबू हलिवन्त सहाय गरजले– "भाग ससुरा, ना त गोली मार देब ! अबहीं भाग, ना त हमरे लेखा बेअसरा हो जइबे !"

पलटुआ फुसफुसाइल– "मालिक ! रउआ के छोड़ के .... !"

बाबू हलिवन्त सहाय गरजले– "भाग ! अबहीं भाग ! एही फुलवारी-लीला के जोग में भाग, ना त ई भुतहा कोठी हमरे लेखा तोरो के लील जाई !" पलटुआ काँप गइल !

आ दूनो चुपचाप कोठी से निकल के धीरे-धीरे आगे बढ़ गइले स । बाबू हलिवन्त सहाय इशारा से बुलकना के बोलवले– "बुलकना ! दूनों के शीतलपुर के गोंएड़ा ले चहुँपा आव ! केहू जाने ना पावे !"

●

www.bhojpurisahityangan.com

10.

कथा खतम भइल त जिरिया के खोज शुरू भइल । गुलजारी बाई पुकरली– "जिरिया ! जिरिया रे !" बाकिर कहीं से कवनो जवाब ना आइल । सभे चल गइल रहे । बहुत देर ले इन्तजारी क के गुलजारी बाई लाल कोठी गइली । उहँवा जिरिया ना भेंटाइल त फेर उजरकी कोठी ले भागल अइली, फेर लाल कोठी ले भागल गइली, बाकिर जिरिया ना मिलल । पागल लेखा जिरिया के खोज शुरू कइली गुलजारी बाई ।

बाबू हलिवन्त सहाय मुस्कुरात जाके अपना कमरा में सूत गइले । जिरिया के खोज में पौ फाटे लागल रहे । गुलजारीबाई अइली आ झकझोर के जगवली बाबू हलिवन्त सहाय के– "ए जी ! जिरिया त मिलते नइखे ।"

बाबू हलिवन्त सहाय जम्हाई लेत मुस्कइले– हूँ ! जिरिया नइखे मिलत ? त छोड़ऽ जिरिया के गुलजारी ! ऊ अब तोहरा कहाँ भेटाई ! पाँख जामल चिरई लेखा उड़ गइल होई ! आ गुलजारी बाई, ई काहे भुला जात बाड़ू कि ऊ रंडी के लँउड़ी ह !"

"चुप !" –कड़कत आवाज में डपटली गुलजारीबाई– "लाज नइखे लागत, एतना दिन ले परदा में राख के रंडी बोलत ! हम अब ढेलाबाई ना हँई । हम हँई गुलजारी देवी । ई मत भुलाइब !"

बाबू हलिवन्त सहाय के सनसनाहट लागल । इहे बात त मिसिरो भाई कहले रहले, बाकिर अपना शान के अकड़ में ना बूझ सकल रहले बाबू हलिवन्त सहाय । पं॰ रामनारायण मिसिर के बात बाबू हलिवन्त सहाय के कान में अबकी गूँजे लागल– "हलिवन्त ! ढेलाबाई त सराय में ओही दिने मर गइली हो; ई त गुलजारी देवी हई – तोहार मेहरारू, बियही होखस भा रखनी होखस, बाड़ी त तोहार मेहरारुए नू !"

मिसिर भाई के बात ओह घड़ी बाबू हलिवन्त सहाय के हँसी अइसन लागल रहे आ आज ओह बात के पूरे पाँच बरिस के बाद, उहे बात सच्चाई के साथ उजागिर हो रहल बा । जिनिगी में अपना शान का आगा सब बात के बड़ा छोट बूझत रहल बाड़े बाबू हलिवन्त सहाय । सब सच्चाई के अपना मन मोताबिक मोड़ देत रहल बाड़े । बाकिर मिसिर भाई के ई बात काहे त मुड़ नइखे पावत ! त का हर जगह स्वतन्त्र रहे वाला बाबू हलिवन्त सहाय बन्हात जा रहल बाड़ें ! ना । उनका अपना गुरु रिविल साहेब लेखा हर

www.bhojpurisahityangan.com

बन्धन से मुक्त रहहीं के बा! ऊ एह उजाड़ खंडहर के आपन बूझ के उल्लू लेखा बइठल नइखन रह सकत ।

बाबू हलिवन्त सहाय के रिवेल साहेब के ऊ आखिरी समय इयाद पड़े लागल । रिवेल साहेब ! अफीम कोठी के मालिक रिवेल साहेब ! बिलायत से शान-शौकत का साथे आइल रिवेल साहेब ! ऊ रिवेल साहेब अपना आखिरी समय में कइसे सबकुछ से अलग हो गइल रहले । कइसे एह उजाड़ खंडहर पर बाबू हलिवन्त सहाय अइसन उल्लू के बइठा के अपने एह से मुक्ती पा लेले रहले ।

आखिरी समय में रिवेल साहेब के देह पर गेरुआ चढ़ गइल रहे । सब सुख-सुविधा के त्याग के सब राग-रंग से अलगा-थलगा, दवाई के बक्सा हाथ में लेले, पूरा सन्त हो गइल रहले रिवेल साहेब । दुखी जन के सेवा करत ठीक सन्त जेवियर अइसन लागस रिवेल साहेब । जवार भर में घूमस-फिरस । जहें रात हो जाय ऊहें टिक जास, जहें भूख लागे ऊहें माँग के खा लेस । एक बेर बाबू हलिवन्त सहाय कहले रहले— "साहेब ! अब रउआ हमरे संगे रहीं, रउआ बहुत तकलीफ हो रहल बा ।" साहेब हँसल रहले— "हलिवन्त ! सुख त अबगे मिल रहल बा ! एकरा पहिले बड़ा दुख में कटले बानीं एतना लम्बा जिनिगी ! आ अब एह बुढ़ापा में बुझाइल बा जे जवार के सब घर अपने घर ह आ सभे हमार अपने सन्तान ह !"

आ ऊहे रिवेल साहेब कोठी पर ना मरले, गाँगों-पड़ाइन के स्थान पर मरले । जवार भर के लोग झुक आइल रहे । सबका के प्रणाम करत आ आशीर्वाद देत मरल रहले रिवेल साहेब । ओह घड़ी बाबू हलिवन्त सहाय छपरा रहले । खबर मिलल त दउड़ल अइले । बड़का जुलूस ढोल-झाल पर रामायण गावत आ कीर्तन करत अर्थी का पाछे-पाछे चलल रहे । अर्थी एक बेर कोठी पर धराइल, आ फेर सरजू का किनारे गइल । मेम साहेब के समाधि का बगल में कब्र खोदाइल । बाबू हलिवन्त सहाय छपरा के गिरजाघर से पादरी साहेब के बोलावे के चहले, बाकिर ई ना हो सकल । 'रिवेल बाबा के जय' के जयकार का साथे लोग उनका के समाधि में पहुँचा दिहल । ठीक ओसहीं, जइसे कवनो साधु-महात्मा के समाधि दिआला । आ फेर कोठी पर भण्डारा भइल रहे ।

आ फेर बाबू हलिवन्त सहाय के दिमाग में पं० रामनारायण मिसिर के आखिरी समय के दृश्य चक्कर काट गइल । रामनारायण मिसिर मरे का बेर बाबू हलिवन्त सहाय के हाथ धइले रहले । जवना घड़ी हलिवन्त सहाय पहुँचले मिसिर जी के बोली बन्द हो गइल रहे । मिसिर जी खाली हलिवन्त सहाय के हाथ धइले टुकुर-टुकुर तकले रहस । कुछुओ बोल ना सकल रहले । बाबू हलिवन्त सहाय के बुझाइल रहे जइसे बहुत कुछ समझा गइल होखस पं० रामनारायण मिसिर । जवन कुछ समझावे खातिर केतना बोलले,

www.bhojpurisahityangan.com

कतना झगड़ा कइले, पन्दरह बरिस ले मुँह फुलवले, फेर अपने से मनले, गीत गवले, भाषण दिहले, बाकिर हलिवन्त सहाय के समझा ना पवले रहले, ऊहे बात, अंतिम बेर खाली एगो स्पर्श से कइसे समझा गइले !

गुलजारीबाई सुबुकत बोलली— "का सोचत बानी जी ! खोजवाईं ना जिरिया के!"

बाबू हलिवन्त सहाय बिछावन पर उठ के बइठ गइले, मुस्कुरइले— "मत घवड़ा गुलजारी । अबहिएँ खोजवावत बानीं पलटुआ से ।" फेर मुस्कुराते जोर से पुकरले— "पलटुआ ।"

पलटुआ होखे तब नू बोले । फेर जोर से पुकरले— "पलटुआ रे !" कवनो जवाब आवे के सवाले ना रहे ! गुलजारी बाई का ओर देखत बाबू हलिवन्त सहाय हँसत बोलले— "जा, अब आराम करऽ गुलजारी ! तोहरा अब जिरिया ना मिली ! भरल सभा से उठा ले गइल बा पलटुआ तोहरा जिरिया के !"

गुलजारी बाई तिरछा नजर से बाबू हलिवन्त सहाय के देखली । आँख पोंछत मुस्कुरइली, आ फेर चुप हो गइली । फेर ना जिरिया के खोज भइल, ना पलटुआ के ।

बाकिर एह घटना का बाद बाबू हलिवन्त सहाय के व्यस्तता बहुत बढ़ गइल । दिन-दिन भर मनेजर मुंशी शिवधारी लाल का संगे बइठ के हिसाब-किताब करस । कबहीं-कबहीं दूनू जाना पालकीगाड़ी पर चढ़के कतहीं जाय लोग । साँझ का बेरा साहेब आपन छड़ी लेले टहले निकलस, एकदम अकेले । रात का बेरा गुलजारीबाई से भजन सुनस आ फेर गप्प करे लागस । जमींदारी के एक से एक पेचीदा बात आवे गप्प में त गुलजारी बाई घवड़ा जास— "बाप रे ! हमार माथा दुखा जात बा ।"

"हमरो माथा दुखात रहे गुलजारी ! बाकिर एक बेर सध गइल त बड़ा रस मिलल" — बाबू हलिवन्त सहाय हँसत कहले रहले । आ फेर बात बदल देले । फेर बात घूम-फिर के जर-जायदाद पर उतर आइल । आ फेर कागज-पत्तर सामने आवे लागल । गुलजारीबाई के बहुत उलझन बुझाइल आ ऊ फेर बोलल रहली — "ई हमरा ना बुझाई जी ! हमार मन घवड़ाए लागत बा !"

बाबू हलिवन्त सहाय हँसल रहले— " गुलजारी ! बुझहीं के पड़ी ! मुंशी शिवधारी लाल बुढ़ा गइले हो । उनका से पूरा काम नइखे सम्हरत आ हमार आपन मोख्तारियो त बा !"

गुलजारीबाई के धक् से लागल । बाबू हलिवन्त सहाय के मूड़ी के ऊजर होत केस उनका मन में उथल-पुथल मचावे लागल । उनका बुझाइल जइसे मुंशी शिवधारी लाल ना, बाबू हलिवन्त सहाय बुढ़ा गइल बाड़े । आ उनका आगे अन्हार अइसन बुझाइल, बाकिर अपना के जब्त करत ऊ हँसे के नाटक कइली ।

www.bhojpurisahityangan.com

कुछ दिन ई सिलसिला चलल। पलटुआ के ना रहला पर, बाबू हलिवन्त सहाय के पूरा जिम्मेदारी गुलजारीबाई उठा लेले रहली। बाकिर बाबू हलिवन्त सहाय के आपन जरूरते बहुत कम हो गइल रहे। बेसी काम त जर-जायदाद आ जमींदारिए के रहे। एह से ओह काम में गुलजारी के मदत करहीं के पड़े। फेर, गुलजारीबाई के बुझाइल जइसे ईहो काम समेटाइल जा रहल बा। आ एक दिन मुंशी शिवधारी लाल के ऊपर सब भार डाल के बाबू हलिवन्त सहाय बहुत-बहुत थकावट महसूस कइले। ऊ आराम करे खातिर रिविलगंज जाये के तइयारी करे लगले। साथे गुलजारियोबाई जाए के चहली त बाबू हलिवन्त सहाय बड़ा जोर से हँसल रहले– "त हम आराम का करब गुलजारी ! फेर त ऊहे घर-दुआर के चिन्ता कपार पर चढ़ल रही !"

बाबू हलिवन्त सहाय के कवनो बात काटे के ताकत केहू में ना रहे। सभे चुपचाप तमाशा देखत रहल कि अबकी बाबू हलिवन्त सहाय एकदम अकेले रिविलगंज वाला कोठी पर जा रहल बाड़े। केहू नोकर-चाकर सँगे नइखे जात।

पालकीगाड़ी पर चढ़े के बेर सबका से मिलले हलिवन्त सहाय। गाड़ी चलल त बुलकना आपन बड़की भाला लेले पीछे-पीछे दउडल। फाटक से गाड़ी बाहर निकले लागल त बुलकना के देखके बोलले — "अच्छा ठीक बा ! चल तें !" गाड़ी फाटक से बाहर निकल के एक छन खातिर खड़ा भइल। फाटक तक आइल लोग ओनिए ताकत रहे। पालकी गाड़ी से मुड़ी निकाल के बाबू हलिवन्त सहाय एक बेर सबका ओर देखले। फेर चारो ओर नजर घुमवले। आ ओकरा बाद गाड़ी दउड़ चलल। पीछा के पौदान पर आपन भाला लेले बुलकना खड़ा हो गइल रहे।

रिविलगंज कोठी के फाटके पर से पालकीगाड़ी ओही दिने लौट आइल रहे। दोसरा दिने बुलकना लौटल। आँख में डभ-डभ लोर आ हाथ में कागज के एगो पुलिन्दा लेले गुलजारी बाई का आगा खड़ा हो गइल। गुलजारी के दिल आशंका से दहल गइल। ऊ पुछली– "आ साहेब रे बुलकना ?"

बुलकना एगो चिट्ठी आ कागज के पुलिन्दा बढ़ा के मूड़ी झुकवले चुपचाप खड़ा रह गइल ! गुलजारीबाई काँपत हाथे चिट्ठी खोलली। चिट्ठी बाबू हलिवन्त सहाय के लिखल रहे। मन के तरह-तरह के आशंका लेले ऊ चिट्ठी पढ़े लगली–

"सोसतीश्री गुलजारी के लिखीं हलिवन्त सहाय के असीस ! गुरु आ पिता रिविल साहेब के कोठी पर आके मन के बड़ा सुख मिलल ह ! इहाँ आके देखनी कि साहेब के दवाईवाला बक्सा उनका टेबुल पर ढेर दिन से पड़ल-पड़ल गर्दा से तोपा गइल बा ! ओकरा के हम साफ कर लिहनीं !

अबतक हम अपने में जरत-मरत रहल बानीं ! अपना अहम् के दुख जिनगी भर

www.bhojpurisahityangan.com

भोगत रहल बानीं !

अब बुझाता जे हमरो भाग्य में कुछ सुख जरूरे बा ! मिसिर भाई अपने मर के हमरा के एह अन्हार में बहुत-कुछ रास्ता देखा गइल रहले ! आ इहाँ अइला पर गुरू रिविल साहेब के धूर चढ़ल बक्सा सब कुछ उजागिर कर देले बा!

हम अपना जिनगी में केतना लड़ल बानीं! बाकिर हमार सब लड़ाई खाली अपने से भइल बा । आ लड़त-लड़त, आखिर में हम जीत गइल बानीं !

अपना पूरा जायदाद के हम दू हिस्सा में बाँट देले बानीं । एक हिस्सा लाल कोठी का साथे तोहरा खातिर बा, आ दोसरका हिस्सा उजरकी कोठी का साथे कुल-खानदान खातिर छोड़ देले बानीं । हम अपना हिस्सा में, पिता रिविल साहेब के दवाई वाला बक्सा पा चुकल बानीं ! आ ओह धरोहर का साथे हम मिसिर भाई के बतावल अपना राम के खोज में जा रहल बानीं ! हमार खोज मत करिहऽ !

मुंशी शिवधारी लाल जर-जायदाद के देखभाल कर दीहें । जरूरत पड़ला पर रजिस्ट्रार साहेब के मदत लीहऽ । जादे शुभ !"

चिट्ठी पढ़ के गुलजारीबाई गुम हो गइली । बुलकना मूड़ी झुकवले खड़ा रहे । कुछ देर के बाद गुलजारी बाई कुछ स्थिर भइली, त दनदनाइल भीतर गइली । रुपया के एगो मोटरी ले ले बाहर अइली आ बुलकना के हाथ में धरावत बोलली– "जो बुलकना, जो ! अब तोरो छुट्टी हो गइल । अब कहीं आउरू जा के कमो खो !"

बुलकना हाथ में रुपया के मोटरी लेले बड़ी देर ले मूड़ी झुकवले खड़ा रहे । फेर, डगमगात फाटक से बाहर निकल गइल ।

बुलकना के बिदा क के गुलजारीबाई उजरकी कोठी पर गइली । पूजाघर से रिविल साहेब के आ बइठका से बाबू हलिवन्त सहाय के तस्वीर उठा के अपना पास रख लेली, आ उजरकी कोठी में ताला बन्द कर देली, लालकोठी में लौट अइली ! उजरकी कोठी के दरवान के छोड़ के बाकी सब नोकरन के बोलवली । सभन का हाथ में रुपया धरावत गुलजारीबाई फफक पड़ली– "तोहरा लोग के बिदा करत बड़ा मोह लागत बा !"

सब नोकर पूरा स्थिति से वाकिफ हो चुकल रहले स । सभन के आँख से झर-झर लोर गिरत रहे ! बाकिर अब होइए का सकत रहे ! जब साहेब कोठी छोड़ दिहनीं त नोकर-चाकर केकरा आसरा पर रहऽ स! साहेब का साथे बितावल सुख के ऊ दिन खतम हो गइल रहे । सब उजरकी कोठी के हसरत से देखत अपना-अपना घरे चल गइलन स । मुंशी शिवधारी लाल अइले । झुर्री से चेहरा भरल रहे । बाकिर आँख में अबहियों चमक रहे । लम्बा शरीर एहू उमिर में तनल रहे । ठेहुना ले धोती, मारकीन के कुर्त्ता,

www.bhojpurisahityangan.com

दुपलिया टोपी आ कान्ह पर लाल अँगौछा । बड़ी देर ले बाबू हलिवन्त सहाय के चिट्ठी हाथ में लेके खड़ा के खड़ा रह गइले । मन में तूफान उठत रहे । बाबू हलिवन्त सहाय उनका से उमिर में केतना छोट रहले । जब ऊ रिविल साहेब के कोठी पर आइल रहले, ओह घरी उनकर जवानी समाप्ती पर रहे आ बाबू हलिवन्त सहाय के जवानी उठान पर । आइल रहले सब कुछ गँवा के, आ इहाँ उनका बाबू हलिवन्त सहाय के प्यार मिल गइल । ऊ एही प्यार पर अपना जिनगी के एक-एक दिन काटत आइल रहले । बड़ी देर के बाद आँख पोंछले, खँखार के गला साफ कइले आ बोलले– "बाबू हलिवन्त सहाय हमार बड़ा खियाल राखत रहले । जाहूँ के बेर, हमरा के ना भुलइले, ना त एह उमिर में हम कवना ओरी लगितीं ! बाईजी, हम राउर नोकरी कबूल करत बानी । रउआ मालिक आ हम नोकर । हम राउर धन सहेजब आ राउर हुकुम बजाएब ।"

गुलजारी बाई के आँख से झर-झर लोर गिरल ! ऊ कागज के पोलिन्दा मुंशी जी का हाथ में धरा दिहली – "ना मुंशी जी ! रउआ नोकर हम मालिक ना ! रउआ बाप, हम बेटी !"

मुंशी जी क मन में सन्न दे लागल । ऊ कागज के पोलिन्दा लेले खड़ा के खड़ा रह गइले । उनका मन के भीतर पूरा उथल-पुथल मचल रहे । दाँत से ओठ दबवले, ऊ कहीं भुलाइल रहले ।

राय लछुमन प्रसाद कचहरी से घरे लौटले । घरे आके जब सुनले त उनकर दिमाग झनझना गइल । उनका ई उमेद ना रहे । अइसे त ऊ बाबू हलिवन्त सहाय के मन के थोड़-थाड़ थाह पावत रहत रहले । उनका बराबर बुझात रहे जे बाबू हलिवन्त सहाय पर बुढापा हावी हो रहल बा । आ उनका इहो आशा बनत रहे कि बाबू हलिवन्त सहाय आपन वारिस लछुमने प्रसाद के बनइहें । उनका मन के भीतरी कोना में कहीं गुलजारियो बाई बइठल रहली । ई खबर मिलते ऊ उजरकी कोठी पर अइले । कोठी में ताला बन्द रहे । दरवान उनका के देखते फफक के रो पड़ल ।

लछुमन प्रसाद के पूरा देह खीसी धधकत रहे । ऊ लाल कोठी पर झटकल अइले । दुआरी पर लँउड़ी भेंटाइल । राय लछुमन प्रसाद के देखलस त दुआरी ध के खड़ा हो गइल । राय लछुमन प्रसाद रोबदार आवाज में बोलले– "सुन रे ! जो बाई जी के खबर कर !"

लँउड़ी भीतर गइल आ तुरन्ते लौट आइल– "हजूर ! मलकिनी पूजा पर बइठल बाड़ी । अबहीं देरी से उठिहें ।"

"हुँह ! मलकिनी ! आ ऊहो पूजा पर ! सत्तर चूहा खाय के बिलाई भइली भगतिन !" – राय लछुमन प्रसाद का भीतर बँवड़ेग घूमे लागल । ऊ बनबनाइल

www.bhojpurisahityangan.com

उहाँ से चलले । रास्ता भर तरह-तरह के योजना आ तरह-तरह के पैंतरा बनत आइल — "ढेलवा रंडी के मलिकाँव मिल गइल ! आ रात-दिन हलिवन्त सहाय का साथे-साथे छाया बनल रहे वाला लछुमन प्रसाद के का मिलल ? अच्छा । एह मलिकाँव में आग ना लगा देले लछुमन प्रसाद त असली कायथ ना !"

घरे पहुँचते एक्का कसाइल, आ ओह पर बइठ के राय लछुमन प्रसाद शीतलपुर चलले । कच्ची सड़क पर घोड़ा के धीमा चाल बड़ा अखरे राय लछुमन प्रसाद के, त एकवान के डांट देस, आ एकवान के चाबुक सट् से घोड़ा का पीठ पर बइठ जाय । मन में तरह-तरह के पैंतरा के अन्हड़ लेले, एक घड़ी रात गइल राय लछुमन प्रसाद शीतलपुर पहुँचले । रात् हलिवन्त सहाय के गोतिया-देयाद के जुटान भइल । खाना-पीना भइल । तरह-तरह के पैंतरा सोचाइल । आ घंटा भर रात रहते राय लछुमन प्रसाद छपरा वापस चल पड़ले । लाल कोठी का बगल से जब एक्का बढ़ल त ऊ अपना में मोंछ का भीतरे मुस्कुरइलें — "मलकिनी अब पूजे पर बइठिहन !"

बिहान भइला, दुपहर होत-होत, छपरा, उजरकी कोठी पर भीड़ लाग गइल । बाबू हलिवन्त सहाय के गोतिया हाजिर हो गइल रहे लोग । मुंशी शिवधारी लाल चाभी ले आके उजरकी कोठी खोल दिहले । सब कागज-पत्तर ले आके ध दिहले, आ हाथ जोड़ के बोलले — "अपने सभे साहेब के गोतिया हँईं । हम त उहाँ के नोकर रहनीं हँ । जब साहेब सब तियागं देनीं, त अब सबकुछ रउरे सभन के बा । मन भावे त हमरा के देखभाल करे खातिर नोकर राख लीं, ना त कवनो आउर इंतजाम कर लीं सभे । एह से बेसी हम का कह सकत बानीं ।"

एगो गोतिया बड़ा गरमइले — "ए मुंशी जी ! हमनी के मत सिखाईं ! अबले चाचा के मुड़त चल अइनीं, बाकिर अब हमनीं से रंग मत बान्ही ! रउआ त अधे जायदाद के कागज दे रहल बानी । बकियो आधा ले आईं, सुलहा मने, ना त ठीक ना पटी !"

मुंशी शिवधारी लाल बहुत नरमी से बोलले — "सरकार । बकिया आधा त साहेब गुलजारीबाई के दे गइल बानीं । ओकर कागज हम रउआ लोग के काहे दीं !"

"चाचा ओह रंडी के देनिहार के ? वारिस हमनीं का हँईं ।"

सुनते मुंशी शिवधारी लाल तन के खड़ा हो गइले — "बबुआ जी ! तनी जबान सम्हार के बोलीं !" — आ फेर सबका देखत-देखत उजरकी कोठी से बाहर निकल गइले । सभे एक-दोसरा के मुँह देखत रह गइल ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

11.

रात भइल त राय लछुमन प्रसाद के दालान में मंत्रणा होखे लागल । बाहर के दरवाजा बन्द क दिहल रहे । बाबू हलिवन्त सहाय के गोतिया लोग के उनका जर-जायदाद का बारे में कुछुओ थाह ना रहे । जिनगी-भर ऊ लोग कबहूँ सटहूँ ना पवले रहे । आ बाबू हलिवन्त सहाय के साहेबी ठाट-बाट आ रहन-सहन का चलते तनी दूरे-दूर रहबो कइल रहे । एक-ब-एक एतना धन देखके सबकर मन बउरा गइल रहे । सभे एह बात पर बौखलाइल रहे कि गुलजारीबाई एतना बड़ जायदाद कइसे पा जइहें ! सभे एह चिन्ता में परेशान रहे कि कइसे उनका के निकाल बाहर कइल जाय ! ऊ बाबू हलिवन्त सहाय के हइए के हई ! एगो रंडी के ओह धन पर हके का बा !

राय लछुमन प्रसाद मने-मन मुस्कुरात रहले । उनका हाथ में अइसन डोरी धरा गइल रहे जेसे ऊ सबका के नचावत रहिहें । उनका मन-प्रान के गुलजारीबाई झकझोर देले रही । आ उनका भीतर धन के लालच का साथे-साथे उनको के पावे के लालसा जोर मारत रहे । गुलजारीबाई का सँगहीं बाबू हलिवन्त सहाय के सब सम्पति पर ऊ आपने हक मानत रहले, बाकिर इहाँ त सब उलट-पुलट हो गइल रहे । गुलजारीबाई बड़की भारी जमींदारी का साथे एकदमे खुदसर हो गइल रहली आ बाकियो बाँचल जर-जायदाद उनका खातिर बेगाना हो गइल रहे । बाकिर लछुमनो प्रसाद असली कायथ हउअन ! एँहीं ग ना छोड़ दीहें !

गोतिया लोग राय लछुमन प्रसाद के बल पर छपरा आके डटल रहे । ओह लोग के आपन हालत कवनो अइसन ना रहे जे इहाँ आके डट सकित लोग । एह बात के लछुमन प्रसाद पूरा-पूरी बूझत रहले । उनका मन में एगो खाहिस रहे कि गुलजारीबाई उनका लगे शरणागत हो जास । एह से ऊ सब फसाद खड़ा क के अपना के पर्दे में रखे के चाहत रहले । एह से ऊ बोलले – "सुनीं सभे ! हम हँई सरकारी अफसर । हमरा रउआ लोग के धन का पचड़ा में ना पड़े के चाहीं । बाकिर बाबू हलिवन्त सहाय हमार केतना बड़का दोस्त रहले, ई रउआ सभे जानत बानीं । उनकर आधा धन एगो रंडी का हाथ में चल जाय, ई हमरा बर्दाश्त के बाहर बा । हँ, ई ठीक बा कि कुछ ओकरो परवरिश खातिर चाहीं । बाकिर, एकर मानी ई ना

www.bhojpurisahityangan.com

ह कि एगो पट्टीदार गोतिया रहस आ दोसर पट्टीदार रण्डी रहे । एही से हम रउआ लोग के साथ दे रहल बानीं । हम रउआ लोग के मदत हर जगह करब । हाकिम-हुक्काम किहाँ हम रउआ लोग खातिर पैरवियो करब । बाकिर हमार नाम कहीं खुले के ना चाहीं । आ एगो बात आउरू बा । सकिस्ता में पड़ के गुलजारियोबाई हमरा किहाँ दउड़-धूप करिहन, बाकिर रउआ सभे एह से घवड़ाइब मत । हम मन से रउए लोग के साथे रहब ।"

मुकदमा के तैयारी होखे लागल, आ मुकदमा ठोका गइल । मुकदमा खातिर राय लछुमन प्रसाद हलिवन्त सहाय के गोतिया लोगन के कर्जा देबे के शुरू कइले आ ऊपर से अपना के अलग-थलग देखावे के कोशिश करे लगले । मुकदमा के खबर सुन के गुलजारीबाई राय लछुमन प्रसाद के बोलवली । खबर पाके राय लछुमन अगरा गइले, बाकिर ऊपर से अपना के गम्भीर बनवले रखले । लाल कोठी पर पहुँचले त बड़ी खातिरदारी भइल, आ उनका बुझाइल जइसे उनकर योजना सफल हो रहल होखे । गुलजारीबाई अइली त बहुत घवड़ाइल-घबड़ाइल रहली । बुझाइल जइसे रो दीहें । देख के मने-मन बड़ा खुशी भइल राय लछुमन प्रसाद के । गुलजारीबाई बोलली — "राय साहेब ! का होई मुकदमा में ?"

लछुमन प्रसाद आपन चेहरा गम्भीर बनाके बोलले — "बाई जी ! मुकदमा त मुकद[illegible] ह ! एह में का होई, ई अबहीं कइसे कहल जा सकत बा ! बाकिर रउआ चिन्ता मत करीं । हम बानीं नू ! जवन-कुछ हो सकी, हम उठा ना राखब । हर तरह के मदत खातिर हम तइयार बानी ।"

गुलजारीबाई कुछ आश्वस्त होत बोलली — "मुंशी जी बोलत रहले ह कि एह मुकदमा से कुछुओ ना होई । साहेब आपन धन केहू के दे दीहीं, एह से गोतिया लोग के का ? आ दोसर बात ई कि उहाँ का मौरूसी जायदाद त छुअलहूँ नइखीं । आ फेर ऊ ईहो बोलत रहले कि साहेब जब जिन्दे बानीं त फेर ई सवाले कहाँ उठत बा ! अबहीं त बकियो धन पर गोतिया लोग के हक नइखे ।"

"का कहिहन मुंशी शिवधारी लाल ! पूरा सठिया गइल बाड़े । ढेर कानून उनके बुझाला ! सुनीं बाईजी ! मुकदमा के पैरवी ठीक से होखे के चाहीं । आ दोसर बात ई कि ओह बुढऊ पर भरोसा क के बइठल मत रह जाएब । मुकदमा के पैरवी रउआ अपनहीं करीं, आ अगर कतहीं जरूरत बुझाय त रउआ हमरो मदत ले सकत बानीं । समुझनी ?" — बड़ा गम्भीरता से राय लछुमन प्रसाद बोलले । उनका बुझाइल जइसे उनकर फेंकल जाल में गुलजारीबाई पूरा-पूरा अझुरा गइल बाड़ी । अब जइहें केने ? बन का गीदड़ जायगा कीधर ! उनका मन के खुशी कहीं लखा ना जाय, एह से ऊ उठ

www.bhojpurisahityangan.com

गइले । रास्ता-भर उनकर डेग जमीन पर ना पड़त रहे ।

बाहरी दुनिया से जब आदमी बहुत घबड़ा जाला त देवता-पीतर का ओर मन जाए लागेला । इहे हाल गुलजारी बाई के होखे लागल । कहाँ त एगो बड़का साया मूड़ी पर रहे । आ तब फिकिरे का रहे गुलजारी के । सब कुछ सुख में बीतत चल जात रहे । बाकिर एके बेर सबकुछ गड़बड़ा गइल होखे जइसे । जवन ना सोचली, तवन हो गइल । एतना बड़का जायदाद के भार एक-ब-एक मूड़ी पर आ गइल । आ ओकरा बाद ओकरा खातिर मुकदमों हो गइल । गुलजारीबाई बड़ा हलचल में पड़ली । अब जमींदारी के कारबार से उबरस त वकील किहाँ के चक्कर लागे, उहाँ से आवस त पूजाघर में शान्ति बुझाय । रात के कथा आ कीर्तन के सिलसिला शुरू भइल । एकरा खातिर पं॰ महेन्दर मिसिर बोला के अइले । मिसिर जी अपना सुकोमल कंठ से जब नया-नया गीत गावस त श्रोता झूम-झूम जास । एक-से एक नया-नया तर्ज आ एक-से-एक नया-नया गीत । मिसिर जी के बड़ा आदर होखे । उनका हर जरूरत के ख्याल राखस गुलजारीबाई ।

कबहीं-कबहीं अपना पूजाघर में बइठल गुलजारीबाई पं॰ महेन्दर मिसिर के कवनो भजन गावस । भजन लाल कोठी के केतना दीवारन से छनत अपना धीमा-धीमा आवाज में मिसिर जी के कोठरी तक पहुँचे त मिसिर जी के बड़ा बेचैनी बुझाय । उनका जेब में धइल गुलजारीबाई के नथिया जइसे गरमाये लागे । आ ऊ उठ के अपना कोठरी में टहले लागस ।

मुकदमा अपना रंग पर रहे । आ जइसे-जइसे मुकदमा के कार्रवाई आगे बढ़त गइल ओइसे ओइसे राय लछुमन प्रसाद के पूछ बढ़त गइल । दूनो दल का साथे बड़ा होशियारी से अपना के साट के रखले रहले राय लछुमन प्रसाद । दूनो दल के हमदर्द आ दूनो दल के सलहिया रहले । उजरकी कोठी के नयका मलिकार लोग रुपया-पइसा से लगायत हर मामला में उनका पर पूरा-पूरा आसरा राखत रहे आ एने लाल कोठी के गुलजारीबाई उनके सहारे एह मुकदमा के जीते के सोचत रहली ।

लाल कोठी पर अक्सरे राय लछुमन प्रसाद आवे लगले । जब ऊ आवस त उनकर बड़ा खातिरदारी होखे । नोकर-चाकर एके गोड़ पर खड़ा रहऽ स । तरह-तरह के बेलायती शराब उनका आगा रखा जाय । बाकिर सब कइयो के अपना के गुलजारीबाई तनी अलगा-अलगा राखस । इहे राय लछुमन प्रसाद का बर्दाश्त ना होखे । बाकिर चुस्त शिकारी अइसन ऊ समय के इन्तजारी में दम सधले रहले ! मुंशी शिवधारी लाल के राय लछुमन प्रसाद तनिको ना भावत रहले, बाकिर दुनिया देखल शिवधारी लाल अपना ओठ के मजबूती से बन्द राखस । उनका ई एहसास बनल रहल कि ऊ खाली एगो नोकर बाड़े, जेकरा मालिक के काम में दखल ना देबे के चाहीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

महेन्दरो मिसिर के राय लछुमन प्रसाद पसन्द ना रहलं । गुलजारीबाई का संगे उनकर मेलजोल तनिको अच्छा ना लागे मिसिर जी के । उनका पूरा अस्तित्व के बेर-बेर राय लछुमन प्रसाद के आवा-जाही झकझोर-झकझोर देव, आ उनका गीत के कड़ी बेर-बेर भुला-भुला जाय, कथा के तार बिचिल-बिचिल जाय । राय लछुमन प्रसाद के काहे एतना छूट दे रहल बाड़ी गुलजारीबाई । महेन्दर मिसिर के जेब में पड़ल गुलजारीबाई के नथिया गरमाये लागे !

फेर, वकील साहेब किहाँ के सिलसिला शुरू भइल आ पालकीगाड़ी पर चढ़-चढ़ के वकील साहेब किहाँ गुलजारीबाई जाये लगली । अक्सरे, रजिस्ट्रार साहेब साथे रहस । महेन्दर मिसिर देखस त उनका जेब के नथिया चिनगारी फेंके लागे आ ऊ ओकरा गर्मी में बेचैन होखे लागस !

आ एक दिन गुलजारीबाई के आगे जाके खड़ा हो गइले पं० महेन्दर मिसिर । साँझ के बेरा गुलजारीबाई राय लछुमन प्रसाद का साथ वकील साहेब किहाँ जात रहली । पोर्च में पालकीगाड़ी आके लागल रहे । तलहीं रास्ता रोक के खड़ा हो गइले महेन्दर मिसिर — "रउआ से कुछ बात करे के बा !"

"कहीं" !

"इहाँ ना कहब ! कहब एकन्ता में !"

गुलजारीबाई एक छन खातिर ठिठक के खड़ा भइली । कुछ सोचली । उनकर दूनों भँहू जइसे आपस में जुड़े लागल । ऊ कुछ देर महेन्दर मिसिर का ओर देखली, कुछ सोचली, आ फेर गम्भीरता से बोलली— "ठीक बा ! हम लौट के आएब त सुनब राउर बात ।"

महेन्दर मिसिर थकबकाइल खड़ा के खड़ा रह गइले । गुलजारीबाई आगे बढ़ के गाड़ी में बइठ गइली आ सँगही राय लछुमन प्रसाद गाड़ी पर चढ़ गइले । गाड़ी टिकटिक करत फाटक से बाहर निकल गइल ।

कुछ देर बाद, मिसिर जी के चित्त स्थिर भइल । माथा में जइसे खून तेजी से दउड़त रहे । पूरा देह में झनझनाहट बुझात रहे । ऊ बाहर निकल गइले । सरजू के ओर से बह के आइल ठंढा-ठंढा ताजा हवा लागल त कुछ ताजगी बुझाइल । ऊ एने-ओने घूमत फिरले । मन में रह-रह के उथल-पुथल मच जात रहे । कतहीं मन ना लागल त अपना कमरा में आके बिछावन पर पड़ गइले । बड़ा उहापोह में मन पड़ल रहे । बेर-बेर मन में ई बात आ जात रहे कि ऊ काहे के गुलजारीबाई से बात करे गइले, आ बेर-बेर उनका जेब में पड़ल नथिया लछुमन प्रसाद का साथे ईर्ष्या के आग भड़का देत रहे । उनका बुझाइल कि राय लछुमन प्रसाद का आगा उनकर बिलकुल उपेक्षा हो रहल बा अइसन कि

www.bhojpurisahityangan.com

उनकर बातो सुने के फुर्सत बाई जी का नइखे । उनकर मन एकदम से झनझना गइल रहे । ऊ बेर-बेर सोचस कि उनका केहू के व्यक्तिगत मामला में ना पड़े के चाहीं । ऊ बेर-बेर सोचस कि ऊ गुलजारीबाई से एह बारे में कुछुओ ना कहिहें । बाकिर लछुमन प्रसाद का साथे गुलजारीबाई के बढ़त घनिष्ठता के उजागिर रूप उनका के बेचैन कर देत रहे । उनका जेब के नथिया उनका कुछुओ कहे के हक के एहसास करा देत रहे ।

तिवारी जी खाये खातिर उठवले त महेन्दर मिसिर चुपचाप जाके जइसे-तइसे कुछ खा लेले । उनकर मन कइसन-कइसन त हो गइल रहे । खाके अइले त ओही उहापोह में फेर पड़ गइले । नींद ना आइल ।

रात के बारह बजे पालकीगाड़ी हड़हड़ करत फाटक से भीतर घुसल । मिसिर जी के दिल धकधक करे लागल । गाड़ी पोर्च में रुकल आ गाड़ीखाना का ओर बढ़ गइल । फेर सबकुछ शान्त हो गइल । मिसिर जी के जान में जान आइल । अबहीं पन्दरहे मिनट बीतल होई कि नोकर आइल– "मिसिर बाबा ! सूत गइनीं का ? चलीं, मलकिनी बोलावत बाड़ी ।"

मिसिर जी के ई ना बुझाइल कि का करीं ! सूते के बहाना क के महटिया जाईं आ कि जाईं । बाकिर जेब के नथिया सुगबुगाइल आ ऊ नोकर के संगे चल पड़ले ।

बइठका में काउच पर धँस के बइठल रहली गुलजारीबाई । एकदम स्थिर शान्त । दीया के मद्धिम रोशनी में उनकर रूप धप-धप करत रहे जइसे अन्हार में आग लहोक लेले होखे । ओही लहोक के दँवक में मिसिर जी बइठका का भीतर गइले । मिसिर जी के पहुँचते गुलजारीबाई उनका के सामने के काउच का ओर इशारा कइली । मिसिर जी काउच पर बइठ गइले । गुलजारीबाई एकदम शान्त बइठल रहली । थोड़े देर बइठला पर मिसिर जी के उन्माद थोड़े-थोड़े शान्त होखे लागल रहे, एह से उनका कुछ बोले में संकोच बुझाये लागल । तले गुलजारीबाई बोलली– "मिसिर जी, रउआ एकन्ता में कुछ कहे के चाहत रहीं । कहीं का कहे के बा ।"

मिसिर जी के देह झनझना गइल । जवन कहे के चाहत रहले ऊ का कह पइहन । गुलजारीबाई के दूनों भँहू जुटल जात रहे । ऊ मिसिर जी पर आँख गड़वले बइठल रहली । आ मिसिर जी गड़बड़ा गइले । उनका मूड़ी में खून के दौरा बड़ा तेज हो गइल रहे । ऊ गला साफ करत, कुछ-कुछ लटपटात-लटपटात कहिए देले– "कहत रहनीं हँ कि लछुमन बाबू कुछ ठीक आदमी ना हउअन । उनका संगे अपने के ढेर हेलमेल ठीक नइखे !"

काउच पर सीधा होके बइठ गइली गुलजारीबाई । मिसिर जी का ओर चुपचाप एकटक देखत रहली । फेर, गम्भीर आवाज में बोलली – मिसिर जी ! के अच्छा बा आ के खराब, एतना सोचे-बूझे खातिर हम लइका नइखीं । हमरा जवन ठीक बुझाई

www.bhojpurisahityangan.com

तवन हम करब । जेकरा संगे मन भरी ओकरा संगे दोस्ती करब । रउआ हमरा के पूछे वाला के ? का हक बा राउर हमरा बात में बोले के ? बाकिर इहो सुन लीं मिसिर जी, कि हम रउआ जइसन छोट-बुद्धी नइखीं । बुझनीं ! दोसरा का बारे में कुछ कहे के पहिले, अपना के पूरा-पूरा टटोल लेवे के चाहीं !"

पं० महेन्दर मिसिर के उन्माद एके बेर शान्त हो गइल । उनकर दिमाग झनझना गइल । बुझाइल जइसे उनका कान में गरम-गरम सीसा पिघला के डालल जा रहल बा । उनकर गला सूख के काँट हो गइल रहे । बुझाइल जइसे ऊ आसमान से धरती पर गिरल जा रहल बाड़े, बिना कवनो अलम के । हे भगवान ! ई का हो गइल ! ई का क देले पं० महेन्दर मिसिर ! उनकर हाथ कवहीं जेब में जाय, कबहीं बाहर आवे; आ एही बीचे जेब से एगो कागज के पुड़िया हाथ में आ गइल । पुड़िया कवहीं एह हाथ में आवे आ कवहीं ओह हाथ में जाय । फेर ऊ पुड़िया सामने के टेबुल पर धरा गइल ।

मिसिर जी के होश भइल त ऊ खड़ा हो गइले । गुलजारीबाई वाला काउच खाली रहे । ऊ बाहर अइले । ई का हो गइल रे राम ! काहे बुद्धी भ्रष्ट हो गइल रहल ह !

महेन्दर मिसिर के पूरा अस्तित्व झकझोरा गइल रहे । ऊ आसमान से धरती पर आ गइल रहले । दुनिया के कुछ-कुछ बोध उनका हो गइल रहे । लाजे बुझाय जे जमीन में गड़ाइल जा रहल बाड़े । बाहर निकल के पोर्च में कुछ देर ले खड़ा रहले । उनका ई धरती आवा लेखा तपत बुझाये लागल रहे । अब आउर ना ठहरल गइल । ऊ कमरा में जाये के जगहा फाटक से बाहर निकल गइले । ग्लानि में डूबल मन अथाह में पड़ गइल रहे । पाँव अपने-आप बढ़त गइल । राह-बेराह बढ़त गइले । लाल कोठी का ओर ताकतो लाज लागल ।

मन कुछ स्थिर भइल त ऊ अपना के छपरा स्टेशन पर पवले । सामने एगो गाड़ी लागल रहे । ऊ प्लेटफार्म पर आके खड़ा हो गइले । गाड़ी सीटी देलस आ डब्बा सरके लगले स । जब गाड़ी के अन्तिम डिब्बा सामने से जाये लागल त हठात ऊ लपक के ओह में चढ़ गइले । गाड़ी रफ्तार ध लिहलस ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

12.

दुपहर में गाड़ी बनारस सिटी स्टेशन पर पहुँचल । बगल के जात्री उतरे लागल ! महेन्दर मिसिर से बोलल – "बाबा ! इहँई रउओ ना उतर जाईं । अगिला स्टेशन जंक्शन ह । उहाँ धरा जाएब । टिकट त बा ना !" महेन्दर मिसिर उतर गइले । साथ के जात्री थोड़की देर स्टेशन पर ठहरे के सलाह देके बाहर निकल गइल । दुइए मिनट में प्लेटफार्म खाली हो गइल । स्टेशन मास्टर फाटक से हट के ऑफिस का भीतर चल गइले, त महेन्दर मिसिर फाटक से बाहर निकल गइले ।

अनजान शहर । केहू जान-पहचान के रहे ना । मन में एगो अदंक ले ले शहर में भटकत चलले महेन्दर मिसिर । पास में पइसा एतना कम रहे जे एह शहर में रह के कुछ समय काटल पहाड़ रहे । कहवाँ ठहरस, कहवाँ जास, कुछ बुझात ना रहे !

घूमत-घामत महेन्दर मिसिर दशाश्वमेध घाट पर अइले । गंगाजी के सोहावन रूप मन में कुछ ताजगी ले आइल । गंगा-स्नान कइला का बाद, घाट के सीढ़ी पर बइठ गइले । बइठल-बइठल साँझ से रात हो गइल । बाकिर गंगा किनारे भीड़ बढ़ते गइल । आज बुढ़वा मंगर के मेला रहे । सउँसे बनारस अपना घाट के सीढ़ियन पर उतर आइल रहे । गंगा के छाती पर नावन के एक से एक सुन्दर बजड़ा तैरत रहे । ओह जगमगात बजड़न पर एक से एक रईस-जमींदार महफिल जमवले बइठल रहले । जइसे इन्द्रपुरी उतर आइल होखे ।

महेन्दर मिसिर देखले जे एगो बजड़ा पर विद्याधरी के मोजरा हो रहल बा । दोसरा पर केसर बाई बाड़ी । तिसरा पर... चउथा पर.... । सबका के कहाँ चीन्हत रहले महेन्दर मिसिर । ऊ ओह शोभा में भुलाइल रहले, तले केहू हाथ में पूड़ी के एगो दोना धरा दिहल । धीव के गंध सबेरे से भुखाइल मन के बड़ा तोख देलस । अन्नपूर्णा के एह नगरी में केहू उपास पड़ सकत बा का ?

बुढ़वा मगर बीत गइल, बाकिर महेन्दर मिसिर के गंगा के घाट पर आश्रय मिल गइल । दिन भर घूमस-फिरस आ फेर गंगा के घाट पर रात काट देस ।

आ अइसहीं एक दिन दशाश्वमेध घाट पर बइठल रहले । जेब में हाथ गइल त इयाद पड़ल कि गुलजारीबाई के दिहल नथिया बरिसन अपना जेब में सँजो के फेर उनके

www.bhojpurisahityangan.com

टेबुल पर रख आइल बाड़े । 'जस की तस धर दीनी चदरिया' अइसन । मन में हूक उठल । धीरे-धीरे गुनगुनाए लगले – मथवा मिसत में लगले हाथ के रे झिटिकिया बालम हेराई रे गइले ना, मोरा नाक के रे लवंगिया बालम, हेराई रे गइले ना ।

संतोषी माता के मन्दिर से पूजा क के निकलत रहली केसरबाई । परिचित कंठ के परिचित गीत लागल । घूम के देखली त महेन्दर मिसिर तन्मय रहले । ऊ खड़ा हो गइली । गीत रुकल त केसरबाई लगे गइली– "मिसिर जी । रउआ इहाँ........?"

मिसिर जी कुछ-कुछ चिन्हले केसरबाई के । ई कई बेर उनका के छपरा कोठी पर देखले रहले । उठ के खड़ा हो गइले । बाकिर कुछ बोल ना सकले ।

महेन्दर मिसिर के सूखल उदास मुँह देख के केसर बाई कुछ-कुछ स्थिति भँपली । पुछली – "मिसिर जी ! रउआ बनारस कब अइनीं ह ?"

"जी, चार-पाँच दिन पहिले अइनी ।"

"कहाँ ठहरल बानीं मिसिर जी ?"

मिसिर जी चुप ! कुछ देर बाद मूड़ी ऊपर उठवले– "अपना एह देह के साथहीं ठहरल बानीं बाई जी !"

केसरबाई बड़ा गौर से देखली महेन्दर मिसिर के । बोलली– "त चलीं ! हमरा साथे चलीं !"

आगे-आगे केसरबाई चलली आ पाछे-पाछे मिसिर जी । दालमंडी के गली आइल । दूनो ओर जगमगात दूकानन के कतार रहे । दूगो दूकान का बीच से एगो सीढ़ी ऊपर चल गइल रहे । मिसिर जी ऊपर चढ़ले । बाहर से साधारण देखाई पड़ेवाला मकान के भीतरी साज-सज्जा देख के ऊ चकित हो गइले । केसरबाई का रूप के अनुरूपे रहे उनकर घर ।

एक नज़र में बड़का-बड़का के पूरा थाह लगा लेबे में माहिर केसरबाई के महेन्दर मिसिर के हालत समझे में तनिको देरी ना लागल रहे । ऊ बिना पुछले समझ गइल रही कि अबहीं एकदम असहाय बाड़े पं० महेन्दर मिसिर । अनुमान का भरोसे जग जीते वाली केसरबाई कुछ पुछियो के का करिती! इहाँ त सौ सवाल के एक जवाब रहे– चुप !

केसरबाई का मन में एगो बड़हन साध रहे कि ऊ विद्याधरी बाई से आगे निकल जास । एकरा खातिर ऊ बहुत गवैयन से सिखली, बाकिर रस के परस ना भइल । पं० रामनारायण मिसिर के ऊ शोहरत सुन चुकल रहली आ उनकर गावलो सुनले रहली । बाकिर तबतक पं० रामनारायण मिसिर भजन आ कीर्तन में डूब चुकल रहले आ उनकर चेला महेन्दर मिसिर अपना उठान पर आ गइल रहले । बाबू हलिवन्त सहाय का दरबार में केसरबाई महेन्दर मिसिर के गीत सुनले रहली आ उनका बुझाइल रहे जइसे

www.bhojpurisahityangan.com

अमरित अगर जो कतहीं बा त महेन्दर मिसिर के गला में बा । ऊ महेन्टर मिसिर सशरीर हाजिर बाड़े केसरबाई का अंगना में । ऊ मने-मने महेन्दर मिसिर से पूर्वी सीखे के तय कइली । उनका बुझाइल जइसे अन्तर्यामी भगवान सब इन्तजाम अपने आप कर देले बाड़े । आज एह सुक का दिने संतोषी माता मन के साध पूरा करे के उपाय क देले बाड़ी ।

केसरबाई पूजा के थरिया ध के आ गइली मिसिर जी का लगे । बोलली— "मिसिर जी ! अपने अब बाबा विश्वनाथ आ माता अन्पूर्णा का एह नगरी से कहाँ जाएब ! इहें रहीं आ हमरा के आपन चेलिन बना लीं ।" एकर स्वीकृति मिसिर जी चुपे रह के देलन ।

फेर मिसिर जी के रहे के इन्तजाम केसरबाई के चेतगंज वाला कोठी पर भइल । रोज बाह्म मुहूर्त में पं० महेन्दर मिसिर गंगा-स्नान करस, बाबा विश्वनाथ के दरसन करस, आ फेर केसरबाई के दालमंडी वाला घर पर जाके उनका के पूर्वी के अभ्यास करावस । दिन भर अपने गावे के अभ्यास करस आ साँझ के कबीरचौरा पर चल जास जहाँ खानदानी गवैया-बजवैया मिसिर लोग के घर रहे । आ फेर उहाँ देर ले बइठकी होखे । बनारस में पं० महेन्दर मिसिर के शोहरत फइले लागल । बड़का-बड़का दरबार में मिसिर जी के बोलाहट होखे । इज्जत आ पइसा दूनो भरपूर मिले लागल ।

केसरबाई, मशहूर केसरबाई, महफिल में केसर अइसन सुबासित रहली । रूप हीरा लेखा चकमक आ जहरीला रहे । कमल के फूल अइसन पाँव में बान्हल घुंघरू से तबला के हर बोल उचार देबे के लचक रहे । गला बड़ा सुरीला रहे । जवना महफिल में जास, समा बान्ह देस । बाकिर मन में एगो दरद रहे । बुढवा मगर का मेला में विद्याधरीबाई के मुकाबला कर पावे के साहस ना जुट पावत रहे । एह कमी के दूर करे के मन्तर अइसन भेंटा गइल रहले पं० महेन्दर मिसिर । पूर्वी के एक से एक रसदार गीत, एक से एक लयदार तान-बोल् का बीचे अपना के तिरपित करत बड़ा ललक के साथ अभ्यास पर जुटल रहली केसरबाई । पं० महेन्दर मिसिर भोर में अभ्यास करावे आवस त बड़ा आदर करस केसरबाई उनकर । बाकिर, केसरबाई के जब-जब देखस पं० महेन्दर मिसिर तब-तब उनका आँख के आगे गुलजारीबाई के दीया अइसन बरत रूप उजागिर हो जाय आ गला में दरद आउरू बढ़ जाय ।

केसरबाई में धीरे-धीरे पं० महेन्दर मिसिर मने-मने लिप्त होखे लगले । अब उनके नींदी सूतस, उनके नींदी जागस । आ फेर एक दिन गजब हो गइल ।

एक पहर रात बीतत होई । ऊ कबीरचौरा के मिसिर लोग के संगीत-गोष्ठी से उठके चलले । एगो राग के रूप खड़ा हो गइल रहे । उनका आँख का सोझा, ठीक केसरबाई के देह के मादक गंध लेखा अप्रतिम, अनमोल ! मिसिर जी के पाँव बढ़ गइल दालमंडी का ओर । तबला के ठनक आ गला के उछाह छलकत रहे दूनो ओर ।

www.bhojpurisahityangan.com

मिसिर जी धड़धड़ान सीढ़ी से ऊपर चढ़ गइले । दरवान अचरज से महेन्दर मिसिर के देखलस– "बाबा ! राजा साहेव आइल बानीं ।"

बाकिर ना सुनाइल मिसिर जी के । ऊ धड़धड़ाइल पहुँच गइले दालान के दरवाजा पर । भीतर तबला ठनकत रहे, सारंगी पर गज दउड़त रहे । राजा साहेब मसनद पर टेक दे के वइठल रहले । चकमक जरीदार अचकन आ शमला । हाथ में कट ग्लास के प्याली में खून अइसन टलमल करत रहे अंगूरी । आ ओहू से बेसी नशीला छलक रहे केसरवाई के मादक रूप के ! राजा साहेव उनकर ठुड्ढी धइले उनका आँख के भीतर उतरल जात रहले जइसे ।

.......के मोरा हरिहें रामा हिया के दरदिया
के मोरा हरिहें जहरिया ए ननदी,
दियरा जरा दे.......

केसरवाई के गीत आग लेखा तलफत रहे, जहर लेखा भभकत रहे । मिसिर जी के नशा हवा हो गइल । केसरवाई के नजर पड़ल मिसिर जी पर । ऊ अँगड़ाई लेत एगो खास अदा से उठली । शराब के सुराही उठाके राजा साहेब के प्याली में ढरली । आ फेर नाच के एगो मोड़ लेत, दरवाजा ले आ गइली । सारंगी गीत के लय दोहरावे लागल । राजा साहेब शराब के पियाली से मुँह लगवले, आ केसरबाई दरवाजा ध के महेन्दर मिसिर के दुत्कार हिदली– "मिसिर जी ! रउआ समय-कुसमय ना बुझाला ? जाई इहाँ से !" आ केसरवाई नाँच के मोड़ देत फेर राजा साहेब का सामने पहुँच गइली ।

मिसिर जी के जइसे ठकुआ मार दिहलस । हे भगवान ! राजा साहेब का सामने केसरवाई के निर्लज्ज अदा रउँद दिहलस महेन्दर मिसिर के दिल के । जवना देह-गंध के मादकता में खिंचाइल आइल रहले, ओह से बसना उठे लागल होखे जइसे ! केसरबाई जवन अपमान कइली ऊ ईर्ष्या का आँच में लहके लागल । उनका बुझाइल जइसे गुलजारीवाई आके उनका मुँह पर थूक देले होखस ।

महेन्दर मिसिर धड़फड़ा के सीढ़ी से नीचे उतर गइले । चेतगंज के कोठी पर पहुँच के आपन रुपया-पइसा लिहले, कुछ कपड़ा-लता सहेजले, आ निकल पड़ले कोठी का वाहर । स्टेशन अइले छपरा लौटे खातिर । बाकिर केसरबाई आ गुलजारीवाई के चेहरा गड्ड-मड्ड होखे लागल ! कवहीं केसरबाई, कवहीं गुलजारीवाई, कबहीं केसरबाई, कवहीं गुलजारीवाई ! चारो ओर थू थू थू थू !

"कहवाँ जाईं हे राम !"

तले आगे वाला मुसाफिर हावड़ा के टिकट मँगलस । आ ईहो हावड़ा के टिकट खातिर रुपया बढ़ा दिहले ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

13.

तीन दिन ले होश ना रहे गुलजारीबाई के । मुक़दमा में बहस होत रहे । कवहीं कचहरी आ कबहीं वकील किहाँ के दउड़-धूप में सबकुछ भुला गइल रहली गुलजारीवाई । रात में घरे लौटस त चिन्ता में रात कट जाय । ना खाए के कुछ सुध रहे ना पीये के ।

मुकदमा के फैसला भइल आ जीत गइली गुलजारीवाई । पालकीगाड़ी पर घरे चलली त आगे-आगे बधाव बाजत चलल । घरे पहुँचते बधाई के ताँता लाग गइल । हारल-थाकल बइठका में आके काउच पर धँस गइली । बाहर अमला-फैला बड़वारगी लूटत रहले स । मिठाई खातिर आदमी दउड़त रहे ।

गुलजारीबाई के, टेवुल पर कागज के एगो पुड़िया लउकल । खुशी में भरल गप्प करत असहीं उठा लेहली । गप्प चलत रहल आ पुड़िया दाहिना हाथ से बायाँ हाथ में आ बायाँ हाथ से दाहिना हाथ में आवत रहल । फेर, पुड़िया के कागज धीरे-धीरे खुले लागल, फाटे लागल ।

गुलजारीबाई के बुझाइल जइसे पुड़िया में कवनों गोल चीज रखल बा । ऊ पुड़िया खोल दिहली । मिजाज सनसना गइल । मन के भीतर टीस उठल । उनका हाथ में नथिया झलमला उठल । एह नथिया से जुड़ल उनकर पूरा व्यक्तित्व, उनकर बीतल जिनगी, आ उनका भीतर जमक के बइठल उनकर पूरा नारीत्व जइसे एक बेर फेर झप से उठ के खड़ा हो गइल होखे । ऊ हड़बड़ा के उठ के खड़ा हो गइली । दरवाजा से भीतर गइली । लँउड़ी से बोलली– "सनीचरी ! जो मिसिर जी के बोला ले आव ।"

सनीचरी हाथ चमका दिहलस– "एह बेरा कहाँ पाएब मिसिर जी के । ऊ तीन दिन से गायब बाड़े मलकिनी जी ! केनियों अवारागर्दी करत होइहें ।"

"चुप !" —सनीचरी के गुलजारीबाई डाँट दिहली, बाकिर आँख का आगा अन्हार अइसन छा गइल । नथिया मुट्ठी में कसा के मोड़ा-चमोड़ा गइल । कुछ स्थिर भइली त अपना कमरा में जाके पलंग पर पड़ गइली ।

राय लछुमन प्रसाद कचहरी से लौट के गुलजारीबाई के मुकदमा जीतला खातिर बधाई देबे लाल कोठी पर अइले । लँउड़ी आके कहलस कि मलकिनी के तबीयत ठीक नइखे । आज भेंट ना होई । सुन के राय लछुमन प्रसाद के मन में आग लाग गइल आ

www.bhojpurisahityangan.com

ओह में दहकत ऊ अपना घर का ओर चल दिहले ।

बाहर अमला-फैला जलसा मनावत रहले । खूब धुमगज्जड़ मचा के रामायण गावल गइल ओह रात में ।

बिहान भइला चारो ओर आदमी छुटले स, बाकिर कुछुओ पता ना चल सकल महेन्दर मिसिर के । मिश्रवलिया, पकड़ी आ रिविलगंज में उनकर खोज-ढूँढ कइल गइल, बाकिर पता ना लाग सकल । मुंशी शिवधारी लाल मूड़ी खजुआवत खड़ा के खड़ा रह गइले । अइसहीं होला जवानी का आलम में । ऊहो त अइसहीं अफीम कोठी पर भाग के आइल रहले । ऊ उदास पड़ल गुलजारीबाई के पलंग के पास जाके खड़ा हो गइले । गुलजारीबाई तकिया पर मुँह छिपवले पड़ल रहली । कुछ देर चुपचाप खड़ा रहले मुंशी शिवधारी लाल । फेर धीरे-धीरे कमरा से बाहर निकल गइले ।

मुंशी शिवधारी लाल सब बूझत-समझत बाड़े । जिनगी में बहुत-बहुत कड़ुआ घोंट घोंट के ऊ दुनिया देखले बाड़े । उनका ई पूरा पता बा कि औरत के दिल कइसन होला । अपना उमंग में ऊ दुनिया के कुछ ना बूझे । ऊँच-नीच ओकरा कुछ ना बुझाला । आ मरद के अपना भीतर के आन्हीं के झोंका सहे के पड़ेला । भीतर ज्वालामुखी के विस्फोट होत रहेला, बाकिर ऊपर से दुनिया के आँख में सबकुछ सहज-शांत रखे के पड़ेला । जिनगी भर अपने से जूझे के पड़ेला ।

मुंशी शिवधारी लाल जब-जब गुलजारीबाई के देखेले, उनका आपन दोसरकी मेहरारू के इयाद आ जाला । पहिलकी मेहरारू के मरला का बाद मुंशी शिवधारी लाल आपन दोसर बियाह कइले । पहिलकी मेहरारू से कवनो बाल-बच्चा ना रहे । दोसरकी मेहरारू अइली बाकिर उनका से मुंशीजी के मन ना मिल सकल रहे । दोसरकी मेहरारू से मुंशी जी के एगो लड़िको भइल, बाकिर तेहूपर मेहरारू से मन ना मिल सकल । आ मुंशी जी के आजो सोचिए के लाज लागेला कि मुंशी जी के एगो पड़ोसी छोकड़ा का साथे उनकर मेहरारू, आपन अबोध बच्चा छोड़ के, भाग गइली ।

मुंशी जी के जब पता चलल त ऊ रात के अन्हार में अपना बेटा के उठा के घरे से भाग परइले आ फेर लौट के ना गइले ।

आ मुंशी शिवधारी लाल ई भुलाये के आज ले कोशिश करत रह गइले कि ऊ असल में 'शंकर प्रसाद' हउअन आ उनकर घर ह .... ।

आपन नाम शिवधारी लाल बता के आ रिविलगंज के अफीम कोठी पर नोकरी पकड़ के मुंशी जी अपना बेटा के पोसे लगले । ऊहे बेटा शिवरतन प्रसाद आपन पाम्ह भींजे के पहिलहीं अपना मतारिये अइसन कमाल कइले आ दाई के बियहल बेटी गनेसिया के लेके कलकत्ता भाग गइले । आ तब फेरू एक बेर मुंशी शिवधारी लाल भागे के चहले,

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर अब बुढ़ापा आ गइल रहे आ जवानी के ऊ विश्वास ना रह गइल रहे । ऊ खाली रिविलगंज से भाग पवलन बाकिर छपरा आके टिक गइलन । उनकर स्थिति बहुत-कुछ बाबू हलिवन्त सहाय बूझत रहले, अइसन अन्दाज होला मुंशी शिवधारी लाल के ।

मुंशी शिवधारी लाल के कबहीं-कबहीं बड़ा बेचैनी बुझाला, जब गुलजारीबाई के देखेले । उनका मन में उनकर दोसरकी मेहरारू के रूप एकदम उजागिर हो जाला । उनका काहे त ओहू दिने बड़ा बेचैनी बुझाइल रहे, जेह दिने गुलजारीबाई के मतारी मीनाबाई मुंशी शिवधारी लाल के बड़ा गौर से देखले रहली आ ओकरा बाद छपरा से मुजफ्फरपुर हठाते लौट गइल रहली ।

गुलजारीबाई के कमल अइसन आँख फूल के लाल हो गइल रहे — “मुंशी जी !”

मुंशी जी चौंक पड़ले । ऊ अन्तर लोक से फेर बाहर का दुनिया में लौट अइले ।

“मुंशी जी ! मिसिर जी के खोजवावे के इंतजाम होखे के चाहीं ।”

“चारो ओर त खोजवा लिहनीं बाई जी !” — मुंशी जी थथमत कहले — “खोजे के इंतजाम हम करब । रउआ इतमीनान रखीं ।”

आ ई क्रम रोज-रोज के हो गइल । बाकिर केतनो खोज भइल, महेन्दर मिसिर ना मिलले ।

राय लछुमन प्रसाद के धैर्य जवाब देबे लागल । ऊ आवस ढेला का पास बइठ के आनन्द मनावे आ धीरे-धीरे ढेला के मुट्ठी में करे, आ एने महेन्दर मिसिर के चर्चा मन में बवंडर मचा देव । एगो रूपसी से दोसरा मरद के चर्चा सुन के सह सकल बड़ा दुखदायी रहे । बाकिर दुनिया देखल लछुमन प्रसाद ऊपर से इहो सह जास ! ऊ सब पैंतरा बान्हस, बाकिर गुलजारीबाई के मुट्ठी में ना कर पावस । गुलजारी के सुना के ऊ मुंशी शिवधारी लाल से एकरा बारे में पूछ-ताछ करे लागस । मुंशी जी के ई बड़ा नागवार लागे । जब उनकर मेहरारू भगली त कवनो खोज-ढूँढ़ ना कइले । जब लड़िका भागल तबो खोज-ढूँढ़ ना कइले । त फेर ओह आदमी के खोज का करस जवन केहू के ना ह ।

एह चर्चा पर शिवधारी लाल का मन में बड़ा बवंडर उठेला । उनका बुझाला जइसे उनका मेहरारू के भगा ले जाये वाला छोकरा उनका मेहरारू के अनाथ छोड़ के भागल जा रहल बा आ एह भागाभागी में ऊ दउड़ नइखन पावत ।

धीरे-धीरे सब सामान्य होखे लागल । जमींदारी के भार सबकुछ भुला जाए के मजबूर करे लागल । आ राय लछुमन प्रसाद के अधीरता बढ़े लागल ।

मुंशी शिवधारी लाल के बेटा शिवरतन प्रसाद के भगला बहुत दिन भइल । बीच-बीच में उनका शिवरतन प्रसाद के खबर मिलत रहेला । शिवरतन प्रसाद कलकत्ता में जमल बाड़े, एही भरोसा पर जी रहल बाड़े शिवधारी लाल । कबहीं-कबहीं मुंशी जी

www.bhojpurisahityangan.com

के पास कलकत्ता से कुछ कपड़ा-लत्ता आ जाला । एकरा पर ऊ आपन भाग्य सराहेले । बाकिर राय लछुमन प्रसाद के जब-जब देखेले मुंशी शिवधारी लाल, तब-तब उनका अपना लड़िका के बहुत इयाद आवेला । उनका बुझाला कि जइसे उनकर लड़िका शिवरतन गनेसिया के ले भागल रहे ओइसहीं लछुमन प्रसाद गुलजारीबाई के ले भागे के घात में बिलाई लेखा सिकुड़ के बइठल बाड़े । मुंशी जी के अनुभवी मन इहो भाँपेला कि लछुमन प्रसाद के आँख कोठी आ धनो पर लागल बा । बाकिर नाग लेखा जागल बाड़े मुंशी शिवधारी लाल ।

आ एक दिन लाल कोठी में तहलका मच गइल । उजरकी कोठी पर कब्जा क लिहले राय लछुमन प्रसाद । बाबू हलिवन्त सहाय के गोतिया-देयाद के कर्जा दे दे के गुलजारीबाई से मुकदमा लड़ववले रहले रजिस्ट्रार साहेब । ऊ कर्जा ना सध सकल रहे आ बाबू हलिवन्त सहाय के धन पर नजर लगवले रहेवाला रजिस्ट्रार साहेब उजरकी कोठी हड़प लेवे में सफल हो गइले । आ उजरकी कोठी हड़पला का बाद राय लछुमन प्रसाद सफाई देवे लाल कोठी पर अइले त उनकर अपमान करत गुलजारीबाई उनका के कोठी से निकलवा देली । बोलल रहली– “एह नीच पापी के हम मुँह नइखीं देखे के चाहत !” आ राय लछुमन प्रसाद के मुँह लाल हो गइल रहे । ऊ धीरे-धीरे लाल कोठी से बाहर निकल गइले ।

मुंशी शिवधारी लाल सुनले त थहरा के बइठ गइले । उनका बड़ा धक्का लागल । राय लछुमन प्रसाद के मुखौटा उतर चुकल रहे । दुनिया के चालबाजी में एकदम परास्त हो गइल रहले मुंशी शिवधारी लाल । ऊ खटिया ध लिहले । उनका लड़िका शिवरतन प्रसाद किहाँ कलकत्ता खबर भेजल गइल । घर से भगला का बाद पहिले-पहिल अइले मुंशी जी के बेटा शिवरतन प्रसाद । बाकिर तवतक मुंशी जी के बोली बन्द हो चुकल रहे । ऊ टुकुर-टुकुर बेटा का ओर देखत रहले खाली । शिवरतन प्रसाद जब उनका मुँह में गंगाजल देवे गइले त ऊ हाथ उठा के रोक दिहले । बाकिर उहे बेटा जब आग देबे गइल त शिवधारी लाल ना रोक सकले । कहल जाला जे मुर्दा मान-अपमान से ऊपर होला । आ शिवरतन प्रसाद अपना बाप के कजिया क के कलकत्ता वापस लौट गइले ।

गुलजारीबाई बड़ा सकता में पड़ गइल रहली । आगा-पाछा केहू ना रह गइल रहे । उजरकी कोठी कांड राय लछुमन प्रसाद के नीयत के उघार क देले रहे । ऊ जल से बाहर पड़ल मछरी अइसन छटपटात रहली । रिवेल साहेब के तस्वीर का आगा घंटन हाथ जोड़ के बइठली; बाकिर उनका से रिवेल साहेब के तस्वीर कुछ ना बोलल । रिवेल साहेब के समाधि पर जाके दीया जरवली, माथा टेकली, बाकिर रिवेल साहेब के समाधि से कुछुओ अँजोर ना मिलल । हताश, उनकर गाड़ी वापस लौटल । पोर्च में गाड़ी

www.bhojpurisahityangan.com

लागल आ ऊ उतरली त देखली कि सीढ़ी पर चउदह-पन्दरह बरिस के एगो लड़िका हाथ जोड़ले खड़ा बा । मूड़ी पर छोटी-छोटी केस, कपड़ा-लत्ता मइल, बाकिर चेहरा से तेजी टपकत रहे । ऊ पुछली– "तू के हउअ भाई !"

"जी, हम बाबू हलिवन्त सहाय के चचेरा भाई बाबू गुरुवचन सहाय के पोता हँई ।" —लड़िका बहुत संजीदगी से बोलल ।

बाबू हलिवन्त सहाय के गोतिया-देयाद से सतावल गइल रहली गुलजारीबाई । सुनते देह में आग अइसन लाग गइल । बाकिर एह मर-मुकदमा में त बाबू गुरुबचन सहाय के नाम ना सुनले रहली गुलजारीबाई । अपना के संयत करत ऊ पुछली– "तूँ कहवाँ से आवत बाड़ऽ ? शीतलपुर से ?"

"जी ना ! हम गुजराँवाला पंजाब से आवत बानी ।"

"गुजराँवाला पंजाब से ?" – अचरज भइल गुलजारीबाई के ।

"जी, हमार परदादा उहँई बस गइल रहीं । कुछ दिन पहिले प्लेग में पूरा परिवार साफ हो गइल । अकेले हमहीं बाँच गइनी । मरे का बेरा हमार बाबा बोलल रहीं कि तूँ छपरा चल जइह रामप्रकाश, अपना छोटका बाबा बाबू हलिवन्त सहाय किहाँ । सबकर श्राद्ध क के सीधे इहाँ आवत बानीं । बाकिर इहाँ अइला पर सुननीं हँ कि बाबा साधू हो गइल बानीं । हम त केहू के जानत नइखीं । अब कहवाँ जाईं हम ?" —लड़िका के आवाज लड़खड़ा गइल रहे । ओकरा आँख में लोर छलछला आइल रहे ।

गुलजारीबाई के हृदेया में मोह के नदी उमड़ आइल । उनका आँख से झर-झर क के लोर ढरक आइल । ऊ आँचर से आपन आँख पोंछ लेली । लड़िका का लगे गइली, आ आँचर से ओकर आँख पोंछत बोलली– "चुप रह हमार बाबू ! हम तोहार छोटकी दादी हँई ! हम त बानीं नू !"

रामप्रकाश के बुझाइल जइसे डूबत के तिनका के सहारा मिल गइल होखे । धन्य बानीं बाबा रिवेल साहेब ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

14.

महानगर कलकत्ता रहे त अनजान शहर बाकिर पं० महेन्दर मिसिर के चेट में पइसा काफी रहे, एह से मन में कवनो घबड़ाहट ना रहे । बनारसो त अनजाने शहर रहे आ पास में पइसो ना रहे । जब उहँवाँ कट गइल त ईहों कटिए जाई, ई विश्वास मन में रहे । ऊ हावड़ा में उतर के सलकिया के धर्मशाला में एगो कमरा ले लिहले आ फेर कलकत्ता के सैर पर निकल गइले । एक से एक ऊँच आलीशान मकान देख के महेन्दर मिसिर अचरज में पड़ गइले । अइसन ऊँच-ऊँच मकान रहे जवना के देखे में मूड़ी पर के पगड़ी गिर जाय । साफ-सुथरा गिट्टी बिछल चिक्कन सड़क, जेपर पातर-पातर लाइन बिछल रहे, जेपर घोड़ा ट्राम खींचऽ स । रेल के डिब्बा अइसन बड़-बड़ गाड़ी केतना आसानी से खिँचा जाय । घूमत-घूमत रात भ गइल त महेन्दर मिसिर के आउरू अचरज भइल । दिन के रोशनी अइसन रोशनी फेंकत गैस के बत्ती जर गइले स । अइसन रोशनी वाला बत्ती पहिले पहिले देखाई पड़ल रहे । कहाँ ई दिन लेखा रोशनी करेवाला गैस बत्ती आ कहाँ छपरा आ बनारस के मशाल । ई कलकत्ता त कबहीं सुतते ना होई । आ साँचो कलकत्ता नाहिएँ सूतल रहे । घूमत-घूमत मन हार गइल त अपना धर्मशाला में वापस लौट अइलन ।

कलकत्ता रहे महानगर । एह में फुटहा लेखा पइसा खर्चाए लागल । अकेले-अकेले मनो घबड़ाए लागल । एह से पं० महेन्दर मिसिर कवनो काम ध लेबे के सोचलन । हट्ठा-कट्ठा देह आ ऊँच कद उनका के एह काम में बड़ा मदत कइलस । उनका बहूबाजार के एगो कम्पनी में दरवानी के काम मिल गइल । कम्पनी गैस बत्ती बेंचे के धन्धा शुरू कइले रहे— 'हरिसन ऐंड कम्पनी' । आ कम्पनी का ओर से रहे के एगो कोठरियो मिल गइल । ऊ बहूबाजार के अपना कम्पनी के दिहल कोठरी में आके जम गइले । बाकिर मन ना जम सकल । रात में खा-पी के जब अपना कोठरी में आराम करे लागस त छपरा आ बनारस से ले आइल मन के घाव रह-रह के बड़ा टभके आ तब ऊ अनचाहते गावे लागस ।

असहीं एक दिन कोठरी में बइठल गावत रहले— में तो रहनी जल के मछरिया, जोगिनियाँ बनवलऽ हो माधो, माधो छोड़ि देनी कुल परिवार, त जोगिनी बनवलऽ हो

www.bhojpurisahityangan.com

माधो..... । तसहीं, उनका कोठरी के दरवाजा केहू खटखटावल । महेन्दर मिसिर के गाना रुक गइल । ऊ उठ के दरवाजा खोलले त देखले, दरवाजा पर एगो बंगाली औरत खड़ा बिया । एकदम जवान औरत । भरल-भरल देह । तनी-तनी साँवर रंग । घुँघुँराइल केश सजा के बड़की जूड़ा बान्हल रहे । ऊ औरत बड़की-बड़की आँख से देखत बंगला मिलल हिन्दुस्तानी में बोलल– "तूँ जीये ना देबऽ का दरवान जी ?"

महेन्दर मिसिर ओकरा के अवाक होके देखत रह गइले । कुछुओ जवाब ना दे सकले । ऊ औरत फेर बोलल– "तोहरा मन में जवन दरद वा ऊ हम बूझ रहल बानीं । चलऽ, हम तोहरा के ओह दरद के दवाई दीं !"

महेन्दर मिसिर के दिमाग में नारी-देह के गंध फेर एक बेर हलचल मचा दिहलस । औरत उनकर हाथ ध लिहलस– "चलऽ!"

ऊ औरत उनकर हाथ धइले आगे बढ़ल आ ऊ सम्मोहन में खिँचाइल चल पड़ले । महेन्दर मिसिर के कमरा के ठीक सामने गली के ओह पार एगो दरवाजा से उनकर हाथ धइले ऊ औरत भीतर घुसल आ एगो कमरा में घुस के दरी पर बइठ गइल । महेन्दरो मिसिर बइठ गइले । औरत के रूप से, देह से, साँस से, वासना के ज्वाला उठ के लपलप करत रहे । औरत हँसल त ओकर दाँत बिजली लेखा मिसिर जी के भीतर कौंध गइल । ऊ दूगो गिलास में बोतल से दारू ढरलस आ एगो गिलास महेन्दर मिसिर का ओर बढ़ा के हँसत बोललस– "ल, पीयऽ, दरद के दवाई ! एह दुनिया में जदि जीये के चाहत होखऽ त ई दवाई पियहीं के पड़ी !"

मिसिर जी चुप बइठल ओह औरत के रूप-रस के पान करत रहले, एकटक! ऊ गिलास का ओर हाथ ना बढ़वले त ऊ औरत गिलास उनका मुँह से लगा दिहलस आ उ गटगट दारू पी गइले । औरत हँसल– "देखऽ ! हमार नाम 'मनोरमा' ह! हम मन में रमीले ! हमरा लगे आके लोग अपना जरल दिल पर मलहम लगवा जाला ! बुझलऽ ?"

महेन्दर मिसिर चुपचाप मनोरमा के देखत रह गइले । साँवर रंग, गदराइल देह, बड़-बड़ चमकत आँख, आ ऊँच लिलार पर बड़की लाल बुन्दा । बाकिर एह सबसे अलगा, नारी-देह के अथोर मादक गंध । धीरे-धीरे दारू के रंग चढ़त गइल आ पं० महेन्दर मिसिर ओह में अपना के डुबा देले ।

सबेरे आँख खुलल त देखले जे अस्त-व्यस्त मनोरमा दरी पर पड़ल बाड़ी । ऊ उठ के खड़ा भइले आ दरवाजा से बाहर निकले लगले तले मनोरमा के आँख खुल गइल । ऊ अँगड़ाई लेत मुस्कुरइली आ बोलली "मिसिर जी ! जिनगी के एगो आउर रात गम बिसारत बीत गइल !"

दिन भर ग्लानि में बीत गइल । काम में मन ना लागल । बाकिर जब रात

www.bhojpurisahityangan.com

गहराइल त पाँव अपने आप मनोरमा के घर का ओर बढ़ गइल । फेर ऊहे दारू, ऊहे सबकुछ, आ उहे गम बिसारत जिनगी के एगो आउरू रात बीत गइल ! आ ई क्रम चलत रहल । जिनगी के एक-एक रात गम बिसारत बीते लागल !

आ एक दिन मनोरमा के दरवाजा में ताला लटकत रहे । रात भर महेन्दर मिसिर गली में बेसब्री से चक्कर काटत बिता देहले । फेर दोसरो रात के मनोरमा के दरवाजा पर ताला लटकत देख के उनका मन में बड़ा खीस बरल । एक लात दरवाजा पर मार के ऊ गली में उतर अइले । फेर, पाँव दारू के दुकान का ओर बढ़ गइल ।

दारू के बोतल लेके, जइसे नीचे उतरले तइसहीं एगो आदमी सामने आके खड़ा हो गइल– "आरे, मिसिर बाबा ?"

मिसिर जी के देह में झुरझुरी उठल । एह अनचिन्हार शहर में पूरा-पूरा बंगाली लागे वाला आदमी कुछ-कुछ चिन्हार अइसन लागल । कहाँ देखले बानी एह आदमी के ? दिमाग पर जोर डलले त ओह आदमी के चेहरा झिलमिला के अपना असली रूप में आ गइल । ऊ चिल्ला पड़ले– "आरे बुलकना ? तें कहाँ रे ?"

बुलकना हँसल– "बाबा ! तनीं धीरे से बोलीं । जहवाँ रउआ बानीं उहँई हमहूँ बानीं ।" दूनो आदमी गली में आगे बढ़ल लोग । बुलकना मिसिर जी के लेके अपना घरे चलल । रास्ता में बोलल– "बाबा ! इहवाँ हम बुलकना डोम नइखीं । इहवाँ हम बानी बुलाकी लाल कायथ । हमरा बंगाली मेहरारू के आगा तनी एकर खियाल राखब ।" मिसिर जी के देह में फेरू झुरझुरी उठल ।

बुलकना छपरा से चलल रहे त हाथ में काफी पइसा रहे । पइसा के गरमी ओकरा के कलकत्ता खींच ले आइल रहे । ओकरा मालूम रहे कि मुंशी शिवधारी लाल के लड़िका शिवरतन प्रसाद कलकत्ते में रहेले । ऊ मुंशी जी से उनकर पता ले ले आइल रहे । कलकत्ता आइल त शिवरतन प्रसाद का पास पहुँचल । शिवरतन प्रसाद बैरकपुर के फौजी छावनी में किरानी रहले । शिवरतन प्रसाद से बुलकना का उनका ऑफिसे में भेंट भइल । बुलकना देखलस जे ऑफिस में ढेर फूटल-फूटल बड़का-बड़का ढोल राखल बा । बुलकना के अचरज भइल – "बाप रे ! एतना-एतना ढोल !" –ऊ शिवरतन प्रसाद से पुछलस । शिवरतन प्रसाद ओकरा के समझवले जे ई फौज के बैंड बाजा में बाजे वाला ड्रम हउअन स ।

बुलकना के अचरज भइल रहे । ऊ पुछले रहे – "का सरकार, ई फुटल काहे बाड़े स ?

शिवरतन प्रसाद हँसल रहले– "ना रे ! ई फेर से छवावे खातिर रखल बाड़े स । केहू बढ़िया छवनिहार ना मिलल ह एही से रखल बाड़े स ।"

www.bhojpurisahityangan.com

बुलकना के अचरज भइल रहे– "एतना बड़का शहर में छवनिहारो नइखन ? ई त हमहीं छा देब ।" शिवरतन प्रसाद बुलकना के देखले रहले– "एगो छा के देखइबे ?"

आ बुलकना एगो ड्रम छा दिहलस । कल्पनाशील शिवरतन प्रसाद के बुलकना के जेबो के थाह मिल चुकल रहे । फेर एगो दूकान किराया पर लियाइल आ ओपर अंगरेजी में एगो साइनबोर्ड टाँग दिहल गइल – 'बुलाकी लाल ऐंड कम्पनी', जवना का नीचे छोट-छोट अक्षर में लिखल रहे– 'म्यूजिकल इन्स्ट्रूमेन्ट मरचेंट ।' आ बुलकना डोम हो गइल 'बुलाकी लाल ऐंड कम्पनी' के मालिक बुलाकी लाल कायथ । कम्पनी के देखलावटी मनेजर त एगो केहू रखा गइल, बाकिर ओकर असली भितरिया मनेजर भइले मुंशी शिवरतन प्रसाद । छावनी के सब बाजा के मरम्मत आ नया खरीदारी बुलाकी लाल ऐंड कम्पनी से होखे लागल । दूकान हर तरह के बाजा से भर गइल । खूब पइसा आवे लागल । फेर, बाड़ी किनाइल आ बुलाकी लाल कायथ के बियाहो एगो विधवा बंगालिन से हो गइल ।

इहे बुलाकी लाल ऐंड कम्पनी पं॰ महेन्दर मिसिर खातिर एगो धरान अइसन मिलल । एह अनजान नगर में दूगो दोस्तो मिलले – बुलाकी लाल कायथ आ मुंशी शिवरतन प्रसाद । बुझाइल जइसे एह अथाह में ऊ अकेले नइखन ।

दोसरा दिने, रात के मनोरमा मिसिर जी के कमरा में अइली । मिसिर जी देखते उछाह से भर गइले । चट से गिलास में दारू ढारे लगले । मनोरमा हँसली– "मिसिर जी ! आज हम ना पीयेब । हमरा छावनी में जाये के बा ।"

"छावनी में ?"

"हँ मिसिर जी ! जिनगी के घसेटे खातिर छावनी में जाहीं के पड़ेला । आ छावनी के ग्लानि के दहवावे खातिर दारू के धार बहवावे के पड़ेला" – मनोरमा दरदीला हँसी हँसत बोलली । मिसिर जी चुप खड़ा रह गइले । मनोरमा फेर बोलली– "मिसिर जी ! ओह दिन राउर गावल सुन के बुझाइल रहे जइसे रउआ भीतर हम आपन पता पा सकत बानी । ओह दिन हमरा बुझाइल रहे जइसे हमनी दूनो आदमी एके जमीन पर खड़ा बानी । एही से रउआ संगे दोस्ती करेके मन क गइल । कई दिन का बाद रउआ के कमरा में देखके चल अइनीं हँ । अच्छा, अब चलीं !"

मिसिर जी देखत रह गइले, मनोरमा चल गइली । मिसिर जी के मन कइसन-कइसन त हो गइल ! ऊ बुलाकीलाल ऐंड कम्पनी का ओर चल दिहले !

ऑफिस के दरवानी, बुलाकी लाल ऐंड कम्पनी के बइठकी आ मनोरमा में पं॰ महेन्दर मिसिर के समय बीतल जात रहे । संगीत के लहरा, मन में कुछ उलट-पुलट क जाय, त मन में बड़ा बेचैनी बुझाय । ओह बेचैनी के, शराब के प्याली, कवहीं अपना

www.bhojpurisahityangan.com

में डुवा लेत रहे, कवहीं फेन लेखा बढ़ा देत रहे । मन ना लागे त एने-ओने घूमे निकल पड़स । कवहीं, खिदिरपुर डौक से जहाजन के समुन्दर में धीरे-धीरे हेरात देखस, त उनका वुझाय जइसे कलकत्ता शहर समुन्दर होखे आ ऊ ओह में जहाजे लेखा हेराइल जात होखस । कवहीं हुगली में ज्वार के चढ़त पानी देखस त उनका लागे जइसे उनका मन के बढ़त दुखे लेखा पानी बढ़त जात वा । कवहीं काली जी के मन्दिर में जास त मन के बड़ा सुख मिले । आ फेर, काली जी के मन्दिर में बेर-बेर जाये के मन करे लागल ।

अइसहीं, एक दिन काली माई के दरसन क के लौटत रहले पं॰ महेन्दर मिसिर । मन बड़ा हलुक-हलुक लागत रहे । भिखारन के झुंड मिसिर जी के घेर लेले रहे । पइसा बाँटत ऊ आगे बढ़े के कोशिश करत रहले, कि नजर पड़ल एगो भिखारिन पर जवन घुसकत-घुसकत आगे वढ़े के कोशिश करत रहे । बुझाइल जइसे एकरा के पहिलहूँ कतहीं देखले बाड़े । वाकिर कहवाँ ? भिखारिन तबतक घुसुक के लगे पहुँच चुकल रहे । मइल मलीन चेहरा का भीतर से झिलमिला के एगो परिचित चेहरा उभर आइल । भिखारिन मिसिर जी का लगे पहुँच के हठात भाग जाये के कोशिश करे लागल, बाकिर ओही तेजी से घुसुक ना सकल । मिसिर जी झुक के भिखारिन के हाथ पकड़ ले ले — "केसरबाई ?"

भिखारिन के आँख से झर-झर लोर झहरे लागल । मिसिर जी ओकरा के हाथ में उठा लेहले — "केसरवाई !" सब भिखार अकचका के देखत रह गइले आ मिसिर जी केसरबाई के उठा के बगल में खड़ा घोड़ागाड़ी पर बइठा दिहले ।

केसरवाई के मिसिर जी अपना डेरा पर ले अइले । नहवा-धोआ के नया कपड़ा पहिरवले । केसरबाई के लकवा से आधा अंग सुन्न हो गइल रहे । बोली लडखड़ा गइल रहे । केहू तरे रो-रो के केसरवाई वता पवली आपन कथा ।

बनारस से राजा साहेव का साथे कलकत्ता आइल रहली केसरबाई । आलीशान कोठी । दरवान, नोकर, दाई, वावर्ची से भरल रहे कोठी । केसरबाई के बुझाइल जइसे स्वर्ग बा त इहें वा ! बड़ा शान-शौकत से आनन्द में जिनगी बीतत रहे,कि ओह सुख में जहर घोरा गइल । लकवा मार दिहलस केसरबाई के । आ फेर कुछ दवो दारू भइल । बाकिर तब-तक राजा साहेब का कवनो आउर बाई जी भा गइली, आ काली जी का आश्रय में केसरवाई भीख माँगे खातिर स्वतन्त्र हो गइली । सुन के महेन्दर मिसिर के मन करुणा से भर गइल । फेर से दवाई के सिलसिला शुरू भइल ।

दरवानी का कमाई से महँगा इलाज चला सकल मुश्किल पड़े लागल । एह से हथफेर के सिलसिला शुरू भइल, आ कुछुए समय में ऊहो भारी पड़े लागल । मनोरमा पूरा हमदर्दी देखावस । आके कुछ सेवो-सम्हार क जास । बाकिर दवा खातिर पइसा जोड़ पावल उनको खातिर मुश्किले रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

कुछ दिन ले मुंशी शिवरतन प्रसाद आ बुलाकी लाल कुछ मदत कइले । बाकिर एक दिन शिवरतन प्रसाद साफ-साफ बोल देले– "मिसिर जी ! अब हमनीं का केतना पइसा दे सकत बानीं ? हमनियों के घर बा, बाल-बच्चा बा ! अगर नइखे जुटत त काहे नइखीं नोट छाप लेत !"

मिसिर जी हकबका गइले– "मुंशी जी ! बात त ठीक बा ! समय अइसने बा कि नोटो छापे में हम हिचकेब ना, बाकिर छापे आवे तब नू !"

मुंशी शिवरतन प्रसाद मुस्कुरात कुर्सी से आगे सरक अइले आ फुसफुसा के कहले "हम सिखा देब !"

आ फेर एके हफ्ता में नोट छापे के इन्तजाम हो गइल । मनोरमा का कमरा में मशीन रखाइल, आ रात में गैस बत्ती का रोशनी में नोट छपाये लागल ।

केसरबाई के अब कविराज गणनाथ सेन के दवाई शुरू भइल । अब कविराज जी के एक सौ एक रुपया के फीस दे दिहल पं० महेन्दर मिसिर खातिर हँसी-खेल रहे ।

केसरबाई के स्वास्थ्य में बहुत सुधार हो गइल । अब ऊ दूनो पैर से चले लगली आ रुक-रुक के बोलहूँ लगली । केसरबाई के स्वास्थ्य में सुधार देख के बहुत खुशी होखे मिसिर जी के । बाकिर ईश्वर के मर्जी का आगा केकर चलल बा ! केसरवाई पर लकवा के दोसर दौरा पड़ गइल, आ फेर उनका के बचावल ना जा सकल ! अपना दुख के सुख में बदल के केसरबाई परलोक सिधार गइली ।

हुगली में केसरबाई के परवाह क के लौटले महेन्दर मिसिर, त मनोरमा उनका कोठरी में अइली । बोलली– "मिसिर जी ! अब उदास केकरा खातिर बानीं ? पिछला जिनगी के छानबान्ह काट के जे आगे बढ़त जाला ऊहे जीतेला ! अब रउआ आगे के देखीं आ हमहूँ आगे के देखीं ! सुनीं, हमरा पास एतना धन हो गइल बा कि हम अब नोट छापे-चलावे के जोखिम वाला धंधा में नइखी रहे के चाहत । अब हमरा ना त छावनी में जाये के जरूरत बा, ना शराब पी के गम गलत करे के जरूरत बा हम अपना धन का जोर से एगो मरद कीन ले ले बानी, आ आपन नया जिनगी शुरू करे जा रहल बानीं कलकत्ता से दूर, बहुत दूर, जहवाँ हमरा बीतल जिनगी के जानेवाला केहू ना रही! हम अब बियाह करब आ भद्र लोग के जिनगी जीयब । रउआ साथे बितावल जिनगी के साइत कबहूँ भुला ना पायब ! रउआ हमरा के अब माफ करब !"

आ साँचो, मनोरमा कलकत्ता छोड़ के चल गइली । महेन्दर मिसिर के कलकत्ता काटे लागल ।

आ तब ले, मुंशी शिवरतनो प्रसाद का पाले अथाह रुपया हो गइल रहे । बुलाकी लाल ऐण्ड कम्पनी के भितरिया मनेजरी आ साझेदारी से त रुपया आइले रहे, नोट के

www.bhojpurisahityangan.com

छपाई से आइल अथाह धन उनका के पूरा लखपती बना देले रहे । मनोरमा के कलकत्ता छोड़ते उनका बड़ा डर लागे लागल । कतहीं जाली नोट के चक्कर, उनका के बड़का घर के हवा मत खिया देव, ई चिन्ता आ भय उनका मन के हरान करे लागल । एने बुलाकी लाल रोजगार के पूरा-पूरा गुर सीख चुकल रहले । बुलाकी लाल के बंगालिन मेहरारू कुछ पढ़ल-लिखल औरत रहली । ऊहो मुंशी शिवरतन लाल का काम में दखल देवे लागल रहली । सब सोच-विचार के मुंशी शिवरतन प्रसाद नोट छापे के धंधा से आ बुलाकी लाल ऐण्ड कम्पनी का काम से अपना के अलग क लेवे के फैसला कइलन । ऊ फौजियो छावनी के नोकरी छोड़ देले आ छावनी में फूड-सप्लाई के ठीका ले लिहले । श्यामबाजार में उनकर नया फर्म 'मुंशी ऐंण्ड सन्स' का नाम से चालू हो गइल । ऊ सब छोड़-छाड़ के ओही में लाग गइले ।

बाकिर पं० महेन्दर मिसिर का साथ में खाली नोट छापे के मशीन भर रह गइल रहे । आ रह गइल रहे केसरबाई के शोक आ मनोरमा के वियोग ।

मनोरमा, शिवरतन प्रसाद आ बुलाकी लाल अपना बीतल जिनगी से टूट के आगे के जिनगी से जुड़ चुकल रहे लोग । बाकिर, महेन्दर मिसिर अपना बीतल जिनगी से जेतने टूटे के कोशिश कइले ओतने अपना बीतल जिनगी में जकड़त चल गइले ! ई मन बड़ा दगाबाज बा ! ई बरोबरे आगे बढ़ा-बढ़ा के टांग खिंचले बा महेन्दर मिसिर के ।

मिसिर जी से कलकत्ता में आउर ना रहल गइल । ऊ घरे लौट चलले । यादगारी के आलम उनका साथे चलल ! आ ओकरा साथे-साथे चलल गम गलत करे खातिर बोतल आ देह ढकेल के ले चले खातिर नोट छापे के मशीन ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

15.

पूरा दस बरिस का बाद पं० महेन्दर मिसिर मिश्रवलिया लौट के अइले। घर के हालत ठीक ना रह गइल रहे। पहिलहीं से परिवार कवनो सुखी-सम्पन्न ना रहे ; बाकिर एह बीचे, पइसा का कमी से हालत आउरू बिगड़ गइल रहे। पं० महेन्दर मिसिर घरे अइले त दुआरी पर भाई खड़ा रहले, हड्डी के ढाँचा भइल। देख के मिसिर जी के बड़ा मोह उमड़ल। उजड़ल-पजड़ल घर-दुआर देख के मन बड़ा खराब हो गइल।

बाकिर मिसिर जी का आवते सबकुछ सम्हरे लागल। घर-दुआर के मरम्मती भइल। खेती-बारी के सिलसिला फेर से जोड़ल गइल। दुआर पर माल-मवेशी फेर से बन्हा गइल। मिसिर जी का हाथ में राकस के जटा अइसन नोट छापे के मशीन जे रहे।

दिन में खेती-गिरहस्ती के काम-धाम होखे आ रात में गाना-बजाना के मजलिस जमे। आ एही बीचे, कहियो-कहियो, घर का भीतर एगो कोठरी बन्द क के चुप्पे-चोरी गैस-बत्ती जरावल जाय आ सौटकिया नम्बरी नोट छापल जाय। नोट-छपाई के काम पूरा होखते, नोट छापे वाला डेढ़ बित्ता के मशीन भुसउल में लुका दिहल जाय। छपल जाली नोट एजेंटन का हाथे बाजार में पहुँचे। एजेंट लोग पचास सैकड़ा बट्टा काटे, आ एगो सौटकिया नोट के पचास रुपया मिले। ओह पचास रुपया में बड़ी असन-जसन मने। एक से एक बेलायती शराब के बोतल आ जाय। रात में शराब में डूब जाये वाला पं० महेन्दर मिसिर फेर सबेरे पूजा-पाठ में लाग जास। आ असहीं, आनन्द में दिन कटे लागल।

एक दिन सबेरहीं महेन्दर मिसिर पूजा पर से उठले त उनकर एगो एजेंट रामलाल सिंह एगो नया आदमी के ले के दुआरी पर खड़ा रहे। रामलाल इनकर बड़ा भरोसा के आदमी रहले। कलकत्ते से इनकर भरोसा के एजेंट रहल रहले, आ इहँवाँ नोटो छापे में इनकर मदतगार रहले। रामलाल सिंह ओह आदमी के परिचय करवले— "मिसिर बाबा ! ई आरा जिला के गोपीचन साह हउअन। महाजनी करेले। हमार बहुत दिन के सरोकारी हउअन आ बिलकुल आपने आदमी बाड़न। ई बेचारे बहुत गरीब बाड़े। अँजावे-भँजावे के काम कर सकत बाड़े। जदि इनको से कुछ काम लियाइत त इनको

www.bhojpurisahityangan.com

कुछ भला हो जाइत !"

मिसिर जी गोपीचन साह के बड़ा ध्यान से देखले । साह जी एगो दोसाला का ऊपर से एगो मइलभिलोर मोटिया के चद्दर ओढ़ले रहले । मिसिर जी के हँसी आ गइल । पूछ बइठले– का हो महाजन ! दोसाला का ऊपर से ई मोटिया के चद्दर काहे ओढ़ले बाड़ऽ ?" गोपीचन साह बोलले– "सरकार, खानदान भर में ईहे त एगो दोसाला बा । अगर जो ईहो मइल हो जाई त जाड़ में बाहर भीतर आइले गइल मुश्किल हो जाई ।"

महेन्दर मिसिर के साह जी बड़ा मजेदार आदमी बुझइले । साहजी डिबिया निकाल के मगही पान आ बनारसी जर्दा मिसिर जी का ओर बढ़वले त मिसिर जी गद्‌गद हो गइले । एने-ओने के बात बतियावत, मिसिर जी पूछ बइठले– तब हो महाजन ! केतना कमीशन तोहरा चाहीं ?"

साह जी तनी सोंचत बोलले– "सरकार, हम अपना मजूरी का रूप में पाँचे सैकड़ा लेब ।"

"पाँचे सैकड़ा ?" –मिसिर जी बोलले– "आउर लोग त बेसी कमीसन के माँग करेला । तोहरा पाँचे सैकड़ा काहे चाहीं ?"

"बाबा ! हम त सुरुए कह दिहनीं कि हम अपना मजूरी का रूप में कमीसन लेब । आ सरकार, हम महाजन नू हँईं । एह से बेसी लेब त हमरा पची ?" –गोपीचन साह बोलले– "सब काम में कुछुओ ईमानदारी त होखहीं के चाहीं ना त फाव में मारल धन ना अरघे ।"

आ फेर साह जी का साथ बात तय पा गइल । साह जी नम्बरी लेके जास आ कुछुए दिन में पंचानबे रुपया ले आके दे जास । अब साह जी के इज्जत मिसिर जी का घरे बढ़े लागल । साह जी जब आवस त बढ़िया मगही पान आ बनारसी सुर्ती ले ले आवस । मिसिर जी के तबीयत प्रसन्न हो जाय । आ फेर एक दिन मिसिर जी के गवनई में साह जी टेका ध लिहले त मिसिर जी मुग्ध हो गइले साह जी पर । अइसन गुनी आदमी पाके मिसिर जी गद्‌गद् हो गइले । आ फेर, गोपीचन साह मिसिर जी के एकदम अंतरंग दोस्त बन गइले ।

गोपीचन साह बोलल रहले – "मिसिर बाबा ! हम बड़ा गरीब आदमी हँईं । अगर जो रउआ आपन गुनवाँ सिखा दीतीं त बड़ा उपकार होइत ! बाल-बच्चन के दूनू जून सुबहित रोटी के इंतजाम हो जाइत !"

मिसिर जी के भा गइल ई बात । गोपीचन साह मिसिर जी के शागिर्दी में नोट छापे के सीखे लगले । बीच-बीच में गोपीचन आवस त मिसिर जी किहाँ उनकर बड़ा

www.bhojpurisahityangan.com

खातिरदारी होखे । रात के मिसिर जी अपना भाई का संगे नोट छापस त अब रामलाल का संगे-संगे गोपियोचन उनका मदद में रहस आ नोट छापे के सीखस ।

एक दिन गोपीचन रामलाल से बोलले— "रामलाल भाई ! आज त नोट छापे के पूरा-पूरा सीखिए लेवे के बा । कब तकले आदमी एजेंटी करी ? वाकिर मिसिर बाबा बड़ा जल्दिए सब काम बन्द क दिहले, आ हमरा त ठीक से सीखहूँ के मोका ना मिल पावे । अइसन करितऽ कि आज तूँ पेट खराव भइला का बहाने तिले-तिले बाहर मैदान जइतऽ-अइतऽ आ ओही में थोड़े समय कटित, आ तले हम मिसिर बाबा के रोक के ठीक से छापे के सीख लीतीं; आ फेर हमनी का कहीं आउर जाके आपने धंधा दुनू आदमी मिल के शुरू करतीं स ! ई कइला बिना बाल-बच्चन के पेट भला कइसे पोसाई, तूँहीं सोचऽ !"

रामलाल के बात पसन्द आ गइल । ऊ तैयार हो गइले । जब सब केहू नोट छापे खातिर अंगना के कोठरी में घुस के नोट छापे के शुरू कइल, तले रामलाल के दस्त के हाजत बुझाइल आ ऊ कोठरी आ अंगना के दरवाजा खोलत बाहर निकलले । मिसिर जी पीछे-पीछे जाके दरवाजा के बन्द क अइले । जब रामलाल लौटले, त फेर मिसिर जी जाके अपने दरवाजा खोलले आ फेर बन्द करत लौटले, आ छपाई के काम फेर चालू भइल । कुछुए देर में रामलाल के फेर मैदान जाए के हाजत बुझाइल, आ ऊ लोटा लेले कोठरी आ अंगना के दरवाजा खोलत मैदान का ओर दउड़ले । अबकी वेर पं० महेन्दर मिसिर तनी लापरवाह हो गइले, आ अंगना के दरवाजा खुलले रह गइल ! अलबते, कोठरी के दरवाजा गोपीचन भिड़का दिहले !

थोड़े देर में कोठरी के दुआर के पल्ला खुलल त रामलाल ना, खमाखम पुलिस भीतर ढुक आइल । मिसिर जी आ आउर सब लोग के आँख त मशीन पर लागल रहे आ मिसिर जी का हाथ में रहे छपाई के रोलर ।

तबले एगो बलिष्ठ हाथ महेन्दर मिसिर के जकड़ चुकल रहे । उनका भाइयो के पुलिस के मजबूत जवान गिरफ्त में ले आ चुकल रहन । हँ गोपीचन साह अब गोपीचन साह ना रह गइले, आ अब ऊ सी० आई० डी० के दरोगा बाबू जटाधारी प्रसाद के अपना असली रूप में आ चुकल रहले । एह दुनिया में केकरा पर विश्वास करस पं० महेन्दर मिसिर !

तिसरके दिने अखबार में एह सनसनीखेज घटना के खबर छपल । चारो ओर हाँचड़ मच गइल । राम प्रकाश सहाय एगो अखबार लेले अइले— "छोटकी दादी ! छोटकी दादी ! एगो बड़ा मजेदार खबर आइल बा आज के अखबार में हो । मिश्रवलिया गाँव के एगो महेन्दर मिसिर नाम के आदमी जाली नोट छापते में पकड़ा गइल बा आ नोट

www.bhojpurisahityangan.com

छापे के कुल सरंजाम बरामद हो गइल बा । जटाधारी प्रसाद नाम के एगो सी॰ आई॰ डी॰ के सब-इंसपेक्टर अपना के गोपीचन साह नाम के महाजन बता के उनका इहाँ ढेर दिन से आवत-जात रहल ह । उहे पकड़ववले बा ।"

"के पकड़ा गइल ? महेन्दर मिसिर ?"—गुलजारीबाई अकचका गइली —"मिश्रवलिया के महेन्दर मिसिर ?" उनका मन के तोपल-झाँपल आग एके बेर लहोक लेवे लागल । सबकुछ से अनजान रामप्रकाश रस ले ले के अपना छोटकी दादी के अखबार पढ़के सुनावे लगले । बाकिर गुलजारीबाई कहीं आउर भुला गइल रहली !

कुछ देर का बाद, गुलजारीबाई अपना के स्थिर कइली । अखबार ले के पूरा खबर ठीक से पढ़ली आ फेर बहुत दिन के बाद पालकीगाड़ी निकलववली, आ ओह पर चढ़ के लालकोठी से बाहर गइली । रामप्रकाश के बड़ा अचरज भइल । जे छोटकी दादी उनका देखत-देखत आज ले कबहूँ लालकोठी से बाहर ना निकलली उहे काहे, अबहिए, अखबार में ई खबर पढ़ते, कहाँ जा रहल बाड़ी ! गाड़ी सड़क पर हिचकोला खात दउड़ल चलल जात रहे ।

आ फेर, ई लगभग रोज-रोज के सिलसिला शुरू हो गइल । महेन्दर मिसिर के पैरवी गुलजारीबाई अपना हाथ में ले लेले रही । रामप्रकाश का बड़ा अचरज भइल रहे जब गुलजारीबाई वकील साहेब से बोलल रहली— "वकील साहेब ! रउआ ठीक से मुकदमा के तइयारी करीं । जइसे होखे, महेन्दर मिसिर के छुटहीं के चाहीं ! चाहे जेतना पइसा लागी, हम देब । हम सोना से तउल देब मिसिर जी के !"

ई महेन्दर मिसिर के हउअन ? अवाक होके सोचत रहले रामप्रकाश सहाय। आ फेर ई छोटकिए दादी के हई ?

रामप्रकाश सहाय छपरा आइल रहले अनाथ बन के । उनका के सनाथ बनवली गुलजारीबाई । उनका ना त छपरा के कवनो जानकारी रहे आ ना चचेरा दादा बाबू हलिवन्ते सहाय के कवनों जानकारी रहे । ऊ खाली अतने भर सुनले रहले कि बिहार के छपरा जिला के माँझी थाना में कवनों एगो गाँव बा शीतलपुर । उहँई से उनकर परदादा पंजाब आके गुजराँवाला में बस गइल रहले । ऊ ईहो सुनले रहले कि शीतलपुर में उनकर गोतिया बहुत बाड़े । उनकर बाबा बाबू हरगोविन्द सहाय अपना लड़िकाई में एक बेर शीतलपुर आइल रहले । उनका बाबा से थोड़ा-बहुत चिट्ठी-पत्री बाबू हलिवन्त सहाय के भइल रहे आ उनका ई मालूम रहे के बाबू हलिवन्त सहाय छपरा के बहुत बड़हन आदमी हउअन । एही से जब प्लेग में घर के सब बेकत मर गइलन आ अन्त में जब उनका बबो के प्लेग ध लिहलस त ऊ आँख में लोर भर के रामप्रकाश सहाय के अपना मरला का

www.bhojpurisahityangan.com

बाद छपरा बाबू हलिवन्त सहाय का सरन में चल जाये के सलाह देले रहले ।

आ पंजाब से कसहूँ-कसहूँ छपरा पहुँच के रामप्रकाश सहाय एक बेर अपना के आऊरू अनाथ पवले रहले, जबकि छपरा स्टेशन पर उनका ई खबर मिलल रहे कि बाबू हलिवन्त सहाय साधू होके छपरा छोड़ चुकल बाड़े । लोग ठिठोली करत इहो कहले रहे कि "चल जा ए बबुआ, लालकोठी पर । बाबू हलिवन्त सहाय के सब धन दखलिया के उनकर रखनी बइठल बिया ! ओकरे लगे चल जा !"

रामप्रकाश सहाय के मनःस्थिति ई ठिठोली बूझे के ना रहे । ऊ लालकोठी पर अइले त गंगा माई लेख मिलली गुलजारीबाई, उनकर छोटकी दादी । आ तब से रामप्रकाश सहाय अपना छोटकी दादी के देखत अइले तुलसी असइन पवित्तर आ गंगा जी अइसन निर्मल !

रामप्रकाश सहाय अवाक् होके देखत रह गइले कि छोटकी दादी महेन्दर मिसिर के गिरफ्तारी से चंचल हो गइल बाड़ी । बूझे के कोशिश कइयो के ना बूझ सकले रामप्रकाश सहाय ।

रामप्रकाश सहाय के पाके छोटकी दादी थिरा गइल रहली । सब काम-धंधा धीरे-धीरे रामप्रकाश सहाय का कान्ह पर आवत चल गइल रहे । आ छोटकी दादी धीरे-धीरे अपना के हर तरफ से काटत-छपटत चलत आइल रहली । पूजाघर में उनकर बेसी समय बीते लागल रहे । रामप्रकाश सहाय बरोबेरे देखस कि रिवेल साहेब आ बाबू हलिवन्त सहाय के तस्वीर का आगा धूप जरा के छोटकी दादी घंटन बइठेली ।

बाकिर महेन्दर मिसिर के गिरफ्तारी का बाद से छोटकी दादी के का हो गइल बा ? दिन-रात उनका मुकदमा का पाछा छोटकी दादी पागल काहे हो गइल बाड़ी ? बड़ा अचरज भइल रामप्रकाश के । के हउअन महेन्दर मिसिर ? आ के हई ई छोटकी दादी ?

महेन्दर मिसिर के मुकदमा शुरू भइल । जेल के हाजत से डाँड़ में रस्सा आ हाथ में हथकड़ी लगवले सिपाहियन का घेरावा में आवस महेन्दर मिसिर । आके कठघड़ा में खड़ा हो जास । कचहरी में बड़ा भीड़ लागे । गुलजारीबाई का सँगे जास रामप्रकाश सहाय । महेन्दर मिसिर के गोर चिट्टा रंग पर उनकर बढ़ल-बढ़ल दाढ़ी खूब फबे । रामप्रकाश देखस कि गुम भइल खड़ा बाड़ी छोटकी दादी ।

वकील लोग तरह-तरह के पैंतरा बान्हे । बड़ी मेहनत कइल लोग । तरह-तरह के सवाल जवाब के ताना-बाना बुनाइल । जगह-जगह पर रुपया उझिलाइल । बुझाइल कि महेन्दर मिसिर अब जरूरे छूट जइहें ।

तलहीं सब उलट-पुलट हो गइल ! कठघड़ा में महेन्दर मिसिर खड़ा रहले ।

www.bhojpurisahityangan.com

कचहरी में लोग के भीड़ में खड़ा रहली गुलजारीबाई । सरकारी गवाह का कठघड़ा में खड़ा रहले सी॰ आई॰ डी॰ सब इंसपेक्टर बाबू जटाधारी प्रसाद, मतलब कि गोपीचन साह । जज साहेब मुद्दालह से पुछलन— "महेन्दर मिसिर ! का तूँ जाली नोट छापत रहल ह ?"

महेन्दर मिसिर के नजर उठल । गुलजारीबाई से नजर मिलल । उनका मन में झुरझुरी आ गइल । सामने सरकारी गवाह के कठघड़ा में खड़ा सी॰ आई॰ डी॰ सब-इंसपेक्टर बाबू जटाधारी प्रसाद पर नजर गइल त उनकर गोपीचन वाला रूप महेन्दर मिसिर के आँख का सोझा नाच गइल । ऊ जज साहेब का ओर देखत बोल दिहले— "जी हँ सरकार ! हम जाली नोट छापत रहनीं हँ आ नोटे छापत खा पकड़ाइल बानीं ।"

थहरा के बइठ गइली गुलजारीबाई । रामप्रकाश सहाय उनका के सहारा देके पालकीगाड़ी में ले आके बइठवले । महेन्दर मिसिर के दस बरिस कठिन कैद के सजाय सुना दिहल गइल रहे । सिपाही उनका डाँड़ में रस्सा आ हाथ में हथकड़ी लगवले स, आ इजलास से बाहर ले के चलले स । लोग के भीड़ चारू ओर से घेरले रहे । पालकीगाड़ी में आँख बन्द कइले गुलजारीबाई बइठल रहली । भीड़ का वजह से गाड़ी रुकल रहे ।

सब इन्सपेक्टर बाबू जटाधारी प्रसाद बाहर निकलले । महेन्दर मिसिर से उनकर नजर मिलल त महेन्दर मिसिर ठठा के हँस पड़ले । बाबू जटाधारी प्रसाद जल्दी से आँख दोसरा ओर फेरत आगे बढ़ गइले । महेन्दर मिसिर के कण्ठ से गीत फूट चलल रहे—

पाकल पाकल पनवाँ खियवले गोपीचनवा
पिरितिया लगा के गइनीं जे जेलखनवाँ,
पिरितिया लगा के.........।

सभे मंत्रमुग्ध होके सुनत रहे । गुलजारीबाई बोलली— "गाड़ी जल्दी बढ़ावऽ!" रामप्रकाश सहाय का समझ में कुछुओ ना आवत रहे । गाड़ी बढ़ चलल । मिसिर जी के गीत बहुत दूर ले सुनात रहल ।

लालकोठी पर पहुँच के गुलजारीबाई पूजा के कमरा में घुस गइली । रामप्रकाश सहाय बाहर दालान में बइठ गइले । उनका बुझाइल, जइसे केहू गा रहल बा । ध्यान से सुनले त बुझाइल जइसे गीत के आवाज पूजा का कोठरी से आ रहल बा—

नोटवा के छापी छापी गिनिया भँजवलऽ हो महेन्दर मिसिर.........।

रामप्रकाश सहाय का बुझाइल जइसे राबी के दोसरा किनार से केहू हीर गावत होखे । त का ई छोटकी दादी गा रहल बाड़ी ? रामप्रकाश सहाय अपना जिनगी में अइसन कारुणिक गीत ना सुनले रहले !

●

www.bhojpurisahityangan.com

16.

कई बरिस का बाद उजरकी कोठी से राय लछुमन प्रसाद लालकोठी पर अइले । दरवजे पर मिलले रामप्रकाश सहाय । देखले त देखते रह गइले ! एकदम बाबू हलिवन्त सहाय वाला रोबीला सुन्दर चेहरा ! ओइसने लम्बाई, ओइसने गठीला शरीर ! ऊ पुछले– "बबुआ ! तूँ के हउअ ?"

"जी हमार नाम ह रामप्रकाश । हम बाबू हलिवन्त सहाय के पोता हईं– उहाँ के चचेरा भाई बाबू हरगोविन्द सहाय के पोता ।"

"तूँ इहँई रहे ल ?"

"जी !"

"तोहार बाबूजी कहवाँ बाड़े ?"

रामप्रकाश सहाय उदास हो गइले– "जी, बाबूजी नइखीं !"

राय लछुमन प्रसाद बाबू हलिवन्त सहाय के सब गोतिया लोग के जानत रहले । सबका साथे, मुकदमा का सिलसिला में मिले-जुले के मोका मिलल रहे । बाकिर बाबू हलिवन्त सहाय के भाई बाबू हरगोविन्द सहाय के नाम कतहूँ ना आइल रहे । एह से उनका उत्सुकता जागल । ऊ खोद-खोद के पूछे के शुरू कइले । एह लड़िका के देवता अइसन रूप आ ओकरा पर घनघोर विपत के बज्जर घहरइला के बात जान के ऊ एकदम से मोहा गइले । उनका मन में एगो योजना चक्कर काटे लागल !

राय लछुमन प्रसाद थोड़े देर चुप रह के बोलले– "बबुआ ! बाई जी के बोल द कि राय लछुमन प्रसाद आइल बाड़े ।"

"जी, केकरा से बोल दीं ? छोटकी दादी से ?"

"छोटकी दादी ?" – पहिले त अकचकइले राय लछुमन प्रसाद; बाकिर बात बूझत कहले– "हँ हँ, छोटकी दादी से ।" आ रामप्रकाश भीतर चल गइले ।

आज महेन्दर मिसिर के जेल गइला के समाचार पर आपन अफसोस जाहिर क के बदला लेबे लालकोठी पर आइल रहले राय लछुमन प्रसाद, जे पूरा दस बरिस ले लालकोठी का ओर कबहूँ तकबो ना कइले रहले, आ जवना लालकोठी का ओर से उजरकी कोठी के रहेवाला राय लछुमन प्रसाद का साथे पूरे दस बरिस ले आमदरफत

www.bhojpurisahityangan.com

बिलकुले बन्द रखल गइल रहे । ऊहे लछुमन प्रसाद महेन्दर मिसिर के सजाय के खबर पाके आज लालकोठी पर कवना मनसा से आइल होइहें, ई बूझे के पूरा समझदारी रहे गुलजारीबाई के !

ऊ पूरा सतर्कता आ सहजता से अइली आ राय लछुमन प्रसाद के बइठका में ले जाके बइठवली– "कहीं राय साहेब, का हुकुम बा ?"

बाकिर राय लछुमन प्रसाद कवनो आउर दुनिया में भुला चुकल रहले । ऊ आइल त रहले अपना मन के भड़ास निकाले, बाकिर सब गड्ड़-मड्ड़ हो गइल । उनका दिल पर बाबू हलिवन्त सहाय के रूप उजागिर हो के हलचल मचा देले रहे । ऊ हठात् पूछ बइठले– "बाई जी ! ई लड़िका के ह ?"

"जी, साहेब के पोता लागी । एकरा दादा के दादा साहेब के बाबूजी के आपने चाचा रहले । ऊ पंजाब में बस गइल रहले । तीन साल पहिले प्लेग में पूरा परिवारे साफ हो गइल त ई लइका साहेब किहाँ सरन लेवे आइल । ई अब हमार पोता बा !"

राय लछुमन प्रसाद के आँख चमकत रहे– "बाईजी ! आपन पोता रउआ हमरा के दे दीं !"

गुलजारीबाई तुनुक गइली– "हँसी करे आइल बानीं का राय साहेब ?"

"अब हमरा मूड़ी के केस पाक गइल बा बाई जी ! अब हमार उमिर हँसी करे के नइखे रह गइल !" –कुछ थथमत बोलले राय लछुमन प्रसाद – "साँच पूछीं बाई जी, त हम आइल त रहनीं हँ महेन्दर मिसिर के जेल गइला पर रउआ घाव के कुरेद के अपना मन के भड़ास मिटावे ! बाकिर एह लड़िका के देख के हमरा अपना मूड़ी के उजर होखत केस इयाद पड़ गइल ह । आ हमरा ईहो इयाद पड़ गइल ह कि हम एगो सेयान बेटी सियासहेली के बाप हईं । हमरा त ई लड़िका चहबे करी बाई जी !"

गुलजारीबाई चौंकली– "त का राय साहेब ! लालकोठी पर राउर नजर आजो ले गड़ले बा ?"

"जी ना", –मुस्कुरात बोलले राय लछुमन प्रसाद– "हम जे उजरकी कोठी दखल क लेले बानीं ऊ अब लौटा देबे के चाहत बानीं !"

राय लछुमन प्रसाद के एगो बेटिए भर रहे । ओकरा बियाह खातिर ऊ अइसने लड़िका का खोज में रहले जेकरा के घरजमाई बनावल जा सकत होखे । रामप्रकाश के देखते उनका बुझाइल जइसे भगवान उनकर इच्छा पूरा करे के उपाय क देले बाड़े ! उनकर प्रस्ताव सुनके विचलित हो गइली गुलजारीबाई । धीरे से बोलली – "राय साहेब! हम अपना मन में अपना के बियही बुझबे करीं आ रामप्रकाश के आपन पोता बुझबे करीं त एह से का ? दुनिया का नजर में हम आजो ढेलवे रंडी बानीं ! रउआ कहला पर

www.bhojpurisahityangan.com

कुछुओ हम कइसे कह दीं !"

बाकिर भइल ऊहे जे राय लछुमन प्रसाद चहले । ग्विलगंज वाला कोठी पर रामप्रकाश के तिलक चढ़ल आ ओजिए से बरियात आइल आ बियाह भइल । राय लछुमन प्रसाद शीतलपुर से बाबू हलिवन्त सहाय के गोतिया लोग के एह काम खातिर खड़ा कर लेले रहले । गुलजारीबाई तनी-तनी अलगा आ तनी-तनी नगीचा रहके सब देखली-कइली ! आ ओकरा बाद, पूजाघर में सिकुड़-सिमट गइली ।

रामप्रकाश के बियाह का बाद, गुलजारीबाई के का करे के चाहीं, एकर पूरा ज्ञान उनका बा । गुलजारीबाई अनजान नइखी । बेवकूफो नइखी । उनका खातिर पूजाघर से बढ़ के दोसर जगह ना हो सके ! गुलजारीबाई अपना मतारी के देखले बाड़ी । जवना हिम्मत आ बहादुरी से उनकर मतारी जीयत रहली, ओसहीं का इहो जी सकिहें ! मतारी जइसन दोहरा जिनगी जीये के लूर नइखे गुलजारीबाई के ! एह से अपना के सगरो से काटहीं के पड़ी उनका ।

गुलजारीबाई के पूरा इयाद बा जब उनकर मतारी मीनाबाई अपना भरल जवानी पर रहली । ऊ महफिल से उठ के आवस त घर का भीतर फूट-फूट के रोअस, अइसन कई बेर गुलजारीबाई झाँक के देखले रहली । महफिल में ऊहे मीनाबाई हँसी के फुलझड़ी रहली ।

मीनाबाई गुलजारीबाई के अपना दुनिया से अलग-थलग राखे के पूरा कोशिश कइले रहली । उनका के पढ़ावे-लिखावे के कोशिश कइले रहली । बाकिर बाद में, सब उलट-फेर हो गइल रहे, आ उनका जहर के घोंट घोंट के गुलजारीबाई के नाचे-गावे के सिखावे के पड़ल रहे ।

गुलजारीबाई ई लँउड़ी से जनले रहली कि मीनाबाई पहिले लखनऊ में रहली आ उहवें से मुजफ्फरपुर आइल रहली । एगो बाबू साहेब के बरियात में मुजफ्फरपुर नाचे आइल रहली मीनाबाई, आ ऊ फेर लौट के लखनऊ ना जा सकली । मुजफ्फरपुर में उनका सब मिलल— घर, जमीन-जायदाद, रुपया-पइसा सब मिलल । बाकिर ऊ ना मिल सकल, जे एगो औरत के दिली खाहिस होला ! उनका मूड़ी पर एगो चद्दर के ओहार ना मिल सकल ।

गुलजारीबाई लँऊड़ी से ईहो जनले रहली कि मीनाबाई भटकत-भटकत लखनऊ आइल रहली । आ औरत के एक बेर भटक गइला का बाद कोठे अकेला सरन रह जाला! मीनाबाई उहें नाचे-गावे के सिखली । आ सिखली त पूरा लखनऊ के हिला-डोला दिहली! ई धन्धा मीनाबाई पर उन्माद अइसन चढ़ गइल रहे । बाकिर पाछे का जाने का भइल कि मुजफ्फरपुर आके मीनाबाई फेर लखनऊ वापस ना गइली ।

www.bhojpurisahityangan.com

गुलजारीबाई के जनम मुजफ्फरपुर में भइल । उहँई पलइली-पोसइली । उहँई कुछ पढ़े-लिखे के सिखली आ फेर उहँई नाचे-गावे के सिखली । आ उहँई महफिल के गुलजार करे लगली ! उनका पूरा इयाद बा कि जेह दिन नाच-गाना सिखावे खातिर उस्ताद जी गंडा बन्हले रहले ओह दिन मीनाबाई भर हीक रोअल रहली !

गुलजारीबाई के पूरा इयाद बा कि उनका अंगना में एगो चम्पा के पेड़ रहे । आ चम्पा जब फुला के लदर जाय त ओपर एक जोड़ी फुलसुंघी आवऽ स । फुलसुंघी बड़ा चंचल रहली स, ठीक गुलजारीबाई लेखा चंचल । कबहीं एगो फूल पर बइठऽ स आ आपन लमकी ठोर फूल का बीच में डाल के कुछ रस ल स, आ फेर दोसरा फूल पर पहुँच जा स । इहे क्रम बनल रहे दिन-भर । आ गुलजारीबाई के बुझाय जइसे ऊहो ठीक फुलसुंघिए अइसन बाड़ी । एक जेब से पइसा खींच के दोसरा जेब का ओर उड़ जाये वाली फुलसुंघी । एक बेर एगो फुलसुंघी के पकड़ लेले रहली गुलजारीबाई । बाँस के एगो पिंजड़ा में बन्द क दिहली । दिन-भर ताजा-ताजा फूल तूड़ के दिहली बाकिर एको बेर ओकरा ओर देखबो ना कइलस ऊ फुलसुंघी । साँझ का बेरा पिंजड़ा खोल के उड़ा दिहली । फुलसुंघी अपना जोड़ा का ओर फुर्र दे उड़ गइल, जवन पिंजड़ा का चारू ओर चक्कर लगावत काट देले रहे सँउसे दिन । आ ओह दिन गुलजारीबाई के बुझाइल रहे कि ऊ एकदम से अकेले बाड़ी ।

ना त चम्पा के ऊ गाछे मन से भुलात रहे, ना फुलसुंघिए भुलात रहे । ऊ लालकोठी के दखिनवाग सहन में एगो चम्पा के गाछ लगा दिहली । चम्पा के ई गाछ फुला के लदर-लदर जाय आ ओपर फुलसुंघी हुलचुल क जा स ।

गुलजारीबाई के मराय वाला घटना के कुछुओ इयाद नइखे । उनका आँख का सोझा तलवार के चमक नगना अइसन उजागिर भइल रहे । ओकरा बाद के सबकुछ धूमिल-धूमिल बा । जइसे कुछ इयाद बा, आ जइसे कुछुओ इयाद नइखे । आ ओकरा बाद के एगो देवपुरुष के चेहरा पूरा-पूरा इयाद बा गुलजारीबाई के । गोर दप-दप चेहरा पर खून के लाली दउड़त । गुलजारी बाई ओह रूप के आज ले बड़ा भक्ति-भाव से पूजत आइल बाड़ी ।

बाबू हलिवन्त सहाय से ऊ सबकुछ पवली । सब सुख पवली । धन-जायदाद, मान-सम्मान, आस्था-विश्वास सब पवली । मूड़ी पर एगो चद्दर के ओहारो पवली । इहाँ ले कि आगे के अलम एगो पोतो पवली । बाकिर ना पवली त खाली एगो देवपुरुष अइसन भव्य दिव्य बाबू हलिवन्त सहाय के । ऊ लालकोठी में आइल रहली साहेब के एगो उन्माद का छन में । अइली त साहेब जवानी के डेउढ़ी पार क चुकल रहले, बाकिर एकर एहसास उनका ना रहे । ऊ अइली त साहेब के आँख में शराब के नशा अइसन

www.bhojpurisahityangan.com

अइलां । उनका पाँव के घुंघुर बाबू हलिवन्त सहाय के दिल में झनझना के बाजल रहे । उनका गीत के लहर साँप के जहर लेखा साहेब के रग-रग में लहराइल रहे ।

बाकिर तुरते गजब हो गइल । पं॰ रामनारायण मिसिर साहेब के झकझोर के जगा देले रहले । आ साहेब के मधुर सपना झनझना के टूट गइल रहे ।

आ गुलजारीबाई के साध पूरा हो गइल रहे । सिर पर एगो चद्दर के ओहार चढ़ गइल । बाकिर मन खाली के खाली रह गइल । उमिर के फरकाव में खाई के गइराई बहुत रहे । ओह खाई के ना बाबू हलिवन्त सहाय पार कर सकले आ ना गुलजारीबाई पार कर सकली ।

ओही घड़ी पं॰ महेन्दर मिसिर के गीत सुनली गुलजारीबाई । गीत में उनके हृदेया के दरद बोलत रहे जइसे ! मन के खाली कोना भर आइल रहे । विद्याधरी बोलल रहली– "गुलजारी! काहे त मन खँखोर रहल बा !" बाकिर का जवाब देती गुलजारीबाई । बाकिर बड़ा भगोड़ा रहले महेन्दर मिसिर । लड़े के धीरता ना रहे उनका में । साहेब के एकदम उलटा । साहेब अपना जिनगी से बरोबरे शेर लेखा लड़त रहलन आ ओही लड़ाई में सबकुछ त्याग के साधू हो गइलन । साहेब अपना जिनगी के एगो लड़ाई ना हरलन । सब जीत गइलन । बाकिर महेन्दर मिसिर ? ऊ त अपना जिनगी से हमेशा भागते रहले । कतहीं छाती तान के खड़ा ना हो सकले । हमेशा पलायन, पलायन आ एही पलायन में छपरा से भगलन, जाने केने-केने दू भटकलन, नोट छपलन, आ फेर जेलो गइलन । उनका खातिर जेल से अधिका सुरक्षित जगह दोसर होइए का सकत रहे !

बड़ा दरद बुझाइल गुलजारीबाई का करेजा में । उनका मन के खाली कोना त खाली महेन्दरे मिसिर भर सकल रहले, दूर-दूर से । नदी के एह पार रहली गुलजारीबाई आ ओह पर रहले महेन्दर मिसिर । बाकिर मन के खाली कोना भर गइल रहे ।

गुलजारीबाई के ओह दिन के इयाद बा, जब ऊ बाबू हलिवन्त सहाय का साथे रिवेल साहेब का समाधि पर गइल रहली । साहेब बोलल रहले– "गुलजारी ! जिनिगी जीये के पड़ेला । एह जीये खातिर आदमी के डेगे-डेग लड़े के पड़ेला । जे ना लड़ सके ऊ एके जिनिगी में हजार बेर मरेला । रिवेल साहेब से इहे गुरु-मंत्र हम पवले बानीं ।"

बाकिर गुलजारीबाई के जिनिगी जीये पूरा-पूरा ना आइल । ऊ कबहीं जीयल बाड़ी, कबहीं मरल बाड़ी । जब साहेब सब छोड़ के चल गइनी त ओह घड़ी बार-बार मुअली गुलजारीबाई । बाकिर हर मुअला पर जीये के उछाह जागल रहे उनका ।

आ फेर, ऊ रामप्रकाश के पा गइली । आ उनका बुझाइल रहे जइसे अब ऊ लड़ाई जीत गइली । फेर, महेन्दर मिसिर के जेल भइल त उनका बुझाइल जइसे ऊ हारत-हारत जीत गइल होखस । आ ओकरा बाद, बरिसन के पालल इरखा लेले आइल

www.bhojpurisahityangan.com

रहले राय लछुमन प्रसाद, महेन्दर मिसिर के जेल भइला पर चिढ़ा के गुलजारीबाई से आपन बदला लेबे खातिर, बाकिर, रामप्रकाश पर मोहा के उनका से आपन एकलौती बेटी वियह देले, आ जिनगी में एक बेर फेर पूरा-पूरा जीत गइली गुलजारीबाई। अब उनका पास हारे के कुछुओ नइखे रह गइल।

असहीं कुछ समय बीतल। रामप्रकाश सहाय अपना मेहरारू के लेके कुछ समय खातिर पंजाब चल गइले। पंजाब उनका भुलात ना रहे। आ उहाँ कुछ जरो-जायदाद रहे, जवना के इंतजाम-बात कइल जरूरी रहे। आइल रहले त खाली-खाली रहले, गइले त भरल-भरल गइले। जाये का बेरा गुलजारीबाई आँख पोंछत बोलल रहली– "जल्दी अइहऽ बबुआ ! आ दुलहिन ! बबुआ के पूरा खियाल रखिहऽ।"

रामप्रकाश सहाय के मन में बड़ा हलचल मचल रहे, चले का बेरा। जे आपन रहे ऊ छोड़के हमेशा खातिर चल देले रहे ! फेर जेकरा के आपन बूझ के ऊ छपरा आइल रहले ऊ सांसारिकता छोड़ चुकल रहे ! आ जे केहू ना रहे ऊ अँचरा पसार के अपना लेले रहे !

रामप्रकाश सहाय पंजाब गइले त उहवाँ उनका बहुत समय लाग गइल। उनका ाय लछुमन प्रसाद का चिट्ठी से मालूम भइल कि छोटकी दादी बहुत बेमार बाड़ी। ऊ ंजाब से वापस अइले।

अइले त उनका लालकोठी उजाड़ अइसन लागल। फूल के कियारी में बड़की-बड़की घास उग आइल रहे। झाड़-झंखाड से पूरा लॉन भर आइल रहे। ऊ धड़धड़ात भीतर गइले। अपना कमरा में पलंग पर पड़ल रहली गुलजारीबाई। हड्डी के ढाँचा भर बाँचल रहे। सिरहाना टेबुल पर दवाई के तरह-तरह के शीशी रखल रहे। टेबुल पर बीच में रखल रहे रिविल साहेब आ बाबू हलिवन्त सहाय के तस्वीर, जवन साइत पूजाघर से उठा के इहवाँ ले आइल गइल रहे, आ जवना पर ताजा फूल के माला चढ़ल रहे, आ जवना का सामने धूप जरत रहे।

"छोटकी दादी ! हम आ गइनीं ! हम आ गइनीं ! छोटकी दादी ! अब तूँ जल्दिए अच्छा हो जइबू !" — आँख में लोर भरले रामप्रकाश सहाय बोलले।

सियासहेली गोड़ लगली त गुलजारीबाई के आँख डबडबा आइल रहे। आँख पोंछ के हँसली– "बड़ा अच्छा भइल बबुआ ! कि तूँ लोग आ गइलऽ। अब हम दुलहिन के सबकुछ सऊँप के निश्चिन्त हो जाए के चाहत बानीं। हमरा थायसिस हो गइल बा हो। हम अब अच्छा होखे के चाहतो नइखीं ! हमरा अब बाकिए का रह गइल बा कि हमरा अच्छा होखे के कवनो इच्छा होखे ! भगवान हमरा अइसन पतिता के सबकुछ देलन! अब त हम उनका से नेहरा आगा आपन मउअत चाहत बानीं।" —बोलत-बोलत

www.bhojpurisahityangan.com

हॉफ गइलीं गुलजारीबाई । दवाई देबे लँउड़ी आइल त रोक देहली– "ना रे ! अब दवाई के जरूरत नइखे ! बबुआ आइए गइले !" आ अपना चाभी के गुच्छा रामप्रकाश सहाय के मेहरारू के हाथ में धरा दिहली । चेहरा पर संतोष के भाव झलकत रहे ।

दू दिन बाद, गुलजारीबाई रामप्रकाश के लगे बोलवली– "बबुआ ! मिसिर जी के जेल के मीयाद साइत पूरा हो गइल बा । परसों उनका जेल से छूटे के चाहीं । हम चाहत बानी कि बक्सर चल जा आ उनका के कसहूँ इहवाँ लिया ले आव !" रामप्रकाश सहाय के एह बारे में अब कुछुओ सोंचे के ना रहे । ऊ बक्सर चल गइले ।

महेन्दर मिसिर जेल से निकलले त सामने खड़ा रहले रामप्रकाश सहाय । मुकदमा के सिलसिला में मिसिर जी गुलजारीबाई का संगे कई बेर देखले रहले रामप्रकाश सहाय के । देखते चीन्ह गइले । रामप्रकाश सहाय मिसिर जी के हाथ धरत बोलले– "चलीं मिसिर जी !"

महेन्दर मिसिर मन में हलचल लेले रामप्रकाश सहाय का साथे छपरा खातिर चलले । जब लालकोठी पर पहुँचल लोग त उहाँ भीड़ लागल रहे । राय लछुमन प्रसाद के देखते रामप्रकाश सहाय पुछले– "का हाल बा छोटकी दादी के, बाबूजी !"

"का हाल कहीं, बबुआ ! तोहरे खातिर प्रान अँटकल बा ।" –राय लछुमन प्रसाद गम्भीर रहले ।

सरजू अपना पूरा उफान पर आ गइल रहली ! लालकोठी के दखिनवारी चहारदीवारी टूट गइल रहे ! लॉन में ढाही पड़ गइल रहे, आ सरजू के पानी कोठी के दखिनवारा दीवार पर से लहर मारत रहे !

रामप्रकाश सहाय महेन्दर मिसिर के हाथ धइले गुलजारीबाई के कमरा में घुस गइले । कमरा में सियासहेली गंगाजल हाथ में लेले खड़ा रहली । एक ओर पलटुआ आ जिरिया आँख पोंछत खड़ा रहले स । मउअत के छाया फइलल आवत रहे ।

"आ गइलऽ बबुआ ? मिसिर जी ! रउओ आ गइनीं ? भाग हमार ! –थथम-थथम के धीरे-धीरे बोलली गुलजारीबाई– "मिसिर जी ! हम जिनिगी के जिनिगी लेखा जी लेले बानी ! अब हमरा जाये के बेरा आ गइल बा ! हम अपना मउअतो के ओही बहादुरी से अपनावे के चाहत बानीं ! राउर गीत सुन के हम जीये के सिखले रहीं ! अब राउर गीत सुन के मरे के चाहत बानीं ! एगो गीत हमरा के सुना दीं, जे हमार आखिरी गीत होखे !"

एह अनुरोध पर सभे रो दिहल । महेन्दर मिसिर के आँख से झर-झर लोर गिरे लागल ।

अपना धीमा बाकिर सधल आवाज में गुलजारीबाई बोलली– "मिसिर जी रोवे के

www.bhojpurisahityangan.com

समय नइखे ! रउआ हमरा जिनिगी के आखिरी गीत जल्दी सुना दीं !"

महेन्दर मिसिर के गला से गीत के एगो सोता फूट चलल–

माया के नगरिया में लागल बा बजरिया, ए सोहागिन !
चीझवा बिकाला अनमोल, ए सोहागिन ! .... ।

गुलजारी बाई के चेहरा पर मुस्कुराहट खेलत रहे ! उनकर आँख बाबू हलिवन्त सहाय के तस्वीर पर अँटकल रहे ! गीत खतम भइल त बुझाइल, गुलजारीबाई एह संसार में नइखी ! "छोटकी दादी" कहत रामप्रकाश सहाय गिर पड़ले । कमरा में खड़ा सब लोग पूका फाड़ के रो पड़ल । दरवाजा से अलम लेले खड़ा रहले राय लछुमन प्रसाद । उनका आँख से सरजू के धार बहत रहे । सब कुछ खतम हो गइल !

सरजू में एगो लहर उठल आ लालकोठी के दखिनवारा हिस्सा के संगे, चम्पा के गाछ उखड़ के बह गइल ! ओह चम्पा पर चहकत फुलसुंघी हड़बड़ा के उड़ गइल !!

●

www.bhojpurisahityangan.com